फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 245 प्रभात जयपुर, मंगलवार 8 अप्रैल, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

The Night Stardom Performed...

They weren't just trying to look youthful. They were clinging to an image that had already moved on, like fashion trends and exes we don't speak of

From Blueprint to Reality

India's First 3D-Printed Villa stuns the Internet

8 व 9 अप्रेल को गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक है

अहम् सवाल है कि बैठक के बाद कांग्रेसाध्यक्ष खड़गे का भविष्य क्या होगा? क्योंकि, जब भी गुजरात में ए.आई.सी.सी. बैठक हुई है, उसके बाद कांग्रेसाध्यक्ष को विवादों के कारण हटना पड़ा है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। आठ और नौ अप्रैल को अहमदाबाद में एआईसीसी अधिवेशन होने जा रहा है, पर कांग्रेस पर नजदीक से नजर रखने वाले लोगों तथा विश्लेषकों के मन में एक सवाल खलबली पैदा कर रहा है कि इस एआईसीसी अधिवेशन के बाद, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का भविष्य क्या होगा। यह गुजरात में आयोजित होने वाला छटा एआईसीसी अधिवेशन होगा। उल्लेखनीय है कि गुजरात में हुए विभिन्न एआईसीसी अधिवेशनों की अध्यक्षता करने वाले 5 कांग्रेस अध्यक्षों के प्रति समय उदार नहीं रहा है। या तो वे पार्टी छोड़ गये और उन्होंने अपनी स्वयं की नयी पार्टी बना ली या फिर उन्होंने स्वयं को कांग्रेस से अलग कर लिया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर, 1885 को हुई थी।

इसका पहला अधिवेशन गुजरात के अहमदाबाद में 23-26 दिसम्बर 1902 को सुरेन्द्र नाथ बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ था। बाद में, पार्टी के अंदर पैदा हुये मतभेदों तथा उनके खिलाफ पार्टी में हुई बगावत के कारण, उन्होंने पार्टी छोड़ दी थी तथा अपना नया संगठन बना लिया था।

इसके बाद, 26-27 दिसम्बर, 1907 को पार्टी का अधिवेशन सूरत में हुआ था, जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस अध्यक्ष रास बिहारी बोस ने की थी। वे भी मतभेदों के कारण पार्टी छोड़ गये थे।

तीसरी बार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन 27-28 दिसम्बर, 1921 को फिर से अहमदाबाद, गुजरात

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक 1902 में हुई थी तथा बैठक के बाद अध्यक्ष सुरेन्द्र नाथ बनर्जी को हटना पड़ा था, उनके खिलाफ आंतरिक विद्रोह के कारण।
- दूसरी बार, 1907 में रास बिहारी बोस की अध्यक्षता में गुजरात में बैठक आयोजित हुई थी और उन्हें भी आंतरिक मतभेदों के कारण बैठक के बाद पार्टी छोड़नी पड़ी थी।
- तीसरी बार,1921 में ए.आई.सी.सी. की बैठक गुजरात में हकीम अजमल खां की अध्यक्षता में हुई थी, उनका भी वो ही हश्र हुआ था, बैठक में, जो पहले दो अध्यक्षों का हुआ था।
- चौथी बार, ए.आई.सी.सी. की बैठक 1938 में हुई, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में। बोस ने गांधी जी के उम्मीदवार को पार्टी के आंतरिक चुनाव में हराया था तथा यह मतभेदों का बड़ा कारण बना और सुभाष बाबू को अध्यक्ष के पद से इस्तीफा देना पड़ा था।
- पाँचवी बार गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक नीलम संजीवा रेड्डी की अध्यक्षता में हुई तथा बैठक के बाद कांग्रेस में विभाजन हुआ और इस विभाजन के बाद नीलम संजीवा रेड्डी की संयुक्त कांग्रेस की अध्यक्षता तो खत्म होनी ही थी।
- अब छठी बार, गुजरात में ए.आई.सी.सी. की बैठक आयोजित की गई है। अतः स्वाभाविक सवाल है, इस बैठक के बाद, क्या कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की पार्टी की अध्यक्षता सुरक्षित और बरकरार रहेगी तथा ऐतिहासिक परम्परा टूटेगी।

रसोई गैस महंगी हुई

नई दिल्ली, 07 अप्रैल। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सोमवार को घोषणा की कि सब्सिडी वाले और गैर-सब्सिडी वाले दोनों उपभोक्ताओं के लिए 14.2 किलोग्राम वाले एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 50 रुपए प्रति सिलेंडर की बढ़ोतरी की गई है। यह बढ़ोतरी 8 अप्रैल से प्रभावी होगी। यह मूल्य वृद्धि प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के लाभार्थियों के साथ-साथ दूसरे उपभोक्ताओं पर भी लागू होगी।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा, ''पीएमयूवाई लाभार्थियों के लिए कीमत 500 रुपए से बढ़ कर 550 रुपए प्रति सिलेंडर हो जाएगी। दूसरे उपभोक्ताओं के लिए यह कीमत 803 रुपए से बढ़ कर 853 रुपए हो जाएगी। संशोधन नियमित अंतराल पर की जाने वाली समीक्षा के अधीन है, जो हर दो से तीन सप्ताह में होती है।''

- सरकार ने सब्सिडी वाले एवं वगैर सब्सिडी वाले एलपीजी सिलैण्डरों पर 50 रु. बढ़ाने की घोषणा की।

1 अप्रैल को तेल विपणन कंपनियों ने वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत कम कर दी थी।

19 किलोग्राम वाले वाणिज्यिक एलपीजी सिलेंडर की कीमत में 41 रुपए की कटौती की गई है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में संशोधित खुदरा बिक्री मूल्य अब 1,762 रुपए प्रति सिलेंडर है।

भारत घरेलू खपत का लगभग 60 प्रतिशत एलपीजी आयात करता है। देश में एलपीजी की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार से जुड़ी हुई है।

तीन महीने में तीसरी बार राहुल गांधी बिहार पहुँचे

वक्फ संशोधन विधेयक के पारित होने में नीतीश की भूमिका से, कांग्रेस का मानना है, मुस्लिम मतदाता नीतीश कुमार से रुष्ट हैं, तथा और दूर हो जाएंगे

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। जिन दो राज्यों में कांग्रेस तीन दशक पहले अपनी प्रभावी स्थिति खो चुकी है, उन राज्यों में पार्टी का पुनरोद्धार करने तथा उसे एक नया रुप देने के उद्देश्य से, राहुल गांधी और कांग्रेस नेतृत्व ने उन राज्यों पर अपनी नजरें जमा रखी हैं। इन राज्यों में से एक, भाजपा-शासित गुजरात, में कांग्रेस ने अपनी वर्किंग कमेटी की मीटिंग आयोजित करने का निर्णय लिया है। और दूसरा राज्य चुनावाधीन बिहार है, जहाँ राहुल गांधी पिछले तीन महीनों में आज तीसरी बार दौरे पर गये हैं।

वक्फ विधेयक पारित होने के बाद, विपक्षी गठबंधन बिहार के आगामी चुनावों में अपने अवसर के सपने सँजो रहा है। ज्ञातव्य है कि बिहार में मुस्लिम मतदाता, राज्य के कुल मतदाताओं के 17 प्रतिशत हैं।

जातिगत जनगणना तथा पिछड़ा वर्ग-समर्थन के अभियान को जारी रखते हुये, राहुल ने आज पटना में एक विचार गोष्ठी को सम्बोधित किया, जिसमें उन्होंने कांग्रेस की पूर्ववर्ती असफलताओं से सबक लेते हुये, पुरानी गलतियों को सुधारने की बात कही। उन्होंने कहा कि वे इस गलती को स्वीकार करने वाले पहले व्यक्ति होंगे कि पार्टी राज्य का बहुमुखी विकास करने में असफल रही तथा पार्टी ने दलित वर्गों के सशक्तीकरण के मामले में शिथिलता एवं लापरवाही बरती। राहुल ने कहा, ''हमने अपेक्षित उत्साह से काम नहीं किया। लेकिन हम बिहार में हुईं अपनी गलतियों से सबक ले रहे हैं तथा हम, अपने गठबंधन पार्टनरों के साथ आगे बढ़ेंगे, और एससी, एसटी, ओबीसी, ईबीसी एवं अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिये काम करेंगे।'' इससे पहले, राहुल ''पलायन रोको, नौकरी दो'' पद यात्रा में शामिल होने बेगूसराय गये थे। इस पद यात्रा का आयोजन पार्टी की युवा एवं विद्यार्थी शाखा ने किया था, ताकि बिहार की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- कांग्रेस का सोच है, मुस्लिम मतदाता, जो बिहार में लगभग 17 प्रतिशत हैं, अब कांग्रेस की ओर आएगा, तथा जातिगत मतगणना तथा बैकवर्ड समर्थन सोच के कारण कांग्रेस बिहार में अच्छी स्थिति में रहेगी।
- इस सोच में कांग्रेस का इतना विश्वास है, कि राहुल गांधी अब सार्वजनिक रुप से स्वीकार करने लगे हैं, कि उनकी पार्टी बैकवर्ड जातियों के विकास के लिये पूर्ण जोश व उत्साह से काम करने में चूक गई थी।
- राहुल गांधी ने पटना में एक सिमपोज़ियम को सम्बोधित करते हुए पार्टी की पुरानी गलती स्वीकार की।
- बेगूसराय में, जो एनएसयूआई अध्यक्ष, कन्हैया का घर भी है, राहुल ने नारा दिया, ''पलायन रोको, नौकरी दो'', और उन्होंने बिहार का पुराना रोग, बेरोजगारी व ''माइग्रेशन'' (पलायन) को हाई-लाइट किया।

तेलंगाना के मु.मंत्री को भारी पड़ा, लोकप्रिय फिल्म एक्ट्रेस पर झूठा आरोप लगाना

रैवन्त रेड्डी ने दिया मिर्ज़ा पर आरोप लगाया कि उन्होंने ए.आई. जैनरेटेड फोटोग्राफ लगायीं, आंदोलन का ''हौव्वा'' दिखाने के लिए

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। तेलंगाना के मुख्यमंत्री एक ''चार्मर'' हैं जल्दी ही लोगों को लुभा लेते हैं और मीडिया तथा अन्य कथानकों का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने में माहिर हैं पर सैलिब्रिटीज़ पर कंचा गाचीबोवली जंगल पर फक न्यूज़ व एआई से बने वीडियो फैलाने का आरोप लगाकर उन्होंने खुद के लिए मुसीबत खड़ी कर ली है।

बेहद साहसी सेलिब्रिटीज़ में से एक दिया मिर्ज़ा, जो हैदराबाद से ही हैं, ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया दी और रैवन्त रेड्डी की इस बात के लिए कड़ी निंदा की क्योंकि इन्होंने उन पर झूठे एआई वीडियो व फोटो फैलाने का झूठा आरोप लगाया। दिया मिर्ज़ा ने 400 एकड़ वन भूमि, जिसे सरकार नीलाम करना चाहती है, से पेड़ काटने के खिलाफ आंदोलन कर रहे छात्रों के पक्ष में कुछ वीडियो व तस्वीरें पोस्ट की है। रेड्डी का आरोप है कि ये वीडियो व तस्वीरें एआई से तैयार हैं। फिल्म स्टार दिया मिर्ज़ा, जो संवेदनशील किरदारों और शानदार अभिनय के लिए जानी जाती है, ने अपने एक्स एकाउण्ट पर रैवन्त रेड्डी के आरोपों को ''पूरी तरह से झूठ'' करार दिया और कहा कि मैंने एआई जनरेटेड फोटो व वीडियो का इस्तेमाल नहीं किया है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने कल एक ट्वीट किया जिसमें कंचा गाचीबोवली के बारे में कुछ दावे किए उनमें एक था कि 400 एकड़ जमीन, जिसे सरकार बेचना चाहती है, की जैवविविधता को बचाने के विरोध प्रदर्शन कर रहे छात्रों के पक्ष में मैंने फेक एआई जनरेटेड फोटो व वीडियो पोस्ट किए हैं। यह एक गलत बयान है मैंने ऐसी एक भी तस्वीर या वीडियो पोस्ट नहीं किया है जो एआई से तैयार किया गया हो।

अभिनेत्री ने मीडिया और राज्य सरकार पर भी निशाना साधते हुए कहा, ''मीडिया और तेलंगाना सरकार को ऐसे दावे करने से पहले अपने तथ्यों की जांच करनी चाहिए।''

सोशल मीडिया पर कंचा गाचीबोवली में पेड़ों को गिराने से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- दिया मिर्ज़ा ने कड़ा विरोध किया कि मु.मंत्री को तथ्य जान लेने चाहिए, कोई आरोप लगाने से पहले।
- अन्य फिल्म हस्तियों, जैसे, जॉन अब्राहम, रवीना टण्डन ने भी दिया मिर्ज़ा का पूर्ण समर्थन किया।

पुनर्गठन व परिसीमन के बाद पंचायत चुनाव कार्यक्रम तय होगा

जयपुर, 7 अप्रैल। प्रदेश की 6759 पंचायतों के चुनाव स्थगित कर, निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक बना दिए जाने के खिलाफ दायर याचिका में राज्य सरकार ने सोमवार को हाईकोर्ट में अतिरिक्त शपथ पत्र पेश किया है। वहीं, सोमवार को मामले का नंबर नहीं आने के कारण मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस आनंद शर्मा की बैंच में मामले की चल रही सुनवाई दो सप्ताह के लिए टल गई है।

राज्य सरकार की ओर से पेश शपथ पत्र में कहा गया कि पंचायतों और नगरपालिकाओं के पुनर्गठन व परिसीमन के लिए मार्च महीने में नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। यह प्रक्रिया मई-जून महीने तक चलेगी और उसके बाद ही पंचायतों का चुनाव कार्यक्रम तय किया जाएगा। दरअसल, गिर्राज सिंह व अन्य की पीआईएल में पिछली सुनवाई पर खंडपीठ ने राज्य सरकार व चुनाव आयोग से पूछा था कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- राज्य सरकार ने हाई कोर्ट में अतिरिक्त शपथ पत्र पेश कर यह जानकारी दी।

स्टालिन तमिलनाडु का विधानसभा चुनाव, मोदी बनाम स्टालिन संघर्ष बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं

ममता बनर्जी की भांति स्टालिन का भी तमिलनाडु के मीडिया पर पूरा कंट्रोल है तथा वो स्थानीय मीडिया का एजेण्डा निर्धारित कर रहे हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रैल। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और द्रमुक प्रमुख एम.के. स्टालिन ने खुद को सीधे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मुकाबले में खड़ा कर दिया है। वे खुद को ऐसे प्रस्तुत कर रहे हैं, मानो सीधे प्रधानमंत्री को चुनौती दे रहे हैं, जैसे प.बंगाल में ममता बनर्जी दे रही हैं, जहाँ अगले वर्ष चुनाव हो रहे हैं। उन्होंने तमिलनाडु के पबंन ब्रिज के उद्घाटन समारोह में भाग नहीं लिया। इस पुल का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था। इसके बाद अन्नामलाई के नेतृत्व में भाजपा नेताओं ने हगांमा शुरु कर दिया और आरोप लगाने लगे कि स्टालिन ने उद्घाटन समारोह में भाग न लेकर प्रधानमंत्री का अपमान किया है। यही नहीं, जब प्रधानमंत्री राज्य में आए तो स्टालिन ने उनका स्वागत तक नहीं किया। उनकी बजाय उपमुख्यमंत्री पी. त्यागराजन ने प्रधानमंत्री का स्वागत किया। मुख्यमंत्री स्टालिन जो भी करते है या कर रहे हैं, उसमें पूरी सोची समझी रणनीति होती है। वे पूरे विषय को खुद के और प्रधानमंत्री के मुकाबले में बदल देते हैं। स्टालिन ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री ने काचातीवू द्वीप वापस लेने की तमिलनाडु की मांग की उपेक्षा की है। स्टालिन के शब्दों से ऐसा लगता है, जैसे यह समस्या मोदी सरकार की देन है। स्टालिन ने कहा कि केन्द्र सरकार और मोदी तमिल विरोधी हैं।

प्रसंगवश बता दें कि स्टालिन द्वारा उठाये गये अधिकांश मुद्दे भावनात्मक है, जिन्होंने प्रधानमंत्री तथा भाजपा को तमिल-विरोधी रूप में चित्रित करने में स्टालिन की मदद की है। इन मुद्दों में शामिल हैं- भाषा का मुद्दा, परिसीमन का मुद्दा, तमिलनाडु के विद्यार्थियों को नीट से छूट दिये जाने की तमिलनाडु की माँग को खरिज किया जाना और अब वक्फ विधेयक का पारित होना।

राज्य को शिक्षा-फंड जारी करने से केन्द्र के इनकार को भी द्रमुक तथा उसका प्रचार-तंत्र, तमिलनाडु के प्रति केन्द्र के सौतेले व्यवहार के एक और उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। ज्ञातव्य है कि द्रमुक का प्रचार तंत्र, कम से कम तमिलनाडु में तो, भाजपा के प्रचार तंत्र से कम नहीं पड़ता, बल्कि उसे पछाड़ने की कुव्वत रखता है।

ठीक पश्चिम बंगाल की तरह, जहाँ स्थानीय मीडिया पर ममता बनर्जी तथा उनकी पार्टी की पूरी पकड़ है, तमिलनाडु में द्रमुक के अपने स्वयं के बहुत ताकतवर मीडिया ब्रान्ड हैं तथा द्रमुक की मीडिया-प्रबंधन रणनीति पूरी तरह अभेद्य है।

इस क्षेत्रीय दल के पास इस मामले में जो ताकत है, उसका उसके राष्ट्रीय पार्टनर, कांग्रेस में राष्ट्रीय स्तर पर अभाव साफ दिखाई देता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मोदी बनाम स्टालिन का वातावरण बनाने के लिए उन्होंने स्थानीय मुद्दे, डीलिमिटेशन, नई शिक्षा नीति, नीट परीक्षा का विरोध आदि मुद्दे उठाए और अब प्र.मंत्री मोदी की तमिलनाडु यात्रा में भी वे न प्र.मंत्री का स्वागत करने हवाई अड्डे गये और न ही प्र.मंत्री के समारोह में शरीक हुए।
- वे तमिलनाडु के पुराने मुद्दों को भी, जैसे काचातीवू टापू के विवाद को, ऐसे प्रस्तुत कर रहे हैं, जैसे कि यह मोदी के सत्ता में आने से पैदा हुआ है।

'क्या कार्यवाही शुरु कराने के लिए हर बार एसपी को बुलायें'

जयपुर, 7 मार्च। राजस्थान हाईकोर्ट ने प्रदेश में लापता नाबालिगों की बरामदगी नहीं होने के मुद्दे पर गंभीर टिप्पणी की, उस समय डीजीपी भी मौजूद थे। अदालत ने कहा कि बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं में हम पहले थानाधिकारी को बुलाते हैं, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती। वहीं, जैसे ही संबंधित एसपी को बुलाते हैं तो मामले में कार्रवाई शुरू हो जाती है। कई मामलों में तो लापता की बरामदगी भी हो जाती है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस मुकेश राजपुरोहित ने यह टिप्पणी नाबालिग लापताओं के चार मामलों में सुनवाई करते हुए की।

सुनवाई के दौरान, डीजीपी यूआर साहू अदालत में पेश हुए। उनके साथ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- हाई कोर्ट ने लापता नाबालिगों के चार मामलों में डीजीपी यू.आर. साहू को बुलाकर तीखी टिप्पणी की।

चीन, यूरोपियन यूनियन, कैनडा, मैक्सिको आदि सभी देश अमेरिका को सबक सिखाने के मूड में

यूरोपियन यूनियन, चीन, कैनडा, मैक्सिको ने अमेरिका से इन देशों को निर्यात होने वाले सामान पर भारी टैरिफ वृद्धि जड़ी

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अप्रेल। ट्रंप की टैरिफ तथा ट्रेड की गलाघोंटू वाणिज्यिक व व्यापारिक नीतियों के कारण एक ग्लोबल इकोनॉमिक वॉर छिड़ गया है, जिसमें सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं नए अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को सबक सिखाने के लिए सख्त कदम उठा रही हैं। टैरिफ (शुल्क) एक दोधारी तलवार की तरह है। यदि आप दूसरों पर शुल्क लगाते हैं तो वो भी आपके खिलाफ समान या और अधिक कठोर कदम उठा सकते हैं।

इसका परिणाम, बढ़ती महँगाई, घटता व्यापार, प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में मंदी, लोगों की आय में गिरावट और भारी बेरोजगारी हो सकता है।

ट्रंप द्वारा रैसिप्रोकल टैरिफ लगाने के बाद सोमवार को जब स्टॉक मार्केट खुले तो विश्व भर के स्टॉक बाज़ारों में भारी तबाही का मंजर देखने को मिला। स्टॉक मार्केट ''बेयर मार्केट'' की स्थिति में हैं, जिसका अर्थ है कि इस समय इन्वैस्टर अपना इन्वैस्टमैंट बेचकर नकदी रखना पसंद करेंगे, बजाय स्टॉक्स में पैसा लगाने के।

जापान का स्टॉक मार्केट, जो दुनिया के सबसे बड़े बाज़ारों में एक है, टैरिफ वॉर के कारण सोमवार को 8 प्रतिशत गिर गया। भारत के स्टॉक मार्केट में 2227 पॉइन्ट की गिरावट आई, जिसने 14 लाख करोड़ रूपए की शेयर वैल्यू को मिटा दिया। चीन का शेयर बाज़ार भी गिरा। यूरोपीय बाज़ार को 10 प्रतिशत की गिरावट के बाद 1.7 ट्रिलियन यूरो का नुकसान झेलना पड़ा।

बाजारों की इस उथल-पुथल के बीच, 29 देशों वाली यूरोपियन यूनियन (ई.यू.) ने ट्रंप के पिछले सप्ताह के शुल्कों के जवाब में अपने खुद के शुल्कों की घोषणा की। यूरोपीय संघ ने अमेरिका से आयात पर 28 बिलियन डॉलर के शुल्क लगाने का प्रस्ताव रखा। ई.यू. के व्यापार आयुक्त ने कहा कि ये शुल्क 9 अप्रैल से प्रभावी होंगे।

चीन, जो दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जिसे ट्रंप ''नम्बर वन'' दुश्मन मानते हैं, ने अमेरिका से आयात पर 34 प्रतिशत से अधिक शुल्क लगाने की घोषणा की है। अब चीन अमेरिका से आयात पर अपने शुल्कों को और बढ़ाने और दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाने पर विचार कर रहा है।

अमेरिका के रैसिप्रोकल टैरिफ और अन्य टैक्स, जिसमें 10 प्रतिशत का बेसिक टैक्स भी शामिल है, के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- यूरोपीय देशों ने 28 अरब डॉलर का आयात शुल्क लगाया।
- चीन ने 34 प्रतिशत का टैरिफ लगाया अमेरिकी सामान पर।
- ये देश, टैरिफ युद्ध में इसलिये उतरे कि अमेरिका के टैरिफ धमाकों से इन सभी देशों के स्टॉक एक्सचेंज में शेयर की कीमतों में गिरावट आई
- जापान के स्टॉक एक्सचेंज में 8 प्रतिशत की गिरावट आई, चीन के स्टॉक मार्केट में दस प्रतिशत टूट हुई। जैसा कि विदित ही है अमेरिका ने चीन के माल पर 54 प्रतिशत का टैरिफ लगाया है।
- जे.पी. मॉर्गन बैंक (अमेरिका) के अध्यक्ष जैमी डीमॉन ने शेयर होल्डर्स को संबोधित करते हुए कहा, अमेरिका की विशेष पोज़िशन थी, विश्व में, अपनी इकोनॉमी की ताकत, सेना के ''पावर'' और अपनी नैतिक मान्यताओं के कारण, जिसका मुख्य हिस्सा थी इकोनॉमी व राजनीति में स्वतंत्रता, पर, अब यह मान्यता खत्म हो रही है।

एकल पट्टा प्रकरण में अशोक पाठक को पक्षकार बनाने पर बहस जारी

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान हाईकोर्ट में सोमवार को पूर्व मंत्री शांति धारीवाल से जुड़े चर्चित एकल पट्टा मामले में सुप्रीम कोर्ट में याचिकाकर्ता रहे अशोक पाठक को पक्षकार बनाए जाने के मुद्दे पर बहस जारी रही। अदालत मामले में मंगलवार को सुनवाई करेगी।

मुख्य न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव की एकलपीठ के समक्ष पूर्व मंत्री धारीवाल के अधिवक्ता वीआर बाजवा ने पाठक को पक्षकार बनाए जाने पर आपत्ति जताई। बाजवा ने कहा कि अशोक पाठक मामले में न तो शिकायतकर्ता हैं और न ही उनके कोई हित प्रभावित हुए हैं। ऐसे में उनका इस केस से कोई संबंध नहीं है। जवाब में पाठक के अधिवक्ता आशीष कुमार सिंह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पूर्व मंत्री धारीवाल के अधिवक्ता ने पाठक को पक्षकार बनाने पर आपत्ति की।

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

ट्रंप टैरिफ का भारत पर प्रभाव

डोनाल्ड ट्रंप ने जब 20 जनवरी 2025 को राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी, तभी यह स्पष्ट हो गया था कि उनके दूसरे कार्यकाल में कई बहुत दूरगामी प्रभाव वाले निर्णय लिए जाएंगे। इनमें से एक निर्णय जो कि अवैध प्रवासियों को अमेरिका से अपने-अपने देश में भेजने का था, उस पर तो कार्यवाही तत्काल ही प्रारंभ हो गई। इसका प्रभाव यह हुआ कि अमेरिका में रह रहे अवैध भारतीय प्रवासियो को हथकडी और बेड़ियों में जकड़ कर अमेरिकी सेना के हवाई जहाज से भारत भेजा गया।

इसके बाद ट्रंप ने दूसरी बड़ी घोषणा 2 अप्रैल, 2025 को, रेसिप्रोकल टैरिफ (पारस्परिक आयात शुल्क) लगाने के संबंध में की। ट्रंप ने विश्व के 60 देशों पर रेसिप्रोकल टैरिफ लागू करने की घोषणा की।

पाठकों के लिए समझना आवश्यक है कि टैरिफ का मतलब आयात शुल्क है। एक देश से, दूसरे देश में जब भी कोई वस्तुएं निर्यात की जाती हैं तो आयात करने वाला देश, आयातित वस्तुओं पर आयात शुल्क लगाता है। इसे निर्धारित करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि आयात शुल्क इतना भी कम न हो कि देश में निर्मित होने वाली वस्तुओं से आयातित वस्तुएं बहुत सस्ती हो जाएं, ताकि स्थानीय उद्योग पर विपरीत प्रभाव न पड़े। यह इतना अधिक भी न हो कि आयातित वस्तु इतनी महंगी हो जाएं कि उन्हें कोई खरीद ही नहीं पाए। अमेरिका एक उपभोक्ता वादी देश है। अतः वहां कई देशों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की बहुत खपत होती है। अमेरिका विश्व की एक नंबर की अर्थ व्यवस्था है और इसकी जी डी पी 27 ट्रिलियन डॉलर है, जो दुनिया की कुल जी डी पी का 26.11% है। इसकी तुलना में भारत की कुल जी डी पी 3.5 ट्रिलियन डॉलर है, जो वैश्विक जी डी पी का 3.36% है। प्रति व्यक्ति जी डी पी अमेरिका की 80700 डॉलर है जब कि भारत में यह केवल 2500 डॉलर है। अनेक देशों के उद्योग, उनके द्वारा निर्मित वस्तुओं के अमेरिका में उपभोग पर निर्भर हैं।

जहां तक भारत का संबंध है, भारत में अमेरिका से आयात होने वाली अधिकांश वस्तुओं पर 50 से 70% टैरिफ है। जबकि अमेरिका में भारत से जाने वाली अधिकांश वस्तुओं पर बहुत कम अर्थात 3 से 5% के बीच टैरिफ है। इस कारण अमरीकी उपभोक्ताओं को भारत में निर्मित वस्त्र, दवाइयां, रत्न आभूषण बहुत सस्ते उपलब्ध हो जाते हैं।

अब ट्रंप द्वारा टैरिफ में अचानक 26% वृद्धि करने से भारत में उत्पादित वस्तुओं की कीमत, अमेरिका में बहुत बढ़ जाएगी। यदि वहां के उपभोक्ता इतनी बड़ी क़ीमत पर क्रय नहीं करें, तो वहां के आयात कर्ता, भारत के निर्यातकों से वस्तुओं की कीमत कम करने के लिए कहेंगे। इसका मतलब यह होगा कि भारतीय उद्योग, यदि इतनी कम कीमत पर निर्यात करने में समर्थ नहीं होंगे, तो उन्हें अपनी उत्पादन क्षमता कम करनी होगी। परिणामस्वरूप, धीरे-धीरे उद्योग बंद होंगे और यहां काम करने वाले लोगों की संख्या में छंटनी होगी। इससे बड़ी मात्रा में बेरोजगारी बढ़ेगी और आर्थिक मंदी का दौर प्रारंभ होगा।

यह सर्वविदित तथ्य है कि वर्तमान समय, वैश्विक अंतर निर्भरता का है। वह जमाना अब नहीं रहा, जब कोई एक देश, पूरी दुनिया से कटकर अपने मन माने तौर से व्यापार कर सकता था। अपनी आर्थिक मजबूती का फायदा उठाते हुए, डोनाल्ड ट्रंप ने 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' के अपने वादे को पूरा करने की दृष्टि से 'रेसिप्रोकल टैरिफ' का कदम उठाया है। वर्तमान में, अमेरिका में आने वाली अधिकांश वस्तुओं पर बहुत कम आयात शुल्क था, जिसके कारण प्रतिस्पर्धी दरों पर विश्व के बहुत से देश, अमेरिका में काम आने वाली वस्तुओं का उत्पादन अपने देश में करके, निर्यात कर सकते थे। इसके कारण संबंधित देशों में उद्योग पनपते थे और वहां के स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलता था।

2 अप्रैल 2025 को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व के विभिन्न देशों से आयात होने वाले वस्तुओं पर 10 से लेकर 50% तक टैरिफ लगाने का निर्णय लिया। भारत के लिए यह टैरिफ 26% है, जबकि चीन पर यह 34% है। टैरिफ की नई दरें 9 अप्रैल 2025 से लागू हो जाएंगी।

जब से डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रेसिप्रोकल टैरिफ की घोषणा की है, तब से पूरी दुनिया में तहलका मचा हुआ है। सभी क्षेत्रों में इसका व्यापक असर दिखाई भी देने लगा है। यह आश्चर्य की बात है कि भारत में इस रेसिप्रोकल टैरिफ के निर्णय पर जितना जितनी चर्चा होनी चाहिए थी, वह अभी तक नहीं हुई है। इसी दृष्टि से यह लेख पाठकों के समक्ष स्थिति स्पष्ट करने हेतु लिखा गया है। भारत में चर्चा अधिक न होने का शायद एक कारण यह रहा कि हमारे यहां की सरकार जनता को हिंदू-मुसलमान के विवादों में ही उलझाती रही, चाहे वह औरंगजेब की कब्र को खोदने का मामला हो, छत्रपति शिवाजी का हो, या रामनवमी और ईद का हो, सड़कों पर नमाज पढ़ने का हो, अथवा वक्फ संशोधन कानून का हो। पूरा समय, लगभग सभी मीडिया चैनलों में इन्हीं विषयों पर निरंतर चर्चा होती रही है। इस कारण, जिस विषय से पूरे देश के आर्थिक भविष्य पर प्रभाव पड़ सकता है या रोजगार पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है, वह विषय लगभग मीडिया से बाहर ही रहा है।

हम इस लेख में यह जानने का प्रयास करेंगे कि भारत पर ट्रंप की टैरिफ नीति का क्या प्रभाव पड़ने की संभावना है?

सबसे पहले यदि हम शेयर मार्केट की बात करें तो यह अभी से गिरना प्रारंभ हो गया है और जो शेयर मार्केट 2 अप्रैल को लगभग 77000 पर था वह घटकर तीन-चार दिन के अंदर ही 74000 तक आ गया है। अनुमान है कि शेयर मार्केट में गिरावट के कारण शेयर धारकों को लगभग 10 लाख करोड रुपए का नुकसान अभी तक हो चुका है।

> **अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाने के कारण अमेरिकी नागरिकों के लिए सभी चीज अत्यंत महंगी हो जाएंगी एवं उसके कारण अमेरिकी नागरिकों का तीव्र विरोध जब ट्रंप के विरुद्ध होगा, तब संभव है उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़े। इस प्रकार का घोर विरोध प्रारंभ हो चुका है और पूरे देश में ट्रंप के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।**

भारतीयों की सबसे अधिक रुचि सोने के भाव में रहती है और फिलहाल तो इसमें मामूली गिरावट देखी गई है, किंतु अंततः अनुमान है कि इस नीति के कारण सोने के भाव प्रति 10 ग्राम के लिए लगभग एक लाख रुपए तक पहुंच सकता है, जो कि वर्तमान में 95000 रुपए है।

पाठकों के लिए यह जानना उपयुक्त होगा कि भारत के कुल निर्यात का लगभग 18% अमेरिका को होता है। इस निर्यात की कीमत लगभग 6 लाख 40 हजार करोड रुपए है। भारत द्वारा अमेरिका को निर्यात किए जाने वाली वस्तुओं में प्रमुख रत्न और आभूषण, इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी, वस्त्र, फार्मास्यूटिकल उत्पाद, ऑटो पाट्र्स आदि हैं। इसके विपरीत, भारत में अमेरिका से होने वाला आयात लगभग 3.49 लाख करोड़ रुपए का है। इसका अर्थ यह है कि भारत से जितना निर्यात होता है, उससे लगभग तीन लाख करोड रुपए कम का आयात होता है। ट्रंप द्वारा फिलहाल सेमी कंडक्टर, एनर्जी उत्पाद, आई टी और फार्मास्यूटिकल के क्षेत्र को इस रेसिप्रोकल टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। यदि इसे भी शामिल कर लिया जाता तो न केवल यहां के फार्मा सेक्टर पर बहुत प्रभाव पड़ता, अपितु अमेरिका में भी सारी दवाइयां बहुत महंगी हो जातीं।

अमेरिका ने भारत पर 26% का आयात शुल्क अथवा टैरिफ लगाया है जबकि चीन से आयात होने वाली वस्तुओं पर 34% का शुल्क लगाया है। वहीं, ब्राजील, इंग्लैंड, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से होने वाली आयातित वस्तुओं पर 10% का ही शुल्क लगाया है। कई भारतीय नेता यह कहकर लोगों को भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं कि चीन पर 34% का टैरिफ लगाया है जबकि भारत पर केवल 26% लगाया गया है। चीन और कुछ अन्य देशों ने जवाबी कार्यवाही करते हुए अमेरिका से आने वाली सामग्री पर टैरिफ बहुत बढ़ा दी है।

ट्रंप द्वारा टैरिफ बढ़ाने के पीछे यह तर्क दिया गया है कि जब बाहर से आने वाली वस्तुएं महंगी होंगी तब अमेरिका में इन वस्तुओं का अधिक उत्पादन होगा, जिसके फलस्वरूप अमेरिकी लोगों के लिए रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे। ट्रंप के इस निर्णय के पीछे एक ही भावना दिखाई देती है – 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन'।

इसका वास्तविक प्रभाव तो 9 अप्रैल के बाद पड़ेगा किंतु इस घोषणा के बाद से ही बहुत उथल-पुथल और अनिश्चितता का दौर प्रारंभ हो गया है।

एप्पल फोन का निर्माण अधिकांशतया चीन, भारत और वियतनाम में होता है। क्योंकि चीन और वियतनाम में टैरिफ भारत से अधिक लगाया गया है, अतः भारत पर इसका अधिक असर होने की संभावना नहीं है, क्योंकि भारत से अमेरिका में जाने वाले फोन की कीमत इतनी अधिक नहीं बढ़ेगी जितनी चीन और वियतनाम में निर्मित फोन की कीमत बढ़ेगी।

भारत से विभिन्न प्रकार की मछलियों का निर्यात अमेरिका को होता है इसका कुल मूल्य लगभग 20000 करोड रुपए है। इनमें झींगा मछली (प्रॉन) प्रमुख है जिसका हिस्सा लगभग 90% है। ट्रंप टैरिफ के कारण इसमें बहुत कमी आएगी क्योंकि इस व्यवसाय में बढ़ाई गई टैरिफ का भार निर्यातकों को वहन करना पड़ेगा जो लगभग 600 करोड रुपए होता है। इसके विपरीत ब्राजील के लिए टैरिफ 10% ही है, अतः वहां से अमेरिका को आयात करने में सुविधा होगी। इसलिए, भारत का मछली व्यापार बुरी तरह प्रभावित होने की संभावना है। इस व्यापार में लगे हुए लोगों के रोजगार पर भी असर पड़ेगा।

अमेरिका द्वारा टैरिफ बढ़ाने के कारण भारत से अमेरिका को होने वाले स्टील के निर्यात में कमी आएगी। क्योंकि, अन्य देशों से भी स्टील का निर्यात अमेरिका को नहीं हो पाएगा, अतः अन्य देश अब भारत में स्टील को डंप करने की नीति अपनाएंगे। इसके कारण, भारत के स्टील उद्योग पर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ने की संभावना है। इस उद्योग में लगे व्यक्तियों का रोजगार भी बहुत हद तक पूरी तरह प्रभावित होगा।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि विश्व एक मंदी के दौर की ओर अग्रसर हो रहा है। इसमें नौकरियां कम होगी और कीमतें बढ़ेंगी। इस मंदी के प्रभाव से भारत अपनी नीतियों में सुधार करके स्वयं को कितना बचा पाता है यह भविष्य के गर्भ में है।

ट्रंप द्वारा 1910 के बाद पहली बार इतना अधिक क्रांतिकारी टैरिफ संबंधी निर्णय किया गया है। रेसिप्रोकल टैरिफ को लागू करने की तिथि को ट्रंप 'लिबरेशन डे' के रूप में बता रहे हैं, वहीं कई अर्थशास्त्री इसे 'ट्रेड रिसेशन डे' या 'टैरिफ स्टूपिडिटी डे' के रूप में मनाने की बात कर रहे हैं।

ट्रंप टैरिफ के दुष्प्रभाव से बचने के लिए, फिलहाल तो निम्न दो ही विकल्प दिखाई देते हैं:–

1. अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाने के कारण अमेरिकी नागरिकों के लिए सभी चीज अत्यंत महंगी हो जाएंगी एवं उसके कारण अमेरिकी नागरिकों का तीव्र विरोध जब ट्रंप के विरुद्ध होगा, तब संभव है उन्हें अपना निर्णय बदलना पड़े। इस प्रकार का घोर विरोध प्रारंभ हो चुका है और पूरे देश में ट्रंप के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।

2. भारत और अमेरिका परस्पर द्विपक्षीय व्यापारिक समझौते करें और विभिन्न वस्तुओं के टैरिफ में आपसी सहमति के अनुसार संशोधन करें ताकि भारतीय उद्योग जगत पर इसका विपरीत प्रभाव न पड़े। प्रधानमंत्री मोदी को इस प्रक्रिया के लिए ट्रंप के साथ अपने कथित मित्रता पूर्ण संबंधों का पूरा उपयोग करना पड़ेगा।

3. वे प्रमुख देश जहां अमेरिका वस्तुओं का निर्यात अधिक होता है, वे भी अपने देश में अमेरिकी वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाए अथवा टैरिफ को और बढ़ाए तो अमेरिकी निर्यात पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इस कारण अमेरिका में भी नौकरियां कम हो जाएंगी। इसके फल स्वरुप अमेरिका मंदी के दौर से गुजरेगा और वहां की जनता राष्ट्रपति के विरुद्ध हो जाएगी। जनता के दबाव के कारण ट्रंप को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

फिलहाल तो ऐसा लगता है कि ट्रंप के एक निर्णय ने विश्व की अर्थव्यवस्था को मंदी और अनिश्चितता के दौर में धकेल दिया है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

ट्रंप के टैरिफ का तूफान

5 ट्रिलियन डॉलर अमेरिकी संपत्ति का नुकसान भारतीय अर्थव्यवस्था के बराबर

अब ज़रूरी है सतर्क रणनीति

सुनील दत्त गोयल

एक समय था जब दुनिया एक साझा नियमों और वैश्विक सहयोग के दौर से गुजर रही थी। वैश्वीकरण और मुक्त व्यापार के उस युग में ऐसा लगता था कि सभी देश मिलकर आगे बढ़ सकते हैं – एक 'विन-विन' सिस्टम, जहाँ हर किसी को फायदा हो। लेकिन अब वो दौर बीत चुका है। अमेरिका ने हाल ही में 'लिबरेशन डे' पर जिस तरह से नई टैरिफ नीति का ऐलान किया है, वह दुनिया की आर्थिक धारा को ही मोड़ता नज़र आ रहा है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि नियमों पर आधारित वैश्विक व्यापार व्यवस्था का अंत हो चुका है – और हम एक नए, कहीं ज़्यादा अनिश्चित और ख़तरनाक युग में प्रवेश कर चुके हैं। चीन और अमेरिका के बीच चल रहा व्यापार युद्ध (Trade War) अब एक खतरनाक मोड़ पर पहुँच चुका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा हाल ही में घोषित नए टैरिफ्स के बाद ना सिर्फ अमेरिकी बाजारों में हाहाकार मचा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की स्थिरता पर भी गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। इस बार अमेरिका और चीन के बीच आर्थिक टकराव ने जो रूप लिया है, उसका असर पूरी दुनिया पर दिख रहा है – खासतौर पर उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर।

5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान: अमेरिकी संपत्ति का विनाश, भारत की GDP के बराबर

ट्रंप द्वारा चीन से आने वाले सेमीकंडक्टर और तकनीकी उत्पादों पर उच्च टैरिफ लगाने के ऐलान के बाद, वॉल स्ट्रीट में तेज़ गिरावट दर्ज की गई। अनुमान के अनुसार, अमेरिकी कंपनियों और निवेशकों को कुल मिलाकर लगभग 5 ट्रिलियन डॉलर (करीब 435 लाख करोड़) का नुकसान हुआ है। यह रकम भारत की पूरी अर्थव्यवस्था (GDP) के बराबर है, जो वैश्विक मंच पर एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था मानी जाती है।

यहां यह देखना अत्यंत आवश्यक है कि भारत जैसा विशाल देश, जहां आज़ादी के लगभग 80 वर्ष पूरे होने को हैं, अपनी अर्थव्यवस्था को 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचाने के लिए पिछले 11 वर्षों से पूरी मोदी सरकार अथक प्रयास कर रही है। वहीं ट्रंप साहब के एक फैसले ने पूरे विश्व की आर्थिक और व्यापारिक संरचना को झकझोर कर रख दिया है। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि एक गलत नीति निर्णय कैसे किसी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर हिला सकता है।

ट्रंप की आक्रामक नीति और चीन की प्रतिक्रिया

डोनाल्ड ट्रंप पहले ही चीन से आयातित 550 अरब डॉलर के उत्पादों पर 25% से अधिक का टैरिफ लगा चुके हैं। इस नीति का उद्देश्य था अमेरिकी बाजार को 'चीन पर निर्भरता' से मुक्त करना और घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देना। लेकिन इसके परिणाम अब स्पष्ट रूप से नकारात्मक दिखने लगे हैं। जवाब में चीन ने अमेरिका से आयात होने वाले 16 सेमीकंडक्टर उत्पादों पर 34% तक का टैरिफ लगाया है और कुछ पर प्रतिबंध भी लगाया है। यह कदम सीधे अमेरिकी टेक्नोलॉजी सेक्टर को निशाना बनाता है, जिससे अमेरिकी कंपनियाँ मुश्किल में आ गई हैं।

अब कैसा दिखेगा ये नया दौर?

अमेरिका, जो दशकों तक वैश्विक मुक्त व्यापार प्रणाली का सबसे बड़ा समर्थक था, अब उस पूरी प्रणाली से पीछे हट गया है। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गनाइज़ेशन (WTO) जैसी संस्थाओं के ज़रिये दुनिया भर में जो नियम-क़ायदे बने थे, उन्हें अब नजरअंदाज किया जा रहा है। अमेरिका अब देश-दर-देश अलग-अलग टैरिफ तय कर रहा है – जिसे वो रिसिप्रोकल टैरिफ कह रहा है। यानी अब यह तय नहीं होगा कि किसी उत्पाद पर कितना शुल्क लगेगा, बल्कि यह देखा जाएगा कि कौन-सा देश अमेरिका को क्या देता है और उसी के आधार पर टैक्स तय होंगे।

एक छोटा लेकिन खतरनाक कदम

शायद किसी एक देश पर लगने वाला 10% टैरिफ ज्यादा बड़ा मुद्दा न लगे। लेकिन असली चिंता इस कदम के पीछे की सोच है। अगर बाकी देश भी यही रवैया अपनाते हैं – कि WTO के नियमों को दरकिनार करके वे भी केवल अपनी शर्तों पर ट्रेड करेंगे – तो पूरी दुनिया की सप्लाई चेन चरमरा सकती है। छोटे और विकासशील देश, जिनकी अर्थव्यवस्था विदेशी व्यापार पर निर्भर है, हाशिए पर चले जाएंगे, उन्हें वैश्विक व्यापार से बाहर किया जा सकता है।

वैश्विक मंदी का खतरा मंडरा रहा है : अमेरिका के इस फैसले के असर से वॉल स्ट्रीट में 5 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा की पूंजी उड़ गई – जो भारत की कुल अर्थव्यवस्था (GDP) के बराबर है। सोचिए, एक नीति की घोषणा से अमेरिका ने जितनी संपत्ति गंवाई, वो एक पूरे देश की सालाना आर्थिक गतिविधियों के समान है। ऐसे में ज़रूरत है कि आने वाले फैसलों को बेहद सावधानी से लिया जाए। अगर यही रुख जारी रहा तो वैश्विक व्यापार युद्ध को रोकना मुश्किल होगा। कई देशों ने पहले ही जवाबी टैरिफ की तैयारी शुरू कर दी है यूरोपियन यूनियन, कनाडा, मैक्सिको जैसे देश अब खुद अमेरिकी उत्पादों पर भारी शुल्क लगाने पर विचार कर रहे हैं।

इतिहास की चेतावनी

दुनिया ने इससे पहले ऐसा दौर 1930 के दशक में देखा था, जब व्यापार युद्धों ने आर्थिक मंदी को जन्म दिया, और आगे चलकर यह हालात द्वितीय विश्व युद्ध तक पहुंच गए। अगर अब भी वैश्विक समुदाय ने संयम नहीं दिखाया, तो हालात दोहराए जा सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय नियम टूट रहे हैं

आज की हकीकत यही है कि वैश्विक संस्थाएं कमजोर हो रही हैं। देशों के बीच सहयोग की बजाय प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ हावी हो रहा है। बड़ी अर्थव्यवस्थाएं अब ताक़त और दबाव के बल पर अपने फ़ैसले थोप रही हैं। इस माहौल में छोटे और खुली अर्थव्यवस्था वाले देशों के लिए यह दौर खासा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उन्हें या तो बड़ी शक्तियों की शर्तें माननी होंगी या फिर बाहर कर दिए जाएंगे।

क्या करना होगा अब?

अब देश को न सिर्फ आर्थिक स्तर पर, बल्कि मानसिक रूप से भी तैयार रहना होगा। व्यापार में गिरावट, निवेश में संकोच और कच्चे माल की कीमतों में उथल-पुथल जैसे झटकों के लिए तैयार रहना जरूरी है।

मज़बूत साझेदारियाँ, रणनीतिक निवेश और आंतरिक क्षमता का निर्माण – यही रास्ता है, जिससे कोई देश खुद को इन वैश्विक हलचलों के बीच खड़ा रख सकता है।

निष्कर्ष: ये नया वैश्विक यथार्थ है

ये कोई अस्थायी संकट नहीं है। यह एक नई वैश्विक व्यवस्था की शुरुआत है। ऐसे में यह मानना कि पुराने नियम और सुरक्षा कवच अब भी काम करेंगे, एक भ्रम होगा। जो देश अभी से सतर्क और संगठित हैं, वही इस वैश्विक तूफान में टिक पाएंगे। बाकियों के लिए आने वाला समय और भी कठिन हो सकता है। मुझे ऐसा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि अमेरिका के भीतर ही लोगों में गहरा असंतोष उत्पन्न हो, जो या तो किसी सिविल वॉर (गृहयुद्ध) का रूप ले ले, या वहां मध्यावधि चुनाव की नौबत आ जाए, या फिर ट्रंप की पार्टी कोई और बड़ा फैसला ले ले – जो निश्चित रूप से जोखिम भरा और चौंकाने वाला हो सकता है।

मैं हमेशा से यह कहता आया हूं कि विश्व के किसी भी नेता, राजनेता, अर्थशास्त्री या किसी भी महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति को ऐसे संवेदनशील वक्तव्यों से बचना चाहिए। कोई भी बड़ा फैसला लेने से पहले यह तुलनात्मक अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है कि उस फैसले का प्रभाव सबसे पहले उनकी राजनीति पर, फिर उनकी जनता पर, और उसके बाद उनकी अर्थव्यवस्था तथा शेयर बाजार के मार्केट कैपिटलाइज़ेशन पर क्या असर डालेगा। हमने भारत में भी यह कई बार देखा है – सरकारें कभी-कभी 1000 से 2000 करोड़ रुपये के टैक्स लगाने की लालसा में 10,000 से 20,000 करोड़ रुपये के मार्केट कैपिटलाइज़ेशन को गंवा देती हैं। नुकसान आम जनता का होता है – सरकारों और नेताओं पर इसका सीधा असर नहीं पड़ता। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बैठे हुए उच्च पदों के लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे संवेदनशीलता, सहनशीलता, और विवेक का प्रदर्शन करें और हर कदम सोच-समझकर उठाएं। मुझे उम्मीद है कि आने वाले एक से डेढ़ महीने में इन परिस्थितियों में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे। यह भी संभव है कि ट्रंप सरकार को बड़ा रोलबैक करना पड़े। जब पूरा विश्व एक स्वर में जागेगा, तो कोई भी देश – चाहे वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो – दबाव में आए बिना नहीं रह पाएगा। और यही तो लोकतंत्र की असली खूबसूरती और ताकत है। धन्यवाद।

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री जयपुर, राजस्थान

बीकानेर : पूर्ण नहरबंदी 25 अप्रैल से संभव, आंशिक नहीं होगी

बीकानेर, (निसं)। इस साल आशिक नहरबंदी की औपचारिक घोषणा नहीं होगी। यद्यपि फरवरी से ही अघोषित आंशिक नहरबंदी जारी है। सूत्रों के मुताबिक इस साल सीधे पूर्ण नहरबंदी होगी जो 25 या 26 अप्रैल से संभावित है। हालांकि इसकी तारीख भी पंजाब ने अभी तक घोषित नहीं की है। दो दशक बाद पहली बार नहरबंदी की तिथि को लेकर पिछले एक महीने से असमंजस की स्थिति है।

पंजाब नहरबंदी की तारीख तय नहीं कर रहा। राजस्थान के अभियंता अपने अनुमान से अलग-अलग तारीख प्रशासन को बता रहे हैं। 26 मार्च से 25 अप्रैल तक आंशिक नहर बंदी होनी थी, लेकिन पंजाब ने इसकी अधिकृत तिथि घोषित नहीं की। हालात इतने विकट हो गए कि अब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को भी समीक्षा के लिए नहरी क्षेत्र का दौरा करना पड़ रहा है। वे आठ और नौ अप्रैल को पंजाब से लेकर राजस्थान तक इंदिरा गांधी नहर का दौरा कर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे। मुख्यमंत्री का कार्यक्रम जारी हो गया है। माना जा रहा है कि 8 अप्रैल को मुख्यमंत्री सुबह जयपुर से बठिंडा जाएंगे। यहां से वे हरिके बैराज का निरीक्षण करेंगे। हरिके बैराज वो केंद्र है जहां से पंजाब राजस्थान को सिंचाई और पीना का पानी छोड़ता है। हरिके बैराज से वे

> ■ **आंशिक नहरबंदी घोषित नहीं हो रही और इस दौरान जितना पानी मिलना चाहिए उतना मिल भी नहीं रहा है, पिछले 15 दिन से कटौती चल रही है**

लाखों वाली हेड जाएंगे और वहां इंदिरा गांधी नहर में होने वाले मरम्मत कार्यों को देखेंगे। 9 अप्रैल को घग्गर नदी क्षेत्र का निरीक्षण करेंगे। बाद में हनुमानगढ़ के सर्किट हाउस में प्रशासन और नहरी तंत्र से जुड़े अधिकारियों के साथ नहरबंदी के हालातों की समीक्षा करेंगे। 2006 के बाद वे पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री होंगे जो इंदिरा गांधी नहर का निरीक्षण करेंगे। राजस्थान के अधिकारियों ने 26 मार्च के बाद 5 अप्रैल की तिथि को आंशिक बंदी के लिए अनुमानित तिथि दी थी। 5 अप्रैल को भी पंजाब ने चुप्पी साध ली। अब कहा जा रहा है कि आंशिक नहर बंदी की घोषणा नहीं की जाएगी हालांकि फरवरी से ही अघोषित आंशिक नहर बंदी चल रही है। पानी की कमी को ही कारण माना जा रहा है। आंशिक नहरबंदी में तय पानी दिया जाता है। आंशिक नहरबंदी घोषित नहीं हो रही और इस दौरान जितना पानी मिलना चाहिए उतना मिल भी नहीं रहा। पिछले 15 दिन से कटौती चल रही है। सूत्र बताते हैं कि पंजाब के एक अधिकारी यह कहकर राजस्थान को पूरा पानी नहीं दे रहे कि राजस्थान ने अपने हिस्से का पूरा पानी उपयोग कर लिया है। इसी वजह से पिछले दो सप्ताह से राजस्थान को पूरा पानी नहीं मिल रहा। राजस्थान रोज 3000 क्यूसेक पानी मांग रहा है जबकि उसकी जगह 2000 से ढाई हजार के बीच पानी मिल रहा है। इसमें इंदिरा गांधी नहर और गंगानगर की बाकी दो सिंचाई परियोजनाओं का पानी भी शामिल है, जबकि मिलने वाला सिर्फ पेयजल का पानी है।

अगले तीन दिन तेज गर्मी की संभावना

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। मौसम विभाग ने अलर्ट जारी करते हुए तापमान में बढ़ोतरी की आशंका जताते हुए लोगों को सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी है। सामान्य से अधिक चल रहा पारा रविवार को ही 43.3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका था। पारे में अचानक हुई बढ़ोतरी ने लू के हालात पैदा कर दिए हैं। सोमवार को सुबह आठ बजे भी पारा तीस डिग्री सेल्सियस से ऊपर था। मंगलवार को भी पारा बढ़ सकता है। बुधवार को तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की कमी आ सकती है। हालांकि ये भी सामान्य से अधिक

> ■ **तीन दिन तक लगातार लू रहने की आशंका से लोगों को तेज धूप में सावधानी बरतने की सलाह दी, मंगलवार को पारा बढ़ सकता है, बुधवार को तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की कमी आ सकती है**

होगा। तीन दिन तक लगातार लू रहने की आशंका में लोगों को तेज धूप में सावधानी बरतने की सलाह दी गई है। अब तक बीकानेर में गर्मी से बचने के लिए कोई खास उपाय नहीं किए गए हैं। पिछले साल नगर निगम ने कोटगेट के पास रेलवे क्रासिंग पर टैंट लगा दिए थे लेकिन इस बार अब तक इस दिशा में निगम की ओर से पहल नहीं हुई है। हालांकि तब ये काम मई में हुआ था, लेकिन इस बार मई जितना पारा अप्रैल में ही पड़ रहा है।

राशिफल मंगलवार 8 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलेवार, विक्रम संवत 2082, आश्लेष नक्षत्र प्रातः 7:55 तक, शूल योग सायं 6:10 तक, वणिज करण प्रातः 8:37 तक, चन्द्रमा प्रातः 7:55 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से प्रातः 7:55 तक है। रवियोग प्रातः 7:55 बना रहेगा। कुमार योग प्रातः 7:55 से रात्रि 9:13 तक है। भद्रा प्रातः 8:37 से रात्रि 9:13 तक है। आज कामदा एकादशी, लक्ष्मीकांत दोलोत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:22 से 10:55 तक, लाभ-अमृत 10:55 से रात्रि 2:02 तक, शुभ 3:36 से 5:10 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:44

मेष

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नवीन कारोबारी अनुबंध प्राप्त होंगे।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु

व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक पारिवारिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

राज्य आदेशों की अवहेलना करने पर संयुक्त निदेशक उद्यान भरतपुर एपीओ

- अधिकारी किसानों को अधिक से अधिक पहुंचाये लाभ : डॉ.किरोड़ी लाल मीणा
- सवाईमाधोपुर की पूर्व विधायक यास्मिन अबरार को नियमों की अवहेलना कर एकल आदेश से पॉली हाऊस की स्वीकृति जारी करने की मुख्यालय द्वारा जांच कर रिपोर्ट सबमिट करने के निर्देश

जयपुर। कृषि एवं उद्यानिकी मंत्री डॉ किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि विभागीय अधिकारी बजट घोषणाओं को प्लानिंग के साथ तय समयावधि में शत-प्रतिशत पूरा करें। बजट घोषणाओं के क्रियान्वन में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नही की जायेगी। भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टोलरेन्स अपनायें जाने के निर्देश प्रदान किये।

डॉ मीणा सोमवार को पंत कृषि भवन के सभा कक्ष में विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन एवं संचालन के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि घोषणाओं की निरंतर समीक्षा की जा रही है, ऐसे में अधिकारीगण किसी भी स्तर पर कोई कमी नही छोड़े। मंत्री ने बैठक में 2024-25 की बजट घोषणाओं की क्रियान्विति की समीक्षा की। बैठक में उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किये जा रहे क्रॉप कटिंग एवं पोस्टहारवेस्टिंग के बारे में विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत 15 मार्च तक राज्य सरकार द्वारा 3 हजार 415 करोड़ रूपये के बीमा क्लेमों का भुगतान किया जा चुका है। सॉयल हेल्थ कार्ड योजना की समीक्षा करते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा कृषकों को सॉयल हेल्थ कार्ड बनवाने के लिए जागरूक किया जाये, जिससे कृषक सॉयल हेल्थ कार्ड के अनुसार अपने खेत की मिट्टी में हो रहे पोषक तत्वों की कमी की जानकारी प्राप्त कर उन्हें दूर कर सके।

कृषि मंत्री ने मधुमक्खी पालन बॉक्सेज के अनुदान भुगतान के सम्बन्ध में मिली शिकायतों के सम्बन्ध में राज्य आदेशों की अवहेलना करने पर संयुक्त निदेशक उद्यान भरतपुर योगेश कुमार शर्मा को एपीओ करके भरतपुर से बीकानेर लगाये जाने के निर्देश दिये। 2010-11 में अमानक पाये गये उर्वरकों के नमूनों के सम्बन्ध में सक्षम न्यायालय में वाद दायर नहीं करने पर सम्बन्धित निरीक्षकों के खिलाफ विभागीय अनुशासनात्मक कार्यवाही किये जाने के निर्देश प्रदान किये।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत श्रीगंगानगर व बूंदी में बीमित किसानों के साथ धोखाधड़ी करने के कारण सम्बन्धित बीमा कम्पनी क्षेमा जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी के खिलाफ नियमानुसार कार्यवाही करने के निर्देश प्रदान किये। अनुबंध निरस्त करने के निर्देश प्रदान किये। सवाईमाधोपुर में पूर्व विधायक यास्मिन अबरार को नियमों की अवहेलना कर एकल आदेश से पॉली हाऊस की स्वीकृति जारी करने के कारण इसकी मुख्यालय द्वारा जांच कर रिपोर्ट सबमिट करने के निर्देश प्रदान किये। सवाईमाधोपुर व जालौर में सूक्ष्म सिंचाई योजनाओं में मिली अनियमितताओं की राज्य स्तरीय कमेटी द्वारा जांच कराने के लिए कहा।

उन्होंने अनुदानित यूरिया का गैर कृषि कार्यो में उपयोग न हो, इसके लिए विशेष गुण नियंत्रण अभियान चलाने के निर्देश प्रदान किये। ऐसी कम्पनियां जिनकी कभी सेम्पलिंग नही हुई है, उनकी प्राथमिकता से सेम्पलिंग कर उच्च गुणवत्ता युक्त आदान की आपूर्ति सुनिश्चित करें। विभागीय गतिविधियों का प्रचार-प्रसार चौपाल, यू-ट्यूब चैनल, सोशल मीडिया द्वारा ज्यादा से ज्यादा करवाया जाये। सॉयल हेल्थ कार्ड के अप्रेल-मई में ज्यादा से ज्यादा सेम्पल लेकर जून तक रिपोर्ट दिये जाने के निर्देश प्रदान किये। केमबायोटेक रिको सरनाडूंगर, स्पेक्ट्रम एग्री साइन्स रिंगस, क्रूस्टा क्रॉप साइन्स प्रा.लि. गुजरात, जी.एस. क्रॉप साइन्स गुरूग्राम, इण्डिया बायोटेक एण्ड केमिकल श्रीगंगानगर, कुबेर फर्टिकेम रिंगस और मोन्टेक्स एग्रीटेक सोल्यूशन प्रा.लि. श्रीगंगानगर कम्पनियों के बायोफर्टिलाइजर, बायोएजेन्ट और माइक्रोन्यूट्रेन्ट जो किसानों को राज्य सरकार द्वारा नि:शुल्क वितरित किये जाते है, के अमानक नमूने पाये जाने व उनमें 0 प्रतिशत कन्टेन्ट रिपोर्ट होने के बाद भी इनके खिलाफ कार्यवाही नही करने के कारण तत्कालीन संयुक्त निदेशक कृषि (गुण नियंत्रण), कृषि आयुक्तालय, जयपुर गजानंद यादव को निलम्बित किये जाने के निर्देश दिये।

अधिकारियों को परिवेदनाओं के शीघ्र निस्तारण के निर्देश

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को उनके निवास पर जनसुनवाई की।

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर जनसुनवाई की। उन्होंने उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति की समस्या को सुना तथा अधिकारियों को इन समस्याओं के निस्तारण के निर्देश दिए।

इस दौरान उन्होंने जयपुर विकास प्राधिकरण, नगर निगम, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी, सार्वजनिक निर्माण एवं चिकित्सा सहित विभिन्न विभागों से संबंधित समस्याएं सुनी तथा कई समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण कर परिवादी को राहत दी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि परिवादियों की समस्याओं के निस्तारण के लिए मौके पर जाएं जिससे जमीनी स्थिति का पता चल सके एवं समस्या का समाधान शीघ्र किया जा सके। जनसुनवाई में जहां एक ओर मुख्यमंत्री ने आर्थिक तंगी से जूझ रहे जितेन्द्र के नि:शुल्क इलाज तथा पूर्ण देखभाल के लिए अस्पताल प्रशासन को निर्देशित किया, वहीं दूसरी ओर दिव्यांग स्ट्रीट वेंडर्स को उचित जगह उपलब्ध करवाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए जिससे उन्हें राहत मिल सके। जनसुनवाई में मुख्यमंत्री महिला, दिव्यांग, बुजुर्ग सहित सभी वर्गों के लोगों की फरियादों को सुना। उन्होंने संवेदनशीलता दिखाते हुए अधिकारियों को इन वर्गों की समस्याओं के तत्काल निस्तारण कर मुख्यमंत्री कार्यालय में रिपोर्ट करने के निर्देश दिए। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों द्वारा आगामी समय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के पोस्टर विमोचन किए तथा सफल आयोजन की कामना की। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि और आमजन उपस्थित रहे।

अर्चना शर्मा से जुड़ा विवादित ऑडियो प्रसारित नहीं करने के आदेश

जयपुर। अतिरिक्त जिला न्यायालय क्रम-1 महानगर द्वितीय ने कांग्रेस नेता अर्चना शर्मा के पूर्व सहायक महावीर उपाध्याय को आदेश दिए हैं कि वह अर्चना शर्मा की सहमति के बिना विधि विरुद्ध तौर पर रिकॉर्डिंग कर अपमानजनक तथ्य को किसी भी माध्यम से प्रसारित नहीं करे। अदालत ने यह आदेश डॉ. अर्चना शर्मा के मानहानि परिवाद में दायर प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए। पीठासीन अधिकारी बीएल चंदेल ने अपने आदेश में कहा कि तीन बार चुनाव हारने का अर्थ यह नहीं है कि किसी व्यक्ति की मान प्रतिष्ठा नहीं हो। अदालत ने कहा कि मूल वाद में वादी ने दस करोड रुपए का हर्जाना चाहा है, लेकिन वास्तविक तौर पर यदि किसी का अपमान किया गया है तो यह उस प्रकार की क्षित है, जिसकी पूर्ति रुपए-पैसे से नहीं हो सकती। इसके साथ ही अदालत ने राजीव अरोडा सहित तीन अन्य के खिलाफ मांगा गया अनुतोष खारिज कर दिया है। दावे में अधिवक्ता एके जैन ने बताया कि प्रार्थिया मालवीय नगर से कांग्रेस प्रत्याशी थी और प्रदेश में 25 नवंबर 2023 को विधानसभा चुनाव होने थे। प्रतिवादी महावीर उपाध्याय, वादी का पूर्व में सहायक कार्यकर्ता था, लेकिन ढाई साल पहले उसे हटा दिया था। इसके चलते प्रतिवादी ने 22 नवंबर को एक कूटरचित ऑडियो सोशल मीडिया पर वायरल किया।

जयपुर बम कांड के दौरान जिंदा मिले बम को लेकर फैसला आज

जयपुर। जयपुर बम कांड मामलों की विशेष अदालत ने 13 मई, 2008 को शहर में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के बीच चांदपोल हनुमान मंदिर के पास जिंदा मिले बम के मामले में आरोपी शाहबाज हुसैन, मोहम्मद सैफ, सैफुर्रहमान और सरवर आजमी को मंगलवार को सजा सुनाएगी। अदालत ने चारों आरोपियों को भारतीय दंड संहिता, विस्फोटक अधिनियम और विधि विरूद्ध क्रियाकलाप निवारण अधिनियम की विभिन्न धाराओं में 4 अप्रैल को दोषसिद्ध कर चुकी है। गत सुनवाई को अदालत ने पूर्व में जमानत पर रिहा हुए शाहबाज हुसैन और सरवर आजमी को न्यायिक अभिरक्षा में ले लिया था।

अदालत ने चारों आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 120बी, 121ए, 307 और 153ए के साथ ही विस्फोटक अधिनियम की धारा 4, 5 और 6 सहित यूएपीए एक्ट की धारा 13 और 18 में दोषी माना है। इन धाराओं में अधिकतम आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है। मामले में अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक सागर तिवाडी ने बताया कि मामले में 112 गवाहों के बयान दर्ज कराते हुए करीब 1200 दस्तावेजों को पेश किया गया है। वहीं अन्य गवाहों के साथ पूर्व एडीजी एके जैन, मीडियाकर्मी प्रशांत टंडन और साइकिल कसने वाले दिनेश महावर को गवाह बनाया है। जबकि बचाव पक्ष के अधिवक्ता मिनहाजुल हक ने कहा कि घटना के तथ्य मूल घटना के समान है और उस मामले में हाईकोर्ट उन्हें बरी कर चुका है। इसलिए उन्हें इस मामले में भी बरी किया जाए।

बम कांड के बाद पुलिस ने चारों आरोपियों के साथ ही एक अन्य को गिरफ्तार किया था।

खाटूश्यामजी में भव्य रूप से किए जाएं विकास कार्य : दिया कुमारी

जयपुर। सोमवार को पर्यटन भवन में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी अध्यक्षता में तथा पर्यटन शासन सचिव रवि जैन की उपस्थिति में पर्यटन भवन में सोमवार को समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में पर्यटन के विकास को लेकर कई महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्वदेश दर्शन 2.0 योजना के अंतर्गत सीकर में श्री खाटू श्याम जी मंदिर में विकास कार्य जल्द शुरू करवाये जाए। उन्होंने इस सम्बन्ध में एक बैठक श्री खाटू श्याम जी में करने की बात कही। उन्होंने निर्देश दिए कि धार्मिक आस्था के केंद्र श्री खाटू श्याम जी में भव्य रूप से विकास कार्य करवाये जाए। श्री खाटू श्याम जी मंदिर में विकास कार्य के लिए केंद्र सरकार की ओर से 87 करोड़ रुपये की स्वीकृति को राज्य में धार्मिक पर्यटन विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।साथ ही शेखावाटी की हवेलियों के संरक्षण, अल्बर्ट हॉल पर योजना अनुरूप नवीनीकरण के उत्कृष्ट कार्य करवाये जाने के भी निर्देश दिए।

देवनानी ने गोवा विधानसभा का सदन व भवन देखा

गोवा विधानसभा अध्यक्ष रमेश तावडकर ने गोवा विधानसभा पहुंचने पर राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का दुपट्टा पहनाकर, पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी सोमवार को प्रात: गोवा पहुंचे। देवनानी ने गोवा विधानसभा अध्यक्ष रमेश तावडकर से विधानसभा में मुलाकात की। तावडकर ने गोवा विधानसभा पहुंचने पर राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का दुपट्टा पहनाकर, पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन किया। दोनों विधानसभा अध्यक्षो ने विधानसभा सत्र अवधि, विधानसभा प्रकिया, कार्य संचालन और संसदीय परंपराओं के बारे में चर्चा की।

देवनानी ने गोवा विधानसभा का भवन और सदन का अवलोकन किया। गोवा के स्पीकर तावडकर ने देवनानी को गोवा विधानसभा के भवन और सदन के बारे में जानकारी दी। देवनानी ने गोवा विधानसभा स्पीकर रमेश वी तावडकर को राजस्थान विधानसभा में नवाचारों का 1 वर्ष पुस्तक की प्रति भेट की। देवनानी ने तावडकर को राजस्थान विधानसभा का कैलेंडर, स्मृति चिन्ह और डायरी भी भेंट की। देवनानी ने गोवा विधानसभा स्पीकर को बताया कि राजस्थान विधानसभा में सर्व दलीय बैठक, पेपरलेस सदन, विधानसभा का डिजिटलकरण, गुलाबी शहर का नया गुलाबी सदन सहित अनेक नवाचार किए गए हैं। देवनानी ने कहा कि राजस्थान विधानसभा में डायरी का प्रकाशन भारतीय नव वर्ष के अनुसार किया गया है।

भाजपा नेता सीए राजेश मंगल को मातृशोक

वरिष्ठ भाजपा नेता और दिल्ली में भाजपा के प्रमुख पदाधिकारी सीए राजेश मंगल के पैतृक गांव पावटा पहुंचकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने शोक संवेदना जताई और दिवंगत पुण्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

जयपुर। वरिष्ठ भाजपा नेता और दिल्ली में भाजपा के प्रमुख पदाधिकारी सीए राजेश मंगल की माताजी नर्बदा देवी का निधन हो गया। उनके पैतृक गांव पावटा पहुंचकर केन्द्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी, मंत्री विजय सिंह चौधरी, सांसद राव राजेन्द्र सिंह, विधायक कुलदीप धनकड़, देवी सिंह शेखावत, वरिष्ठ नेता मुकेश गोयल, बनवारी सिंघल, रामहेत यादव, राजेन्द्र शेखावत, पंकज गुप्ता, तेज सिंह चौहान, समेत ने शोक संवेदना जताई और दिवंगत पुण्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा, बी.एल. संतोष, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला और राज्यपाल ओम माथुर ने भी संवेदना भेजकर मानसिक श्रद्धांजलि दी है। गौरतलब है कि राजेश मंगल दिल्ली में भाजपा के प्रमुख पदाधिकारी है, वहीं उनके भाई डॉ.के.के.मंगल प्रसिद्ध प्लास्टिक सर्जन और सवाई मानसिंह अस्पताल के पूर्व अतिरिक्त अधीक्षक है।

मुख्यमंत्री आज से हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों का करेंगे दौरा

- सरसों की एमएसपी पर खरीद का करेंगे शुभारम्भ

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा 8 एवं 9 अप्रेल को प्रदेश के हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिलों के दौरे पर रहेंगे। शर्मा इन जिलों में जल संसाधन एवं ऊर्जा विभाग सहित अन्य विभागों से संबंधित बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा करने के साथ ही सरसों की एमएसपी पर खरीद का शुभारंभ एवं किसानों से संवाद करेंगे।

मुख्यमंत्री 8 अप्रेल को हनुमानगढ़ पहुंचेंगे। वहां लखूवाली हेड, घग्घर डायवर्जन चैनल व घग्घर नदी का निरीक्षण करेंगे। मुख्यमंत्री ने वित्त एवं विनियोग विधेयक 2025-26 पर चर्चा के दौरान घग्घर नदी के बहाव क्षेत्र में 325 करोड़ रूपये की लागत से बाढ़ सुरक्षा की दृष्टि से कार्य करवाने की घोषणा की है। वे हनुमानगढ़ में भाखड़ा नहर क्षेत्र से संबंधित किसानों के साथ संवाद भी करेंगे।

मुख्यमंत्री 9 अप्रेल को श्रीगंगानगर जिले में नई धानमण्डी में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सरसों की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद का शुभारम्भ करेंगे एवं किसानों व व्यापारियों के साथ संवाद करेंगे। राज्य सरकार किसानों का जीवन स्तर बेहतर बनाने तथा उनकी फसलों का उचित मूल्य दिलाने के लिए कृतसंकल्पित है। सरकार द्वारा गेंहू की एमएसपी पर प्रति क्विंटल 150 रूपये का अतिरिक्त बोनस देने के निर्णय के साथ ही खरीफ सीजन 2024 में दलहन और तिलहन फसलों की 4 हजार 700 करोड़ रुपये से अधिक की खरीद की गई है। रबी सीजन 2025-26 के लिए सरसों और चने की खरीद के लिए भी रजिस्ट्रेशन शुरू हो चुका है।

मुख्यमंत्री श्रीगंगानगर में ही शिवपुर हेड का जायजा लेंगे। इसके पश्चात वे जिले के सूरतगढ़ पहुंचकर सुपर थर्मल पावर स्टेशन का निरीक्षण कर विद्युत उत्पादन कार्यों का जायजा लेंगे। इसके साथ ही अधिकारियों के साथ बैठक कर उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश भी देंगे।

इससे पहले मुख्यमंत्री 8 अप्रेल को पंजाब में हरिके हेड का निरीक्षण करने के साथ ही मल्लेवाला हेड, बल्लेवाला हेड, बीकानेर केनाल, फिरोजपुर फीडर एवं इंदिरा गांधी नहर का हवाई निरीक्षण करेंगे। इसके पश्चात वे हरियाणा में लोहगढ़ हेड का भी निरीक्षण करेंगे।

उल्लेखनीय है कि राज्य बजट 2024-25 में इंदिरा गांधी मुख्य नहर के बेहतर संचालन हेतु 23 करोड़ रूपये की लागत से स्काडा सिस्टम विकसित करने तथा फिरोजपुर फीडर के अन्तर्गत प्रदेश के हिस्से का पानी उपलब्ध कराने के लिए 200 करोड़ रूपये की लागत से कार्य करवाने की घोषणा की गई थी।

डॉ.श्रद्धा आर्या ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की

जयपुर। भाजपा की रीति और नीति से प्रभावित होकर भाजपा परिवार से जुड़ने की परम्परा सतत रूप से जारी है। सोमवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने राजस्थान प्रदेश कांग्रेस महिला कमेटी की महामंत्री एवं समाज कल्याणा बोर्ड की पूर्व सदस्य डॉ श्रद्धा आर्या और उनकी टीम को पार्टी का दुपट्टा पहनाकर पार्टी की सदस्यता ग्रहण करवाई। भाजपा प्रदेश मंत्री पिंकेश पोरवाल ने बताया कि डॉ श्रद्धा आर्या के साथ अन्य कई लोगों ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की।

दिया कुमारी ने विद्याधर नगर में विकास कार्यों का शिलान्यास व लोकार्पण किया

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी आज अपने विधानसभा क्षेत्र विद्याधर नगर के दौरे पर रही, जहाँ उन्होने विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 27 एवं वार्ड 35 में आमजन को बेहतर यातायात, सुगम आवागमन एवं जलभराव की समस्या से निजात दिलाने के लिए नगर निगम, जेडीए, पीडब्ल्यूडी,और विधायक कोष के माध्यम से 8.87 करोड़ की लागत से सीसी सड़क निर्माण, डामरीकरण, फूटपाथ व इंटरलॉकिंग टाईल्स व हाईमास्क लाइट लगाने और सामुदायिक केंद्र के विकास आदि के विभिन्न विकास कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया।

उन्होने कहा विद्याधर नगर विधानसभा का समग्र विकास मेरी प्राथमिकता है, और क्षेत्र में यातायात, जलभराव, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे का विकास कर लोगों के जीवन को बेहतर बनाना मेरा लक्ष्य है। नगर निगम, जेडीए, पीडब्ल्यूडी और विधायक कोष से संबंधित लगभग साढे आठ करोड़ से अधिक के इन कार्यों मे सीसी सड़क निर्माण, सामुदायिक केन्द्र विकास कार्यों के से इलाके में यातायात सुगम होगा, समय की बचत होगी।

एम-सेण्ड इकाइयों की स्थापना के लिए 24 प्लॉटों की नीलामी

- जिला कलक्टरों को पत्र लिखकर कार्ययोजना बनाने के निर्देश

जयपुर। प्रमुख शासन सचिव खान, भूविज्ञान एवं पेट्रोलियम टी. रविकान्त ने कहा है कि प्रदेश में बजरी के विकल्प के रुप में एम-सेण्ड की उपलब्धता बढ़ाने के लिए 8 मिलियन टन सालाना उत्पादन को प्रतिवर्ष 20 प्रतिशत बढाते हुए 2028-29 तक 30 मिलियन टन तक ले जाने का लक्ष्य रख कर विभाग आगे बढ़ रहा है। प्रदेश में हाल ही समाप्त हुए वित्तीय वर्ष में पहलीबार एम-सेण्ड यूनिट की स्थापना के लिए 24 प्लॉटों की सफल नीलामी की गई है। टी. रविकान्त ने जिला कलक्टरों को पत्र लिखकर एम-सेण्ड के उत्पादन के लिए कच्चे माल की उपलब्धता और एम-सेण्ड इकाइयों की स्थापना के लिए कार्ययोजना तैयार करवाने को कहा है।

प्रमुख सचिव रविकान्त ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने 4 दिसंबर, 24 को नई एम-सेण्ड नीति जारी कर बजरी के विकल्प के रुप में एम-सेण्ड को बढ़ावा देने पर जोर दिया। भजनलाल शर्मा जो खान मंत्री भी है ने पिछले दिनों खान विभाग की समीक्षा बैठक में भी एम-सेण्ड को बढ़ावा देने की आवश्यकता प्रतिपादित की है। टी. रविकान्त ने बताया कि नई नीति में एम-सेण्ड इकाइयों को उद्योग का दर्जा देने के साथ ही राजस्थान निवेष प्रोत्साहन योजना में विशेष रियायतें दी गई है। नई एम-सेण्ड नीति में आम नागरिकों को बजरी के विकल्प के रुप में सस्ती एवं सहज उपलब्धता, नदियों से बजरी की आपूर्ति पर निर्भरता कम करते हुए पारिस्थितिकीय तंत्र में सुधार, खनन क्षेत्र के आवरबर्डन का बेहतर उपयोग, भवनों और कंक्रिट ढांचे के मलबे को रिसाईकलिंग के साथ ही एम-सेण्ड उद्योग को बढ़ावा व रोजगार के अवसर विकसित करना है। नई नीति में एम-सेण्ड इकाई की स्थापना की पात्रता में रियायत देते हुए 3 साल के अनुभव व 3 करोड़ के टर्न ऑवर की बाध्यता समाप्त कर दी गई है। वहीं कई तरह की रियायतें भी दी है।

सरकार के साथ आमजन और उद्योगपतियों का साथ होगा, तो समग्र विकास होगा : दिया कुमारी

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सोमवार को इंडस्ट्रियल एरिया मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन झोटवाड़ा के होली मिलन सम्मान समारोह में शामिल हुईं।

जयपुर। उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज झोटवाड़ा इंडस्ट्रियल एरिया मैन्युफैक्चरिंग एसोसिएशन के सम्मान समारोह में शिरकत की। यह सम्मान समारोह होली मिलन और बजट में बेहतरीन घोषणाओं के लिए अभिवादन स्वरूप रखा गया था।

इस दौरान उद्यमियों और व्यापारियों ने अपनी तमाम मांगे उपमुख्यमंत्री के समक्ष रखी, साथ ही बजट में उद्योगों के लिए की गई घोषणाओं पर धन्यवाद भी ज्ञापित किया। खास तौर पर वेयरहाउस को उद्योगों का दर्जा मिलने को लेकर व्यापारी काफी खुश नजर आए। साथ ही साथ विद्याधर नगर विधानसभा क्षेत्र के इलाकों में पानी भरने की समस्या को लेकर ड्रेनेज सिस्टम को सुधारने के प्रयासों के लिए सभी ने उपमुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया।

इस दौरान उपमुख्यमंत्री और व्यापारियों के बीच एक सौहार्दपूर्ण संवाद भी हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि 2014 के बाद जो निर्णय लिए गए हैं वह निर्णय लेने में पिछली सरकारें नाकामयाब रही और हिम्मत नहीं दिखा पाई। चाहे वह वक्रफ़ बोर्ड का मामला हो, राम मंदिर का मामला हो, 370 का मामला हो, महिला आरक्षण का मामला हो, या फिर अन्य और मामले हो।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि व्यापारी और इंडस्ट्री के लिए सरकार ने काम किया है। राइजिंग राजस्थान हो या फिर अन्य कार्यक्रम, व्यापारी और उद्यिमयों के साथ मीटिंग्स की गई हैं। टैक्स स्लेब में भी परिवर्तन हुआ है। वेयरहाउसिंग को इंडस्ट्री का दर्जा मिला है। पुराने वेयर हाउस का भी नियमन किया जाएगा. इंडस्ट्री में अभी भी कोई समस्या है तो मंत्री भी आपके नजदीकी विधानसभा क्षेत्र के हैं और मैं यहां से विधायक हूं। आप साथ देंगे तो हर समस्या का समाधान होगा।

उन्होने कहा कि हमने आज से काम शुरू कर दिया है।अब हर सप्ताह दो वार्डो में शिलान्यास और उद्घाटन होंगे। विकसित राजस्थान के सपने को साकार करने के लिए आप सबका साथ जरूरी है। सफाई पर भी उपमुख्यमंत्री ने इस दौरान जोर दिया। साथ ही साथ सड़कों,ड्रेनेज सिस्टम, सीवरेज के काम का आश्वासन पाकर स्थानीय व्यापारी काफ़ी ख़ुश नज़र आए।

इस दौरान उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आप लोगों ने सबसे ज्यादा वोट देकर मुझे जिताया, इसलिए मेरी जिम्मेदारी बढ़ गई है। मुख्यमंत्री भी हर विधानसभा क्षेत्र की चिंता करते हैं कि वहां पर उपयुक्त जगह बजट का पैसा लगे। आप सब और हम मिलकर प्रयास करेंगे तो सफलता मिलेगी।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला : सेवन वंडर पार्क को एक माह में हटाने के आदेश

सरकार और जिला प्रशासन को अनुपालना रिपोर्ट एक माह में पेश करने के आदेश दिये

अजमेर, (कासं)। अजमेर के आनासागर भराव क्षेत्र और ग्रीन बेल्ट क्षेत्र में हुए अवैध निर्माण को लेकर सोमवार को सुपीम कोर्ट में सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने अवैध निर्माणों पर सख्त रुख अपनाते हुए सरकार और जिला प्रशासन को एक माह में सेवन वंडर पार्क को हटाने और इसकी अनुपालन रिपोर्ट एक माह में पेश करने के आदेश दिए है। मामले में अब अगली सुनवाई 16 मई को होगी। कोर्ट ने जिला प्रशासन द्वारा तबीजी और फॉयसागर वेटलैंड्स को लेकर पेश किए गए हलफनामे पर भी विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस उज्ज्वल भुयान की बेंच ने इस मामले में सुनवाई की।

राज्य सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पैरवी की, जबकि याचिकाकर्ता अशोक मलिक ने खुद अपना पक्ष रखा। कोर्ट ने सरकार को स्पष्ट निर्देश दिए कि सेवन वंडर्स पार्क को हटाने का कार्य 30 दिनों में पूरा किया जाए। सुनवाई के दौरान सरकार ने बताया कि इस पार्क को हटाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी गई है और 15 से 30 दिनों में यह कार्य पूरा कर लिया जाएगा। पिछली सुनवाई में सरकार ने ध्वस्तीकरण और स्थानांतरण के लिए 6 महीने का समय मांगा था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अब इसे एक माह के भीतर पूरा करने का आदेश दिया है।

- **सुनवाई के दौरान सरकार ने बताया कि इस पार्क को हटाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी गई है और 15 से 30 दिन में यह कार्य पूरा कर लिया**

विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा :- कोर्ट ने सरकार से तबीजी और फॉयसागर ग्रीन क्षेत्र को लेकर विस्तृत रिपोर्ट पेश करने को कहा है। सरकार को इन वेटलैंड्स पर समुचित योजना तैयार कर अदालत के समक्ष पेश करनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया कि रिपोर्ट में नेशनल एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट और अन्य विशेषज्ञ संस्थाओं का विश्लेषण शामिल होना चाहिए। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल ने बताया कि नेशनल एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट और अन्य विशेषज्ञ संस्थाओं की रिपोर्ट अगले 15 दिनों में तैयार की जाएगी। सरकार ने पहले ही तबीजी और फॉयसगर वेटलैंड्स विकसित करने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस पर ठोस योजना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तैयार रिपोर्ट मांगी है।

झील परिधि में बने पाथवे पर भी उठे सवाल :- सुप्रीम कोर्ट ने आनासागर झील के किनारे बने पाथवे को लेकर भी सवाल उठाए। सॉलिसिटर जनरल ने कोर्ट में बताया कि यह पानी झील की परिधि पर बना हुआ है और यदि इसे हटा दिया गया तो झील की तलहटी और वैटलैंड क्षेत्र में अवैध अतिक्रमण की संभावना बढ़ सकती है। इस पर कोर्ट ने कहा कि जब तक वेटलैंड्स की स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट नहीं मिलती, तब तक इस मुद्दे पर कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा।

जिला प्रशासन ने पेश किया हलफनामा :- गौरतलब है कि जिला प्रशासन ने इस मामले में 31 पेज का अतिरिक हलफनामा पेश किया था। इसके जवाब में याचिकाकर्ता अशोक मलिक ने 38 पेज का काउंटर हलफनामा सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया। 17 मार्च को हुई सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने फूडकोर्ट को ध्वस्त करने और दुगने क्षेत्र में वेटलैंड विकसित करने की योजना पेश करने का निर्देश दिया था। अब सरकार को विस्तृत रिपोर्ट 16 मई को पेश करने हैं।

खान विभाग के विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत

हनुमानगढ़, (निसं)। खान विभाग के विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत होने का मामला सामने आया है। फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे।

जानकारी के अनुसार विजिलेंस ऑफिसर मुकेश मंगल टीम के साथ धन्नासर के आसपास अवैध खनन की जानकारी जुटाने पहुंचे थे। विजिलेंस ऑफिसर की हार्ट अटैक से मौत हो गई। वे धन्नासर कस्बे के एक होटल में ठहरे हुए थे। सुबह सीने में तेज दर्द महसूस होने पर उन्होंने साथी स्टाफ को फोन कर सूचना दी। जब स्टाफ होटल पहुंचा तो वे बेड पर बेहोश पड़े थे। उन्हें रावतसर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

रावतसर थाने के एएसआई शीशपाल ने बताया कि विभाग में विजिलेंस ऑफिसर के पद पर कार्यरत मृतक के भतीजे बाड़ी धौलपुर निवासी ललित मंगल ने मामला दर्ज कराया है। रिपोर्ट में बताया कि उसके चाचा मुकेश मंगल (59) बीकानेर खान विभाग में विजिलेंस ऑफिसर के पद पर कार्यरत थे। उनके पास हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिले की जांच का जिम्मा था। वे फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे। वे धन्नासर कस्बे के एक होटल में ठहरे हुए थे। सोमवार सुबह करीब 7:10 बजे उन्हें सीने में तेज दर्द महसूस हुआ। उन्होंने तुरंत अपने साथी स्टाफ को फोन कर सूचना दी। जब स्टाफ होटल पहुंचा तो वे बेड पर बेहोश पड़े थे। उन्हें रावतसर के सरकारी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने हार्ट अटैक से मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच एएसआई शीशपाल को सौंपी गई है। जानकारी के अनुसार मुकेश मंगल ने टीम के साथ पांच दिन से धन्नासर में कैंप किया हुआ था। वे आसपास के इलाके में अवैध खनन से संबंधित जानकारी जुटा रहे थे। इलाके में अवैध खनन की शिकायत के बाद टीम मौका निरीक्षण करने पहुंची थी। मुकेश मंगल धौलपुर के बाड़ी के रहने वाले थे और वर्तमान में खान विभाग बीकानेर में पोस्टेड थे। उनका इसी साल 30 नवंबर को रिटायरमेंट होने वाला था। ललित मंगल ने बताया कि मृतक दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा तलब बेंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। वहीं, दूसरा बेटा रिशभ अक्षय पात्र जयपुर में कार्य करता है। पत्नी संगीता हाउस वाइफ है।

- **फील्ड जांच के लिए हनुमानगढ़ आए थे, रिटायरमेंट में सात महीने बचे थे**

जिम ट्रेनर ने युवती से दुष्कर्म किया

बीकानेर, (निसं)। एक फिटनेस जिम में युवती के अश्लील फोटो और वीडियो बनाकर उसके साथ बार-बार दुष्कर्म करने और उसे ब्लैकमेल कर 23.60 लाख रुपए हड़पने का मामला सामने आया है। पुलिस जिम ट्रेनर और उसके दोस्त के खिलाफ जांच कर रही है।

एक युवती जो कि फिटनेस सेंटर जाया करती करती थी। आरोप है कि जिम के ट्रेनर रणवीरसिंह और उसके दोस्त लक्की उर्फ लोकेश ने टॉयलेट में युवती की अश्लील फोटो और क्लिप बना ली। सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देकर ब्लेकमैल करने लगे और रणवीर ने युवती का बार-बार देह शोषण किया।

युवती को डरा-धमकाकर उसे 23.60 लाख रुपए भी हड़प लिए। लक्की के इस काम में रणवीर का सहयोग करता रहा। रणवीर ने युवती को ब्लेकमैल कर हड़पे रुपयों से कार भी खरीद ली। पुलिस ने मामला दर्ज किया है जिसकी जांच एसएचओ सुरेन्द्र पचार कर रहे हैं।

- **युवती को ब्लैकमेल कर 23.60 लाख हड़पे, मामला दर्ज**

पीड़िता की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि साल भर पहले वह जिम जाती थी। जहां रणवीर और उसका दोस्त लक्की उस पर बुरी नजर रखते थे। रणवीर एक्ससाइज ट्रेनिंग के नाम पर उसके शरीर से छेड़छाड़ करता था। दोनों आरोपियों ने जिम के टॉयलेट में अपने मोबाइल सेट कर उसके अश्लील फोटो लिए और वीडियो बना लिया। उसके बाद वायरल करने की धमकी देकर ब्लेकमैल करने लगे। रणवीर उसे एरोबिक्स हॉल में ले जाकर दुष्कर्म करता और लक्की बाहर निगरानी करता।

अश्लील वीडियो बनाता था। दोनों धमकाकर रुपए मांगने लगे। डर के कारण वह घर में पिता और भाई के रुपए चोरी कर दोनों आरोपियों को देने लगी। उससे 23.60 लाख रुपए हड़प लिए। करीब 2.50 लाख रुपए ऑनलाइन दिए। रणवीर ने 26 नवंबर, 2024 को दो लाख रुपए लिए। आखिरकार परेशान होकर पीड़िता ने अपने परिजनों को बताया और पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज करवाया।

डिग्गी में गिरने से दो महिलाओं की मौत

बीकानेर, (निसं)। खेतों में बनी डिग्गियां मौत का कारण बनती जा रही है। दो महिलाओं की मौत पिछले 24 घंटे में हो चुकी है। दोनों पैर फिसलने से डिग्गी में गिरी थी। पुलिस ने दोनों की मर्ग दर्ज कर पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंपा।

श्रीडूंगरगढ़ के रहने वाले राकेश कुमार मेघवाल ने पुलिस में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में बताया कि श्रीडूगरगढ़ के लोडेरा गांव की रोही में उसकी पत्नी मनोज कुमारी (26) की डिग्गी में डूबने से मौत हो गई। राकेश का कहना है कि खेत में काश्त करते समय पत्नी डिग्गी का बूस्टर चालू करने गई थी। इस दौरान पैर फिसलने से उसकी मौत हो गई। एएसआई राजकुमार को जांच सौंपी गई है। उधर पूगल में भी एक महिला की डिग्गी में गिरने से मौत हो गई। चार केडब्लयूएम कुम्हारवाला निवासी जसवंत सिंह ने पुलिस को बताया कि उसकी बहन हउवा कुमारी डिग्गी के पास खड़ी थी। तभी अचानक उसका पैर फिसल गया और वो डिग्गी में गिर गई। इससे उसकी मौत हो गई। उसका शव पोस्टमॉर्टम के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया गयौ। इस मामले में भी पुलिस ने मर्ग दर्ज की है। बज्जू थाना क्षेत्र में एक युवक की बाइक से गिरने से हो गई। जीतू सिंह पुत्र आशु सिंह पांच अप्रैल को रात एक बजे बाइक पर जा रहा था। रास्ते में बाइक से गिरने पर घायल हो गया। उसे तुरंत पीबीएम हॉस्पिटल लाया गया। इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

डोडा-चूरा तस्कर को तीन साल का कठोर कारावास

भीलवाड़ा, (निसं)। विशिष्ट न्यायाधीश (एनडीपीएस प्रकरण) जगदीशप्रसाद शर्मा ने अफीम डोडा-चूरा तस्करी के एक मामले में तस्कर को तीन साल के कठोर कारावास और 30 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया गया।

- **30 हजार रुपये के जुर्माने से भी दंडित किया**

प्रकरण के अनुसार, बीगोद थाने के तत्कालीन प्रभारी महावीर प्रसाद मीणा को 28 सितंबर 2017 को मुखबिर से सूचना मिली थी कि अजमेर में पंजीकृत नंबर की एक पिकअप में अफीम डोडा-चूरा परिवहन कर लाया जा रहा है। सूचना पर थाना प्रभारी मीणा ने त्रिवेणी चौराहे पर नाकाबंदी की। सूचना के मुताबिक आई पिकअप को चालक भगा ले गया। पुलिस ने पीछा कर पिकअप को रुकवाया। चालक से पूछताछ की तो उसने खुद को अजमेर जिले के सावर थाने के गोपालपुरा का निवासी भैंरूलाल पुत्र सुवालाल मीणा होना बताया। तलाशी लेने पर पिकअप में 48 किलो डोडा-चूरा मिला, जिसे पिकअप सहित जब्त कर चालक को गिरफ्तार कर आरोपित के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। बाद में पुलिस ने चार्जशीट न्यायालय में पेश की। ट्रायल के दौरान अभियोजन पक्ष की ओर से पैरवी करते हुये रामस्वरुप गुर्जर ने न्यायालय में 7 गवाहों के बयान दर्ज करवाते हुये 69 दस्तावेज पेश कर दोष सिद्ध करवाया। न्यायालय ने फैसला सुनाते हुये आरोपित भैंरूलाल को तीन साल के कठोर कारावास और 30 हजार रुपये के जुर्माने से दंडित किया।

पुलिस ने डोडा-चूरा तस्करी के आरोपी को कोर्ट में पेश किया।

जालोर जिला कारागृह में दो बंदी भिड़े, एक घायल

जालोर, (कासं)। जालोर जिला कारागृह में गत रविवार को किसी बात को लेकर दो बंदी आपस में भिड गये। दोनों बंदियों के बीच मारपीट में एक बंदी घायल हो गया। मारपीट की घटना के बाद घायल बंदी के परिजनों ने जेल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए उसे जान का खतरा बताया।

जालोर जिला कारागृह में अव्यवस्थाओं के चलते कई शिकायत आती रहती है। जिला कारागृह में लापरवही के चलते दो बंदी जेल में ही आपस में मारपीट करने लगे। मारपीट के बाद जेल में अफरा तफरी का माहौल बन गया। हत्या के मामले में बंद जबरसिंह निवासी शंखवाली पिछले करीब एक साल से जिला कारागृह जालोर में बंद है। वहीं आलासन निवासी सुरेश मेघवाल पिछले करीब सात माह से बंद है।

- **घटना के बाद घायल बंदी के परिजनों ने जेल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाया**

रविवार सुबह करीब ग्यारह साढे ग्यारह बजे किसी बात को लेकर जबरसिंह व सुरेश के बीच बहसबाजी होने लगी तथा बहसबाजी हाथापाई तक पहुंच गई। सुरेश के जबरसिंह को धक्का देने से उसके दीवार के टकराने से उसके चोट लग गई। वहीं जिला कारागृह में मारपीट के घटना की सूचना पर जेल प्रशासन ने पहुंचकर मामले को शांत करवाया।

जबरसिंह के मारपीट में चोट आने पर जेल प्रशासन ने इलाज के लिए जेल में नियुक्त डॉक्टरों की टीम को बुलाया, लेकिन घायल बंदी ने जेल में इलाज करने से मना करते हुए बाहर इलाज करवाने की मांग की। मारपीट की सूचना पर जबरसिंह के परिजन भी जिला कारागृह पहुंच गये तथा उन्होंने मारपीट की घटना पर रोष प्रकट करते हुए जेल प्रशासन की लापरवाही बताया। उन्होंने जबरसिंह को जान का खतरा बताया। सोमवार को सुरेश द्वारा जबरसिंह के खिलाफ मारपीट कर अनुसूचित जाति अनुसचित जन जाति धारा में मामला दर्ज करवाने की सूचना मिल रही है। बंदियों की मारपीट के बाद जेल में बंद भी सहमे गये।

जिला कारागृह जालोर की जेल उपाधीक्षक सम्पति बामणिया ने बताया कि सुरेश व जबरसिंह दोनों को अलग-अलग बैरक में ही रखा गया था। कल पानी को लेकर दोनों के बीच बहसबाजी हुई थी। मामले को शांत करवा दिया गया है तथा जबरसिंह की मांग पर उसका इलाज राजकीय चिकित्सालय जालोर में करवाया गया है।

अज्ञात कारणों के चलते युवक ने आत्महत्या की

टोंक। पुरानी टोंक थाना क्षेत्र के माणक चोक पांच मन्दिर क्षेत्र में निवास कर रहे विकास जांगिड पुत्र प्रेमचन्द्र जांगिड उम्र 35 साल ने अज्ञात कारणो के चलते सोमवार सुबह अपने कमरे में लटक रहे पंखे से लटकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू की। थाना पुलिस ने सूचना मिलने पर मौके पर पंहुचकर शव को अपने कब्जे में लेकर जिला अस्पताल सआदत चिकित्सालय टोंक की मोर्चरी में रखवाया। जहां मामले में अनुसंधान जारी है।

कुठानियां के देई माई मंदिर ट्रस्ट की सम्पत्ति के गबन का आरोप

खेतड़ी, (निसं)। कुठानियां देई माई ट्रस्ट के सचिव ने ट्रस्ट अध्यक्ष व उसके बेटे के खिलाफ जान से मारने की धमकी, ट्रस्ट के रूपए व चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों का गबन करने का मामला दर्ज करवाया है।

थानाधिकारी रामसिंह यादव ने बताया कि देई माई ट्रस्ट के सचिव मानोता जाटान निवासी लक्ष्मण सिंह राजपूत ने ट्रस्ट के अध्यक्ष सुमेरसिंह भाटी व उसके बेटे जिनेश कुमार के खिलाफ रिपोर्ट दी कि वह मंदिर श्री देई माई कुठानियां प्रन्यास का सचिव है। उक्त मंदिर का पूरा कार्य प्रन्यास द्वारा किया जा रहा है तथा मंदिर में भक्तगणों द्वारा नित्य प्रति चढ़ावा व अन्य चल सम्पतियां भेंट स्वरूप चढ़ाई जाती है। मंदिर में नित्य प्रति भक्तों की काफी भीड़ रहती है,जिससे अच्छा चढ़ावा आता है।

मंदिर में आने भक्तों की भीड़ व चढ़ावा को देखते हुए प्रन्यास के सदस्यों द्वारा मंदिर परिसर में बने भंडार गृह का निरीक्षण किया गया तो प्रन्यास सदस्यों को चढ़ावे व अन्य सामग्री में कमी पाई गई। जिसके प्रश्चात प्रन्यास के सदस्यों द्वारा मंदिर परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरों को देखा गया तो प्रन्यास के सदस्यों की जानकारी में यह तथ्य आया कि मंदिर में आने वाले चढ़ावे जैसे नकद राशि,चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों को प्रन्यास के पूर्व अध्यक्ष सुमेर सिंह भाटी व उनक पुत्र जिनेश कुमार द्वारा आपस में मिलीभगत करके गबन किया जा रहा है। 15 मार्च 2025 को ट्रस्ट के सभी प्रन्यासियों द्वारा उक्त सुमेर सिंह भाटी व उसके पुत्र जिनेश कुमार से इस बारे में बात की गई तो जिनेश ने पुलिसकर्मी बताते हुए प्रन्यासियों को धमकी दी कि प्रन्यासियों द्वारा सुमेर सिंह भाटी के कार्य में रूकावट की गई तो वह सभी के हाथ-पांव तोड़ देगा और उनको झूठे मुकदमें में फंसा देगा। 15 मार्च 2025 को जिनेश कुमार अपने साथ कुल्हाड़ी व फरसा लेकर आया और प्रन्यासियों को मारने का प्रयास किया, लेकिन पूर्व अध्यक्ष का बेटा होने के कारण प्रन्यासियों ने जिनेश के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। प्रन्यास के सदस्यों की बैठक बुलाकर सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करते हुए 20 मार्च 2025 को सुमेर सिंह भाटी को प्रन्यास के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया।

- **कुठानियां देई माई ट्रस्ट के सचिव ने ट्रस्ट अध्यक्ष और उसके बेटे पर जान से मारने की धमकी देने का मामला दर्ज करवाया**
- **पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की**

अध्यक्ष पद से हटाने के बाद भी सुमेर सिंह भाटी व उसका पुत्र जिनेश कुमार जबरन मंदिर परिसर में नित्य आते जाते है तथा मंदिर चढ़ावा व चल सम्मतियों को जबरन अपने साथ चोरी छिपे ले जाते है। विरोध करने पर उक्त लोग द्वारा उनको जान से मारने की धमकी दी जाती है।

25 मार्च को दोपहर करीब 1 बजे सभी प्रन्यासियों व कर्मचारियों की उपस्थिति व सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में मंदिर परिसर में बने सुमेर सिंह भाटी के उक्त कमरे का निरीक्षण किया तो पाया गया कि सुमेर सिंह भाटी व उसके पुत्र जिनेश कुमार द्वारा मंदिर में आने वाले चढ़ावे, नकद धनराशि व चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों को अपने साथ ले गए। उक्त लोगों ने षडयंत्र पूर्वक मंदिर में चढ़ावा के रूप में आने वाली नकद राशि, चांदी के छत्तर व अन्य चल सम्पतियों का गबन कर लिया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी। इससे पूर्व सुमेर सिंह की ओर से भी कोषाध्यक्ष व अन्य के खिलाफ मारपीट करने व गबन करने का मामला दर्ज करवाया गया था। पुलिस दोनों पक्षों की रिपोर्ट पर मामला दर्ज मामले की गहनता से जांच कर रही है।

कोटा सुपर थर्मल पावर स्टेशन के खुले परिसर में आग लगी

कोटा, (निसं)। राजस्थान के कोटा सुपर थर्मल पॉवर स्टेशन के स्टोर में आग लगने का मामला सामने आया है। इसकी सूचना पर नहर निगम के अग्निशमन अनुभाग सहित अन्य 15 दमकल मौके पर पहुंची। यह आग खुले परिसर में बने हुए स्टोर में लगी है जहां पर केमिकल से लेकर कई मशीनरी के सामान भी पड़े हुए थे। आग ने इन सबको अपनी जद में ले लिया है। आग करीब डेढ़ घंटे से फैली हुई है और लगातार बढ़ रही है। आग के कारण थर्मल को बड़ा आर्थिक नुकसान हो चुका है।

नगर निगम के मुख्य अग्निशमन अधिकारी राकेश व्यास का कहना है कि आग करीब सवा दो बजे आग लगने की सूचना थर्मल से मिली थी। इसके बाद साथ दमकल गाड़ियां नगर निगम की रवाना की है। जबकि तीन दमकल की गाड़ियां थर्मल की भी मौके पर थीं और आग बुझाने में लगी हुई रही। आग स्टोर परिसर में लगी है। राकेश व्यास का कहना है कि हमारी टीम सोमवार को 2.30 बजे के आसपास पहुंच गई थी। आग बुझाने का प्रयास कर रहे। राकेश व्यास का कहना है कि मौके पर 15 दमकल और 10 टैंकर आग बुझाने में जुटे। फायर ब्रिगेड में 10 नगर निगम कोटा उत्तर व दक्षिण, डीसीएम व सिविल डिफेंस की एक-एक साथ ही तीन थर्मल की दमकल शामिल थीं। जहां आग लगी है, वहां थर्मल में काफी बड़ा स्टोर है। यह खुले परिसर के साथ-साथ कुछ बिल्डिंग में भी बना हुआ है। आग खुले परिसर में लगी थी। इसमें टायर, स्क्रेप, पुरानी गाड़ियां, लकड़ी, केमिकल, रबर व वायर से लेकर काफी सामान यहां पर पड़ा हुआ है। इसमें पुरानी मशीनरी भी है। हमने यहां पर मैकेनिक फोम भी करीब 200 से 300 किलो डाला। आग लगने की सूचना पर प्रशासन भी अलर्ट हो गया। मौके पर एडीएम कृष्णा शुक्ला पहुंची। इसके अलावा थर्मल के वरिष्ठ इंजीनियर भी मौके पर मौजूद रहे। थर्मल की सुरक्षा में तैनात सीआईएसफ भी मौके पर रही। आग काफी बड़े एरिया में फैली हुई थी।

जिसकी लपटें दूर तक देखने को मिल रही थीं। आग लगने के कारणों का फिलहाल खुलासा नहीं हो पाया है।

ठगों ने किसान के पैन कार्ड से फर्जी कंपनी बनाई, 143 करोड़ का लेन-देन किया

पीड़ित किसान को मामले की जानकारी आयकर विभाग से मिले नोटिस के बाद पता चली

अजमेर, (कासं)। अजमेर के सरवाड़ में किसान के साथ सायबर ठगी का हैरतअंगेज मामला सामने आया है। शातिर ठगों ने किसान के पैन कार्ड से फर्जीवाड़ा कर कंपनी बनाई और 143 करोड़ रुपए का लेनदेन किया। पीड़ित किसान को इसकी जानकारी आयकर विभाग से मिले नोटिस के बाद पता चली। पीड़ित किसान सोमवार को न्याय की गुहार लगाने एसपी ऑफिस पहुंचा, जहां उसने एसपी वंदिता राणा को ज्ञापन सौंप कर न्याय की गुहार लगाते हुए शातिर ठगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के अनुसार अजमेर जिले के सरवाड़ निवासी रामराज चौधरी ने सोमवार को जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर एसपी वंदिता राणा को ज्ञापन सौंपकर न्याय की गुहार लगाई।

- **पीड़ित किसान न्याय की गुहार लगाने एसपी ऑफिस पहुंचा, शातिर ठगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की**
- **पैन कार्ड से नीतिया एक्जिम नाम से वित्तीय वर्ष 2020-21 में कंपनी खोली गई, जिसका कोटक महिंद्रा बैंक में खाता भी खोला गया था**

एसपी को सौंपे ज्ञापन में पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि उसे 3 अप्रैल को आयकर विभाग की ओर से नोटिस मिला, जिसमें उसे जानकारी हुई कि उसके पैनकार्ड का दुरुपयोग कर धोखाधड़ी की गई है। पैनकार्ड से नीतिया एक्जिम नाम से वित्तीय वर्ष 2020-21 में कंपनी खोली गई, जिसमें कोटक महिंद्रा बैंक में खाता भी खोला गया जिसकी उसे जानकारी नहीं है और न ही उसने महिंद्रा बैंक में अपना अकाउंट खुलवाया है।

पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि वह कभी मुंबई भी नहीं गया और उसके नाम से कोई फर्म नहीं बनवाई है। वह सिर्फ 12वीं पास किसान है। इस फर्जीवाड़े की जानकारी उसे नोटिस मिलने के बाद मिली थी। जब वह आयकर विभाग पहुंचा और आयकर विभाग को इसकी जानकारी दी कि उसका कोई लेनदेन नहीं है और न ही उसने कोई खाता और और न ही उसने कोई कंपनी खोली है।

पीड़ित किसान।

143 करोड़ रुपए क ट्रांसजेक्शन :-पीड़ित किसान रामराज ने बताया कि उसके पैनकार्ड से दुरुपयोग कर फर्जी कंपनी बनाकर 143 करोड रुपए का ट्रांजैक्शन किया गया। इतनी बड़ी राशि लेनदेन उसके लिए संभव है। इस फर्जीवाड़े के कारण परेशान है,जब वह इसकी शिकायत देने संबंधित थाने और सायबर थाने पहुंचा तो उसका कोई मुकदमा दर्ज नहीं किया गया। रामराज ने कहा कि सोमवार को अजमेर एसपी वंदिता राणा को शिकायत पत्र देकर शातिर लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

हिस्ट्रीशीटर सहित दो गिरफ्तार

खेतड़ी, (निसं)। पचेरी कलां पुलिस ने शराब ठेका बंद करवाने के लिए आम रास्ता बंद करने के मामले में दो जनों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में एक थाने का हिस्ट्रीशीटर है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह यादव ने बताया कि पुलिस को सुचना मिली की ग्राम सोहली से दुलोठ की तरफ जाने वाले रास्ते पर कुछ लोग शराब के ठेके को लेकर प्रर्दशन कर रहे हैं। जब पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो ग्राम सोहली से दुलोठ जाने वाले रास्ते पर 7-8 व्यक्ति बैठे थे जिनसे जानकारी की गयी तो बताया कि ग्राम सोहली में शराब ठेका बन्द होना चाहिए नहीं यह रास्ता बन्द कर दिया जाएगा।

इस दौरान पुलिस द्वारा समझाइश करने पर कुछ व्यक्ति तो मान गए, लेकिन हिस्ट्रीशीटर अनूज उर्फ पप्पू पुत्र रामप्रताप निवासी सोहली, महेन्द्र पुत्र भगवानसिंह नहीं माने। उन्हें समझाने का काफी प्रयास किया, लेकिन वह रास्ता खोलने की बजाय पुलिस से उलझने लगे। इस दौरान पुलिस ने शांति व्यवस्था कायम रखने लिए एचएस अनुज ऊर्फ पप्पु व महेन्द्र को गिरफ्तार कर लिया।

BIKANER TECHNICAL UNIVERSITY
Karni Industrial Area, Pugal Road, Bikaner-334004
Ref. No. : F34/BTU/Store/Vehicle_hire-00139 Date : 05/04/2025

Notice Inviting Bid

Bikaner Technical University invites following bids:

Sr. No.	Particulars	Estimated Cost	NIB No.	UBN No.	Last Date & Time
1.	Data Processing Work	110.00 Lacs	BTU2526 A0001	BTU2526 SLOB00001	25.04.2025 up to 5.00 pm.
2.	Hiring of Vehicles as and when Required	17.70 Lacs	BTU2526 A0002	BTU2526 SLOB00002	15.04.2025 up to 5.00 pm.

Others particulars of the bids can be find on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in of the state and Bikaner Technical University website www.btu.ac.in.

Raj.Samwad/C/25/334 Registrar

कार्यालय नगर परिषद बारां
E-Mail : nagarpalikabaran@gmail.com स्टेशन रोड, बारां (राज0) Phone : 07453-230106
क्रमांक :- न.प.बा./स्टोर/2025/109 दिनांक :- 04.04.2025

निविदा सूचना संख्या : .01/2025-26

नगर परिषद बारां द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु इस कार्यालय के टेन्ट व्यवस्था/अस्थायी लाईट डेकोरेशन/इमर्जेन्सी जनरेट लाईट सहित/15 अगस्त 26 जनवरी अल्पाहार व्यवस्था/कम्प्यूटर ऑपरेटर सप्लाई /लाईट के समान सप्लाई/ स्टेशनरी प्रिन्टिंग ओर फलेक्स प्रिन्टिंग/माईक साउण्ड व्यवस्था/LED WALL और माईक व्यवस्था/सम्बर्सिबल मोटर पेनल रिपेयर कार्य मोटर लोरिंग अनलोरिंग कार्य/साफाई के सामान कय/कायना हाउस भूसा कय/सभी रोड लाईट रिपेयर कार्य हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। संवेदक निविदा से सम्बन्धित नियम/शर्तें वेब पार्टल www.sppp.rajasthan.gov.in पर भी देख सकते है। निविदायें hrrp://eproc.rajasthan.gov.in के माध्यम से प्राप्त की जावेगी। अनुमानित लागत 10 लाख से 30 लाख तक।

1. DLB2526SLOB00447
2. DLB2526SLOB00448
3. DLB2526WSOB00451
4. DLB2526SLOB00453
5. DLB2526SLOB00454
6. DLB2526GSLOB00455
7. DLB2526GLOB00456
8. DLB2526WSOB00459
9. DLB2526WSOB00460
10. DLB2526WSOB00462
11. DLB2526WSOB00463
12. DLB2526GSOB00465
13. DLB2526SLOB00467

आयुक्त
राज.संवाद/सी/25/357 नगर परिषद बारां

साढ़े 4 साल बाद आखिरकार हैरिटेज निगम में गठित हुआ शहरी मंत्रिमंडल!

पूर्ववर्ती मेयर मुनेश गुर्जर का साथ छोड़ने वाले कांग्रेस-निर्दलीय 8 में से 7 पार्षदों को भी मिली चेयरमैन की कुर्सी

जयपुर (कासं)। जयपुर हैरिटेज नगर निगम में साढ़े 4 साल बाद आखिरकार संचालन समितियों का गठन हो गया है। सरकार ने 24 समितियों का गठन किया है। करीब 4 साल 5 माह के लंबे अंतराल के बाद कमेटियां बनाई गई है, परंतु इन कमेटियों का कार्यकाल इसी साल 10 नवंबर तक रहेगा। इसके बाद हैरिटेज निगम के बोर्ड का भी कार्यकाल पूरा हो जाएगा। खास बात ये है कि इन कमेटियों में उन पार्षदों को भी चेयरमेन बनाया है, जो कांग्रेस की मेयर मुनेश गुर्जर को हटाने के लिए बीजेपी के साथ में आए और बीजेपी बोर्ड को समर्थन दिया है।

आपको बता दें कि नवंबर 2020 में बोर्ड

हैरिटेज निगम में संचालन समितियों के गठन के बाद चेयरमैन बने भाजपा, कांग्रेस व निर्दलीय पार्षदों ने मुख्यालय पहुंचकर महापौर कुसुम यादव का स्वागत किया।

राज्य सरकार ने इन पार्षदों को बनाया समिति अध्यक्ष

1 कार्यकारी समिति	कुसुम यादव (कार्यवाहक महापौर)
2 वित्त समिति	कुसुम यादव (कार्यवाहक महापौर)
3 स्वास्थ्य-स्वच्छता समिति (ए)	पूरणमल सैनी
4 स्वास्थ्य-स्वच्छता समिति (बी)	पवन कुमार शर्मा
5 स्वास्थ्य-स्वच्छता समिति (सी)	गिर्राज नाटा
6 विद्युत समिति (ए)	रामकिशन शर्मा
7 विद्युत समिति (बी)	उत्तम शर्मा
8 विद्युत समिति (सी)	अरविंद मेठी
9 भवन अनुज्ञा एवं संकर्म समिति	कुसुम यादव (कार्यवाहक महापौर)
10 गंदी बस्ती सुधार समिति	संतोष कंवर
11 महिला-बाल विकास समिति	अंशु शर्मा
12 नियम एवं उपविधि समिति	विक्रम सिंह
13 अपराधों का शमन-समझौता	धीरज शर्मा
14 लोक वाहन समिति	रजत विश्नोई
15 लाइसेंस समिति	महेन्द्र पहाड़िया
16 फायर समिति	जितेन्द्र कुमार लख्यानी
17 उद्यान-पर्यावरण समिति	पूनम शर्मा
18 पशु नियंत्रण-संरक्षण समिति	सुरेश नावरिया
19 सांस्कृतिक समिति	ज्योति चौहान
20 राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन	मोहम्मद जाकरिया
21 होर्डिंग्स एवं नीलामी समिति	बबीता तंवर
22 नगरीय विकास कर समिति	प्रकाश चंद शर्मा
23 सामाजिक सहायता-लोक कल्याण	हिमांशु ढलेत
24 वर्षा जल पुनर्भरण एवं संरक्षण	पारस जैन
25 फुटकर व्यवसाय पुनर्वास समिति	रवि जैन
26 सीवरेज संधारण समिति	रितु मोतियानी
27 अतिक्रमण निरोधक समिति	मनोज मुद्गल
28 अवैध भवन निर्माण निरोधक	माणक शर्मा

■ **अब इन चेयरमैन का कार्यकाल 7 महीने का शेष, महापौर कुसुम यादव के पास हैं पावरफुल समितियां**

का गठन होने के बाद यहां कांग्रेस की पार्षद मुनेश गुर्जर मेयर बनी थीं, जिसे निर्दलीय पार्षदों ने समर्थन दिया था। तब से अब तक समितियों का गठन नहीं हुआ था। पिछले साल मुनेश गुर्जर को पद से हटाने के लिए कांग्रेस और निर्दलीय 8 पार्षदों ने बीजेपी को समर्थन दिया था। हालांकि इन पार्षदों को बीजेपी ने अब तक प्राथमिक सदस्य नहीं बनाया है। इस समर्थन के बाद राज्य सरकार ने मुनेश गुर्जर को पद से हटाकर कुसुम यादव को कार्यवाहक मेयर बनाया। वहीं, समर्थन देने वाले कांग्रेसी और निर्दलीय पार्षदों को समितियों में चेयरमैन बनाकर उनको तोहफा दिया।

ग्रेटर के पार्षद को बना दिया हैरिटेज में चैयरमेन

फुटकर व्यवसाय पुनर्वास समिति के चैयरमेन रवि जैन को लेकर डीएलबी अधिकारियों में गफलत हो गई। रवि जैन अभी किसी भी वार्ड से पार्षद नहीं है। वे नगर निगम ग्रेटर में पार्षद है। समितियों का जो प्रस्ताव आया था, वह उसमें भी रवि जैन के नाम के आगे कोई वार्ड नंबर या पार्षद होने का जिक्र नहीं था। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या आंखे मूंदकर चैयरमेन तय किए गए है?

इन पार्षदों को दी चेयरमैन की कुर्सी

पूर्व मेयर मुनेश गुर्जर को हटाने के लिए बीजेपी को समर्थन देने वाले कांग्रेस और निर्दलीय 8 पार्षदों में से 7 को सरकार ने समितियों में चेयरमैन बनाया है। इसमें मनोज मुद्गल, उत्तम शर्मा, ज्योति चौहान, अरविंद मेठी, मोहम्मद जकरिया, पारस जैन, संतोष कंवर को चेयरमैन बनाकर बीजेपी ने अपना कमिटमेंट पूरा किया।

महापौर कुसुम यादव को 3 समितियों की कमान सौंपी

इन समितियों में कार्यवाहक मेयर कुसुम यादव को तीन कमेटियों की कमान सौंपी है। कार्यकारी समिति के अलावा कुसुम यादव को वित्त समिति, भवन अनुज्ञा एवं संकर्म समिति का भी चैयरमेन बनाया है। ऐसी चर्चा है कि अब तक किसी मेयर को एक साथ तीन-तीन समितियों का चेयरमैन नहीं बनाया गया है।

दिवंगत पार्षद को बना दिया समिति सदस्य

स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जारी की गई सूची में कई नाम चौंकाने वाले नाम शामिल हैं। इस हैरतअंगज लिस्ट में एक दिवंगत पार्षद का नाम सामने आने बाद खलबली मच गई। ज़िम्मेदारों ने छह महीने पहले दिवंगत महिला पार्षद को फायर समिति का सदस्य बना दिया।

गौरतलब है कि 25 नवंबर को हैरिटेज नगर निगम की कार्यवाहक महापौर कुसुम शर्मा ने वार्ड नम्बर 63 से पार्षद सुशीला देवी मीणा के निधन पर संवेदना व्यक्त की थी। लेकिन, जिम्मेदारों ने शहरी सरकार के मंत्रिमंडल विस्तार में दिवंगत को ही सदस्य बना दिया।

कैदियों के पास पहुंचे मोबाइलों का अब नहीं कर सकेंगे इस्तेमाल : डी.जी. जेल

प्रदेश की सभी जेलों में नई व्यवस्था टी.एच.सी.बी.एस. लागू करने जा रहा है जेल प्रशासन : गोविंद गुप्ता

जयपुर । प्रदेश में जेलों से धमकी देने के मामलों में बढ़ रहे तंत्र को पूरी तरह खत्म करने सहित जेलों से जाने वाली धमके के कॉल पर पूरी तरह से अंकुश लगाने के लिए जेल प्रशासन ने कमर कस ली है। इसके लिए जेल प्रशासन ने प्रदेश की सभी जेलों में नई व्यवस्था (टीएचसीबीएस) लागू करने जा रही है। इसे सेंट्रल जेल और हाई सिक्योरिटी जेल पर लागू किया जाएगा। इससे जेल से बाहर कॉल करना असंभव हो जाएगा। संभव: अगर मोबाइल जेल में पहुंच भी गया जब भी कैदी उसका इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इसके लिए हाईटेक मशीनों का उपयोग किया जाएगा,जो जैमर्स से भी पावरफुल होंगे।

डी.जी. जेल गोविंद गुप्ता

पुलिस महानिदेशक (डीजी) जेल गोविंद गुप्ता ने बताया कि हाईटैक मशीनों लगाने के बाद जेलों में उपयोग में होने वाली सिम की कॉल बाहर नहीं जाए। इसके लिए सभी जेलों में में टावर फॉर हार्मोनियस कॉल ब्लॉकिंग सिस्टम (टीएचसीबीएस) नाम से नई टेक्नॉलॉजी को ला रहे हैं। इसके लिए जेल परिसर में एक टावर लगाया जाएगा। इस टावर पर सभी मोबाइल नेटवर्क प्रदान करने वाली कंपनियां अपने-अपने इंस्ट्रूमेंट लगाएंगी। जिससे मोबाइल कॉल बाहर नहीं जा सकेगा। इस सिस्टम को लगाने के बाद जेल से कॉल होना लगभग असंभव हो जाएगा। आगामी तीन-चार महीनों में बीकानेर, जयपुर, अजमेर, जोधपुर जेलों में और उसके बाद प्रदेश की सभी जेलों में यह टावर लगा दिए जाएंगे। यह लगने के बाद नॉर्मल और इंटरनेट कॉल भी नहीं लगेगा। इस तकनीक की खासियत होगी कि यह किसी भी कम्पनी के मोबाइल को जेल परिसर में नहीं चलने देगी। किसी भी टेलिकॉम कम्पनी की सिम चालू की जाएगी तो यह तकनीक रिवर्स कॉल कर उसके नेटवर्क को खत्म कर देगी। जेलों में हर टेलिकॉम कंपनी का सेटअप लगाया जाएगा।

अविलम्ब बदले जाएं खराब मीटर : आरती डोगरा

जयपुर । डिस्कॉम्स चेयरमैन आरती डोगरा ने जयपुर डिस्कॉम के सभी सब डिविजन कार्यालयों में उपभोक्ताओं के डिफेक्टिव मीटर तत्काल प्रभाव से बदलने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि डिफेक्टिव मीटर बदलने में देरी के कारण औसत उपभोग के आधार पर बिलिंग की जाती है, जिसका नुकसान निगम को राजस्व हानि के रूप में होता है। उन्होंने निर्देश दिए कि फील्ड के सभी अधीक्षण अभियंता अपने-अपने क्षेत्र के सब डिविजनों में खराब मीटर बदलने की नियमित मॉनीटरिंग करें। जिन क्षेत्रों में डिफेक्टिव मीटर की समस्या अधिक आ रही है, वहां के लिए विशेष टीम गठित कर क्रॉस वेरीफिकेशन कराएं।

डिस्कॉम्स चेयरमैन सोमवार को विद्युत भवन में वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से सर्किल अधीक्षण अभियंताओं तथा सहायक अभियंताओं (ओएंडएम) के साथ डिफेक्टिव मीटर, लंबित कनेक्शन, बकाया राजस्व की वसूली आदि से संबंधित विषयों की समीक्षा कर रही थीं। उन्होंने कहा कि मुख्यालय की मैटेरियल मैनेजमेंट शाखा सभी सब डिविजनों में मांग के अनुरूप मीटर की उपलब्धता सुनिश्चित करे, ताकि खराब मीटर अविलम्ब बदले जा सकें।

डोगरा ने अधीक्षण अभियंताओं से उनके क्षेत्र में सब डिविजन वार खराब मीटरों की संख्या के बारे में जानकारी ली और अप्रेल माह के अंत तक सभी प्रकरणों में नए मीटर लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने एईएन कार्यालयों में घरेलू एवं अघरेलू तथा पीएचईडी श्रेणी के बकाया कनेक्शनों की भी समीक्षा की। डिस्कॉम्स चेयरमैन ने यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर कनेक्शन जारी करने में देरी न हो। जॉब ऑर्डर अथवा सर्विस कनेक्शन ऑर्डर की अपूर्णता के बहाने इन्हें अटकाया नहीं जाए। गर्मियों को देखते हुए पीएचईडी से संबंधित कनेक्शनों को प्राथमिकता के आधार पर जारी किया जाए।

सीमेंट में रेत मिलाकर डाल रहे कल्वर्टर बॉक्स?

सिरसी रोड से पांच्यावाला तक बारिश के पानी की निकासी के लिए 48 करोड़ में दिया था ठेका

जयपुर (कासं)। सिरसी रोड से पांच्यावाला तक बारिश के पानी की निकाली के लिए डाले जा रहे कल्वर्टर बॉक्स सीमेंट में बजरी की जगह, रेत और बुरादा मिला कर डाले जा रहे हैं। इसके बावजूद जयपुर विकास प्राधिकरण के जोन 7 के इंजीनियर ठेकेदार पर मेहरबान बने हुए है। दिनदहाड़े की जा रही इस गफलत और गड़बड़ी के बावजूद दोषी ठेकेदार पर कार्रवाई के बजाय अफसर चुप्पी साधे बैठे है।

सूत्रों की मानें तो जेडीए ने इस काम के लिए 48 करोड़ रुपए में टैंडर किया है, जो लालचंद तिवारी के नाम पर खुला है। मौके पर न तो ठेकेदार और न ही जेईएन कोई भी मौजूद नहीं है। सिर्फ नौसिखिया लेबर ये बॉक्स डाल रही है, इससे लेवल बिगड़ने और मिट्टी ढहने की आंशका बनी हुई है।

सूत्रों की मानें तो कल्वर्टर बॉक्स डालते समय बजरी या एमसेंड का उपयोग किया जाता है। ये बॉक्स के नीचे सीमेंट में फर्श बना कर

बिछाई जाती है। सूत्रों की मानें तो ठेकेदार ने यह काम एचआर कंस्ट्रक्शन को सबलेट किया हुआ है। सीमेंट में बुरादा या रेत का खुलेआम उपयोग कर रहा है, इससे ठेकेदार लाखों रुपए की बचत हो रही है लेकिन काम की क्वालिटी खराब हो रही है। पानी आने के बाद लीकेज होने से बाक्स का लेवल बिगड़ेगा, जिससे सडक में बड़ा गड्डा हो सकता है या फिर पानी भर सकता है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि मौके पर बाक्स डालते समय जेईएन का या ठेकेदार का होना जरूरी है पर मौके पर कोई मौजूद नहीं रहता। नौसिखिया लेबर ही बाक्स डालने का काम कर रही है। उन्हें न तो लेवल का पता है और न ही सामान का। मौके पर जो मसाला बनाया जा रहा है वो मिक्सर मशीन से बना कर नहीं डाला जा रहा है। ऐसे में कितनी सीमेंट, कंक्रीट डाली जाएगी इसका भी कोई पता नहीं है।

बताया जा रहा है कि ड्रेनेज बॉक्स डालते समय बीच-बीच में चैंबर के लिए मौके पर कास्ट किया जा रहा है। परंतु न तो पूरे सरिए डाले जा रहे हैं और ना ही पत्थर। नियमानुसार प्री-कास्ट चैंबर ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए, जिससे मजबूती आती। ठेकेदार बचत करने के चक्कर में प्रीकास्ट चैंबर नहीं लगा कर मौके पर बना रहा है।

घर से जेवर और नकदी चुरा ले गया बदमाश

जयपुर । सोडाला थाना इलाके में बाइक सवार दो चोरों ने एक घर की दीवार फांदकर लाखों रुपए के जेवरात सहित नकदी चोरी कर लिए। वारदात के दौरान मकान मालिक परिवार सहित घर से बाहर थी। घर में चोरी की जानकारी मिली तो वह वापस लौटी और मामला दर्ज करवाया।

पुलिस ने बताया कि नंदपुरी हवा सडक की रहने वाली पीडिता सुषमा पारीक ने मामला दर्ज करवाया कि वह और उसका पति प्रकाश पारीक दोनों हाईकोर्ट राजस्थान में वकील हैं। कुछ दिन पहले ही वह अपनी बेटी से मिलने के लिए बैंगलोर गए हुए थे। वहीं पडोसी ने फोन कर चोरी की सूचना दी। इसके बाद अगले दिन घर पहुंचे तो देखा कि घर के सभी कमरों के ताले टूटे हुए थे और आलमारी से लाखों रूपये के सोने -चांदी के जेवरात सहित नगदी गायब मिली। पुलिस ने मामला दर्ज कर आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाल बदमाशों की तलाश कर रही है।

प्रशासनिक अधिकारी पांच हजार रु. रिश्वत लेते पकड़ा

एसीबी ने जिला खाद्य सुरक्षा एवं औषधी नियंत्रण कार्यालय जयपुर में तैनात अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी दिनेश कुमार को 5 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया।

जयपुर । राजधानी जयपुर में भ्रष्टाचार के खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने सोमवार को एक और बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया। जिला खाद्य सुरक्षा एवं औषधी नियंत्रण कार्यालय जयपुर में तैनात अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी दिनेश कुमार को 5 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार आरोपी दिनेश कुमार (59) मूलत: प्रेम नगर फाय सागर रोड अजमेर हाल जवाहर नगर अति. प्रशासनिक अधिकारी, जिला कार्यालय में खाद्य सुरक्षा एवं औषधी नियत्रंण के पद पर कार्यरत है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने जानकारी देते हुए बताया कि एसीबी जयपुर नगर-प्रथम इकाई को एक शिकायत मिली थी। जिसमें परिवादी ने बताया कि दिनेश कुमार, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी उसकी मेडिकल दुकान का नाम परिवर्तन करने के एवज में 5 हजार रुपए की रिश्वत मांग कर परेशान कर रहा है।

■ **पीड़ित की मेडिकल दुकान का नाम परिवर्तन करने की एवज मांग रहा था रिश्वत की राशि**

मामले को गंभीरता से लेते हुए राहुल कोटोकी, उप महानिरीक्षक पुलिस-द्वितीय के सुपरविजन और भूपेन्द्र, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, जयपुर नगर प्रथम के नेतृत्व में ट्रैप टीम का गठन किया गया।

टीम ने शिकायत के सत्यापन किया। मामले में रिश्वत की पुष्टि होने के बाद योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई करते हुए आरोपी को 5 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगहाथों गिरफ्तार कर लिया। इस कार्रवाई में उप अधीक्षक श्री नीरज गुरनानी सहित एसीबी की विशेष टीम मौजूद रही। उन्होंने बताया कि एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के सुपरवीजन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्रवाई जारी है।

जवाहर कला केन्द्र का स्थापना दिवस समारोह आज से

जयपुर । जवाहर कला केंद्र, जयपुर 8 अप्रैल को अपना 32वां स्थापना दिवस मनाने जा रहा है। इस अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। पर्यटन, कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के शासन सचिव रवि जैन ने स्थापना दिवस समारोह के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर केन्द्र की वरिष्ठ लेखाधिकारी बिंदु भोभरिया, सहायक निदेशक अब्दुल लतीफ उस्ता मौजूद रहे। मंगलवार प्रात: 11:30 बजे डूडल वॉल पर कल्पनाओं को साकार करने के साथ समारोह का उद्घाटन होगा। समारोह के अंतर्गत अलंकार दीर्घा में राजस्थान के लुप्तप्राय लोक वाद्य यंत्रों की विशेष प्रदर्शनी भी आयोजित की जा रही है। तनेराज सिंह सोढ़ा के क्यूरेशन में होने वाली प्रदर्शनी में 100 से अधिक लोक वाद्य यंत्र देखने को मिलेंगे।

सार-समाचार

विशेषज्ञों ने साझा किए स्वास्थ्य मंत्र

जयपुर । विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में मानव सेवा ट्रस्ट राजस्थान एवं आरोग्य क्लब के संयुक्त तत्वावधान में विवेकानंद ग्लोबल यूनिवर्सिटी के ऑडिटोरियम में एक विशेष जागरूकता सेमिनार का भव्य आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय था "सशक्त स्वास्थ्य और कल्याण, जिसका उद्देश्य विभिन्न चिकित्सा पद्धितयों के समन्वय से समग्र और सशक्त स्वास्थ्य दृष्टिकोण को बढ़ावा देना था । स्वास्थ्य कल्याण होमियोपैथिक कॉलेज एवं रिसर्च सेंटर के वरिष्ठ होम्योपैथ प्रो. डॉ. राजीव सक्सेना ने रोग के मूल कारणों को जड़ से समाप्त करने की प्रणाली और इसके दुष्प्रभाव रहित उपचार की महत्ता पर प्रकाश डाला। आयुर्वेद पर से.नि. एडिशनल डायरेक्टर आयुर्वेद विभाग डॉ. जीतेन्द्र सिंह कोठारी ने बताया कि किस प्रकार संतुलित आहार, जीवनशैली, औषधियाँ और पंचकर्म जैसी प्रक्रियाएँ शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को संतुलित करती हैं। एलोपैथी के पक्ष में महात्मा गाँधी अस्पताल के डॉ. एन.के. टाक ने आधुनिक तकनीक और त्वरित निदान-उपचार की क्षमता को रेखांकित किया। साथ ही नशा मुक्ति के उपाय साझा किये नेचुरोपैथी पर डॉ. मनोज शर्मा ने प्रकृति के तत्वों जैसे जल, वायु, सूर्य और मिट्टी के माध्यम से उपचार के सरल और प्रभावी तरीकों की जानकारी दी।

रेस्टोरेन्ट में चल रहे हुक्का बार पर छापा

जयपुर । विधायकपुरी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रेस्टोरेन्ट की आड में चल रहे हुक्का बार में छापेमारी करते हुए 22 हुक्के, 30 पाइप एवं 13 चिलम जब्त किए है और साथ ही 5 लोगों का कोटपा एक्ट में चालान किए। इसके अलावा पुलिस ने इस दौरान 34 लोगों को शांतिभंग में गिरफ्तार पांच चौपहिया वाहन को जब्त किया। पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण दिगंत आनन्द ने बताया कि विधायकपुरी थाना पुलिस ने रविवार देर रात तक बुलिसियस बार एण्ड रेस्टोरेन्ट में हुक्का चलने की सूचना पर आरोपी चन्द्र बहादुर छेत्री उर्फ विशाल पुत्र साहिब कुमार छेत्री को हुक्का पिलाते गिरफ्तार किया। इसके कब्जे से 22 हुक्के, 30 पाईप एवं 13 चिलम व 4 डिब्बा हुक्का फ्लेवर जब्त कर 5 व्यक्तियों का कोटपा एक्ट में चालान किया गया। इसके अलावा पुलिस ने इनामी अपराधी अजय उर्फ रामेश्वर को भी मौके से गिरफ्तार किया।

ज्वैलरी शॉप से लाखों रु. के जेवर चोरी

जयपुर । ब्रह्मपुरी इलाके में बदमाशों ने एक ज्वेलरी की एक शॉप में लाखों रुपए कीमत के सोने-चांदी के जेवरात चोरी होने का मामला सामने आया है। बताया जा रहा है कि ज्वेलरी शॉप के पास लगे सीसीटीवी फुटेज में चोर की करतूत कैद हो गई। पुलिस फुटेज के आधार पर चोर की तलाश कर रही है। पुलिस ने बताया कि ब्रह्मपुरी के सीताराम बाजार निवासी अमित सोनी (27) ने मामला दर्ज करवाया है कि थाना इलाके में स्थित बड़ा अखाड़ा मंगला माता मार्ग पर उसकी ज्वेलरी की शॉप है। जहां 3 अप्रैल की रात वह रोज की तरह शॉप मंगल कर घर आ गया। इस दौरान शॉप का ताला तोड़कर बदमाश अंदर घुसे और के सोने-चांदी के जेवरात सहित व पत्ते के नगीने का पैकेट चोरी कर ले गए। अगले दिन शॉप पर आने पर चोरी का पता चला। पुलिस चोरी की सूचना पर मौके पर पहुंची और मामला दर्ज कर चोरों की तलाश में जुट गई है।

घर में घुसकर युवती से जबरदस्ती

जयपुर । सुभाष चौक थाना इलाके में एक परिचित युवक द्वारा युवती से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीडिता का आरोप है कि आरोपित ने मिलने के बहाने घर आकर उसके साथ जबरदस्ती की। इस संबंध में पीडिता की ओर से थाने में मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने बताया कि दिल्ली की रहने वाली 28 वर्षीय युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि साल-2019 में जयपुर के सुभाष चौक इलाके में रहती थी। यहां उसकी मुलाकात आरोपी से हुई थी। बातचीत होने पर दोनों में अच्छा परिचय हो गया। पीड़िता का आरोप है कि परिजनों की गैरमौजूदगी में आरोपी मिलने के बहाने उसके घर आया। और अकेला पाकर आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती की। विरोध करने पर डरा-धमकाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। पिछले चार साल तक आरोपी परिजनों की गैरमौजूदगी का फायदा उठाकर उसके साथ देह शोषण करता रहा। दिल्ली के पुलिस स्टेशन में पीडिता ने आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई। इसके बाद दिल्ली पुलिस पुलिस ने जीरो नंबर एफआईआर कटकर मामला सुभाष चौक थाना पुलिस के भेज दिया। ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

तेज रफ्तार वाहन ने महिला को कुचला

जयपुर । बगरू थाना इलाके में तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने पैदल चल रही एक महिला को टक्कर मार दी। इस हादसे में महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे मौके पर पहुंची पुलिस ने एसएमएस अस्पताल पहुंचाष। जहां इलाज के दौरान उसकी रविवार देर रात को मौत हो गई। पुलिस के अनुसार हादसा चार अप्रेल को हुआ था। मृतक महिला की शिनाख्त नहीं होने के कारण शव को मुर्दाघर में रखवा दिया गया है। और साथ ही पुलिस मृतक महिला की पहचान के प्रयास में जुटी है। मामले की जांच कर रही सडक दुर्घटना थाना (पश्चिम द्वितीय) के अनुसार हादसा बगरू थाना इलाके में स्थित बडके बालाजी कट अजमेर रोड पर हुआ था। जहां एक 50 वर्षीय अज्ञात महिला पैदल चल रही थी। जिसे तेज रफ्तार किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। जिसके बाद लोगों की सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर एसएमएस अस्पताल में भर्ती करवाया। जहां उसकी इलाज के दौरान रविवार रात को मौत हो गई। महिला की शिनाख्त नहीं होने के चलते शव को एसएमएस अस्पताल के मुर्दाघर के डीप फ्रीज में रखवा दिया गया है।

सड़क हादसे में घायल व्यक्ति की मौत

जयपुर । रामनगरिया थाना इलाके में सड़क हादसे में घायल एक व्यक्ति की इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक की शिनाख्त नहीं होने पर शव को मोर्चरी में रखवाया दिया गया है। पुलिस के अनुसार हादसा 31 मार्च को हुआ था। जहां एक अज्ञात व्यक्ति थाना इलाके में स्थित स्विमिंग पूल गोनेर रोड के पास सडक हादसे में घायल हो गया। लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को जीवनरेखा अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहां इलाज के दौरान उसकी रविवार रात को मौत हो गई। मृतक की 30 से 35 वर्ष की बताई जा रही है। पुलिस शिनाख्तगी के प्रयास कर रही है।

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

जयपुर । मालपुरा गेट थाना इलाके में ट्रेन की चपेट में आने से अधेड व्यक्ति की मौत हो गई। लोगों की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लिया। मृतक की शिनाख्त नहीं होने पर पुलिस ने शव को मोर्चरी में रखवा दिया गया है। साथ ही मृतक व्यक्ति की शिनाख्तगी के प्रयास में लगी है। पुलिस ने बताया कि हादसा थाना इलाके में रेलवे लाइन पर बयाना ट्रेन से हुआ था। जहां 35 वर्षीय एक अज्ञात व्यक्ति ट्रेन की चपेट मे आ गया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शिनाख्त नहीं होने पर शव को महात्मा गांधी अस्पताल की मोर्चरी में रखवा दिया है।

भगवान राम-शिव की महिमा का बखान

जयपुर । जवाहर कला केन्द्र की ओर से सोमवार को आयोजित भजन संध्या सुमिरन में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाले भजन सुनने को मिले। बनारस के सुजीत तिवारी और मुंबई के ओम प्रकाश श्रीवास्तव ने अपनी सुरीली प्रस्तुति से समां बांधा। ओम प्रकाश श्रीवास्तव ने अपने गायन में राम नाम की महिमा का बखान किया। उन्होंने राम का सुमिरन करो भजन से प्रस्तुति की शुरुआत की। इसके बाद सकल जगत में रमने वाले घट-घट में श्री राम की मधुर प्रस्तुति दी। आदि देव महादेव शंभु त्रिपुरारी गाकर उन्होंने भगवान शंकर के चरणों में नमन किया। अंतरिक्ष में रम रहा शिव अनादि अनंत है और कभी राम राम बोलो कभी श्याम श्याम बोलो भजन के साथ उन्होंने माहौल को शिवमय बना दिया। तबले पर सावन कुमार, वायलिन पर मन भावन, कि-बोर्ड पर हबीब खान, ऑक्टोपैड पर भवानी ने संगत की।

ARBiT it happens here...

Celebrating Beauty, Talent, and Empowerment

Observed annually on April 8, International Pageant Day honours the world of pageantry, celebrating the confidence, grace, and achievements of contestants across various beauty and talent competitions. From Miss Universe to local cultural pageants, this day recognizes the hard work, dedication, and advocacy efforts of participants who use their platforms for social change. It also highlights the evolution of pageants beyond beauty, emphasizing intelligence, leadership, and philanthropy. Whether as a contestant, fan, or supporter, International Pageant Day is a tribute to the spirit of empowerment and the global impact of pageantry.

राष्ट्रदूत
TUESDAY
08 April 2025
A-B

#TRENDING

From Blueprint to Reality

India's First 3D-Printed Villa stuns the Internet.

In a groundbreaking innovation that has taken the real estate and construction industries by storm, India's first-ever 3D-printed villa has been unveiled in Pune. The revolutionary structure, designed and built using advanced 3D-printing technology, has left the internet awestruck, sparking conversations about the future of housing in India.

A Technological Marvel in Construction

The villa, located in Pune, has been created using state-of-the-art 3D construction printing technology, which drastically reduces building time, material wastage, and costs. Spearheaded by a pioneering Indian startup in collaboration with engineers and architects, this project marks a significant leap towards sustainable and efficient housing solutions in the country. Unlike traditional construction methods, which involve bricklaying, cement mixing, and extended labor-intensive processes, 3D printing enables the villa's walls to be printed layer by layer using a specially formulated concrete mix. This technique ensures structural integrity while allowing for rapid construction, completing the villa in just a few weeks instead of months.

Features of the 3D-Printed Villa

The villa boasts a sleek, modern design with an emphasis on sustainability and innovation. Some of its key highlights include,

- *Eco-Friendly Materials:* The concrete mix used for printing is designed to be sustainable, reducing carbon footprint and construction waste.
- *Rapid Construction:* Traditional homes can take several months to complete, but this villa was built in a fraction of the time, thanks to automated 3D printing technology.
- *Customizable Designs:* Unlike conventional construction, 3D printing allows for intricate and customizable architectural designs, making each home unique and tailored to specific needs.
- *Energy Efficiency:* The structure is optimized for energy conservation, integrating smart lighting and ventilation systems.

The Internet Reacts

As soon as images and videos of the 3D-printed villa surfaced online, social media platforms buzzed with admiration and curiosity. Tech enthusiasts, architects, and real estate experts lauded the project as a game-changer for India's housing sector. Many expressed excitement over the potential affordability and efficiency that 3D-printed homes could bring to the market, especially in a country where rapid urbanization demands innovative housing solutions.

"This is the future of housing! Imagine being able to print homes for the underprivileged in record time," commented one Twitter user.

"India is stepping into a new era of sustainable and smart construction. This could be the beginning of a housing revolution," posted another.

Future Prospects of 3D-Printed Homes in India

The successful execution of India's first 3D-printed villa paves the way for larger-scale projects in the near future. Experts believe that this technology could be instrumental in addressing India's affordable housing crisis by providing quick, cost-effective, and durable housing solutions. Additionally, with rising concerns over environmental sustainability, 3D printing in construction could help reduce material wastage and carbon emissions, making it a preferred choice for future real estate developments.

The Night Stardom Performed, Old Tried Young, And Cinema Forgot to Show Up

Bollywood descended like a meteor, loud, glittering, and slightly offbeat. IIFA 2025 gave us abs, auto-tune, and actors lip-syncing to their own youth. Jaipur got the party, we got the Instagram reels. And somewhere beneath the sequins, cinema quietly asked, "Remember me?" A reflective, slightly unhinged, absolutely honest take on IIFA Jaipur 2025!

Shailaza Singh
Published Author, Poet and a YouTuber

One evening after the dust settled, after the confetti had been swept up and the stage lights had dimmed, I did something I hadn't done in years. I turned on the television. I wasn't watching the news or a streaming platform. No. I was watching *Kuch Kuch Hota Hai*.

And I remembered.

I remembered a time when Shah Rukh Khan looked like Shah Rukh Khan. When Salman Khan looked like someone who still believed in trees, not protein shakes. When Madhuri Dixit danced like poetry and didn't need to lip-sync to her own nostalgia.

I remembered Bollywood, not this botoxed, brand-partnered, algorithm-chasing version of itself, but the messy, magical, melo-dramatic beast I fell in love with.

And that's when it hit me. IIFA had just happened in Jaipur. And I was still trying to recover.

Stardust and Steerage: The Real Audience Experience

Let me start from the ground level because that's exactly where we were. While the gold-class ticket holders and influencers bathed in proximity to stardom, the rest of us, the so-called silver class, watched from a Titanic-style steerage zone, peering at the giant screens like hopeful extras in someone else's movie. The stage was a galaxy away. The sound was decent, if you enjoy delayed reactions and tinny treble. And the plastic tumbler, yes, the 100 water tumbler, became a symbol of our place in this cinematic caste system. The fries? 250. Loaded only in price. Not potato!

The Actors Who Danced (Or Didn't)

Now let's talk about the dancing. Who says the stars danced?

In reality, they posed, twirled, did a dramatic half-spin, and exited stage left. The background dancers did the actual lifting, figuratively, and occasionally, quite literally. The stars came on, wiggled a bit, pointed skyward, struck a pose, exited, and returned after a waistcoat change to do it all over again.

Some in the audience whispered that they saw a body double perform Shah Rukh's hook steps during his sequences. I could barely distinguish the body from where I was sitting, double or otherwise. It was all a flicker of nostalgia wrapped in glitter and exhaustion.

Are star awards only about song and dance? Has it all become so choreographed that spontaneity and storytelling have quietly exited the stage, right?

The True Story of the Awards

Kartik Aaryan took home the Best Actor award for *Bhool Bhulaiyaa 3*, a performance that was, in the kindest words, energetic and crowd-friendly. Meanwhile, Sparsh Srivastava of *Laapataa Ladies*, who delivered a performance rooted in subtlety, heartbreak, and humanity, wasn't even in contention.

Why?

Perhaps because Kartik also co-hosted the evening with Karan Johar and needed a proper thank-you note in the form of a trophy. Perhaps because subtle storytelling doesn't trend as easily on social media as dancing in *sherwanis*. This is not to belittle Kartik Aaryan's charm, but to wonder, when did awards become compensations rather than recognitions?

#IIFA 2025

Lip Sync of the Undead

Madhuri Dixit appeared, sequins sparkling, lips moving to an old number she once made legendary.

Except it felt like a hologram. A beautifully preserved relic going through the motions. A living icon, caught in an echo of her own applause.

Shah Rukh tried to recreate the magic too. But this wasn't *DDLJ* or *Kal Ho Naa Ho*. This was a man battling time with a dumbbell in one hand and a legacy in the other.

They weren't just trying to look youthful. They were clinging to an image that had already moved on, like fashion trends and exes we don't speak of.

And yet, I felt sad. Not because they aged, but because they weren't allowed to.

Nostalgia With a Ring Light

Shah Rukh Khan and Madhuri Dixit, once lightning in a bottle, now seemed like elegant holograms of their younger selves, beautifully preserved, but ever so slightly disconnected.

This isn't a criticism of aging. Aging is glorious. But pretending not to age? Exhausting for everyone. There was a time when stardom grew with the audience. Today, it's held hostage by marketing calendars and six-pack schedules.

Where Was the Cinema?

Amid all the smoke machines, abs, and backup dancers, one thing was quietly missing, the cinema itself.

We didn't see a montage celebrating *Laapataa Ladies*, *12th Fail*, or *RRR's* global victory lap.

There was no love letter to storytelling. No tribute to screenwriters. Not even a quiet nod to the films that made us think, cry, or change.

Instead, we cheered for songs that already had a billion views on YouTube.

It felt like watching a wedding sangeet on a corporate budget, with no actual wedding.

Yes, they did run montages each time the nominations were announced, but they were just names. No heart. No frames that reminded us why we fell in love with cinema in the first place.

There was a technical awards segment on the previous day, hosted by Abhishek Banerjee, Aparshakti Khurana, and Vijay Varma. But it was riddled with cringe comedy, timing issues, and synchronization gaffes that had the audience groaning louder than laughing.

And that's where we missed the cinema the most, not just as content, but as craft.

Marketing Over Memory

Somewhere along the way, stardom became a business model, not a story. There was a time when Dilip Kumar said in an interview,

"There are so many toys in the shop. Either you take them out one by one and last for years, or you dump them all at once and be done."

I think we're in the age of dumping all the toys. Amitabh Bachchan, bless him, evolved. From angry young man to KBC host to the wise man of the people, he kept reinventing. He didn't hide from his years. He used them. His journey moved from Juhu to living rooms in Moradabad and Sambhal. And he never looked like a caricature of himself.

Meanwhile, IIFA seems stuck in a loop of trying to sell nostalgia in gold-plated wrappers.

Celebration or Commercial?

To the city's credit, Jaipur hosted an event of massive scale and spirit. The energy was undeniable. For tourism, for visibility, for the local economy, it was a grand moment. The coordination and cultural representation, though limited in some aspects, still offered the city a brief starring role on the global stage.

But for those of us who came as fans, not buyers, it was also a moment of reckoning.

Are we watching art, or advertising?

Are we celebrating cinema, or staging brand placements with backup dancers?

Are we still in love, or are we holding on to an illusion of what love used to be?

Local Talent: A Token Afterthought

Rajasthani artists, cultural custodians of one of India's richest heritages, were given a grand total of 8 minutes of stage time.

You heard that right. 8 minutes.

Apparently, that's the value of folk art in a Bollywood spreadsheet.

The Jaipur Lens

And what about Jaipur? The city shimmered. Hotels were overbooked, streets were scrubbed clean, and every autorickshaw driver had a theory on which actor stayed where.

But it also felt like the city was playing host to a party it couldn't fully attend. Locals watched from afar, cheered from behind barricades, and waved at cars with tinted windows. This wasn't just an event, it was a mirror to our aspirations and our exclusions.

Jaipur looked beautiful. But was it seen?

The Weight of Stardom (and Ozempic)

Even the controversies were glamorous. Karan Johar's rapid weight loss had the internet whispering Ozempic louder than his designer label. Sonu Nigam questioned the credibility of the awards. The nominations felt more like brand campaigns than acknowledgments of art. It wasn't an awards show, it was a *marketing gala* in movie drag.

And Yet... I Stayed

Despite all this, I watched. I observed. I mourned and I laughed.

Because once, I was in love with this world. I believed in Shah Rukh's stammering declarations, in Madhuri's eyes that spoke volumes, in Aamir Khan's earnest eyes. Now, I just watch them trying to look like themselves.

And that is the greatest tragedy of all!

The Influence of Influencers

Once upon a time, an 'influencer' was someone who shaped cinema, culture, and conversation. Today, they're more likely to be someone who once reviewed moisturizers and now finds themselves strutting the green carpet with a rented designer clutch and 34K followers, 90% of whom are bots.

IIFA 2025 had more ring lights than real light, more vloggers than veterans. Micro-celebrities captured more footage of themselves reacting to the event than the event itself.

You could hear it in the rehearsed gasps, "OMG guys, Shah Rukh just looked in my direction. I think."

No one blinked at the irony of filming their 'authentic reactions' in three takes.

This wasn't just an awards night, it was a content creation festival.

The Final Take

Maybe, IIFA Jaipur wasn't a celebration. Maybe, it was a mirror.

Not just for the stars, but for us too. For those of us who still watch TV and wait for stories that move us. For those of us who still believe in magic, but now see the wires holding up the illusion.

And maybe, that's okay.

Because once the stardust settles, you begin to see the real stage.

And sometimes, the truth is far more entertaining.

And maybe, the real award goes to us, for still hoping that cinema remembers how to feel, not just perform.

rajeshsharma1049@gmail.com

THE WALL

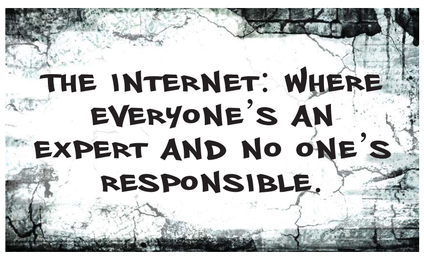

BABY BLUES By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS By Jerry Scott & Jim Borgman

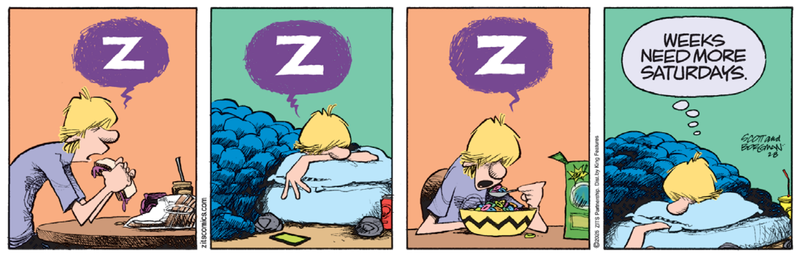

लेन-देन के विवाद में व्यापारी को चाकू मारा, हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश

गुस्साए लोगों ने बाजार बंद करवाए, कस्बे में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया

आसीन्द/भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा जिले के आसींद कस्बे में रविवार देर रात चाकूबाजी की घटना से माहौल गरमा गया। लेनदेन विवाद को लेकर एक व्यापारी को बुलाकर कुछ लोगों ने उसे पर चाकू से हमला कर दिया, जिससे वह घायल हो गया।। हमले में घायल युवक को महात्मा गांधी अस्पताल

- पुलिस ने एक आरोपी को डिटेन किया है, बाकी की तलाश की जा रही है

गुस्साए लोगों ने घटना को लेकर आक्रोश जताया।

घायल व्यापारी को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया।

में भर्ती कराया गया है। घटना से हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश व्याप्त हो गया। गुस्साए लोगों ने सोमवार सुबह बाजार बंद करवा दिए। वहीं कस्बे में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात है। वहीं पुलिस ने एक आरोपी को डिटेन किया है बाकी की तलाश जारी है।

जानकारी के अनुसार आसींद में जूता-चप्पल दुकान संचालक राकेश डांगी का दानिश पठान के साथ लेनदेन का विवाद है। रात में राकेश घर पर खाना खा रहा था। इस दौरान दानिश ने फोन करके कहा कि पैसे लेने के लिए वह चौराहे पर आ। राकेश अपने भाई मनीष के साथ वहां पहुंचा। दानिश और उसके दो-तीन साथी ने राकेश पर चाकू से हमला कर दिया। बचाव में मनीष के साथ भी मारपीट की। सूचना पर आसींद थाना पुलिस मौके पर पहुंची। घायल राकेश को आसींद अस्पताल ले जाया गया। वहां से भीलवाड़ा रैफर कर दिया।

सूचना पर बड़ी संख्या में लोग वहां जमा हो गए। घटना के बाद आरोपी मौके से भाग गए। सुबह पता चलने पर हिन्दूवादी संगठनों में आक्रोश व्याप्त हो गया। गुस्साए लोगों ने बाजार बंद करवा दिए और प्रदर्शन करने लगे।

जिला मुख्यालय से पुलिस बल आसींद भेजा गया। आसींद में पुलिस बल तैनात हो गया। पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों ने समझाइश की। वहीं शांतिपूर्ण तरीके से आसींद कस्बे में व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे। प्रशासन ने आमजन से शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु अपील की है। वही आसींद पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश सोलंकी ने बताया कि देर रात्रि 10 बजे के बाद आसींद क्षेत्र मैं संचालित होटल पर अनैतिक तरीके से किसी भी व्यक्ति के पाए जाने पर पुलिस के द्वारा कार्यवाही की जाएगी तथा पुलिस की ठास्त क्षेत्र में लगातार झाड़ी रहेगी। आमजन से पुलिस प्रशासन ने शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील की है।

आसींद पुलिस उपाधीक्षक ओमप्रकाश सोलंकी ने बताया कि सकल हिंदू समाज द्वारा बाजार बंद रख शांतिपूर्ण तरह से विरोध प्रदर्शन करते हुए रैली निकाली गई। वहीं चाकूबाजी के मामले में पुलिस ने मुस्लिम समाज के कुछ युवकों को डिटेन कर पूछताछ शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि मुख्य आरोपी को हिरासत में लेने के साथ ही बाकी आरोपियों की तलाश जारी है।

जिला संयोजक बजरंग दल मुकेश सिंह ने बताया कि अगर जल्दी आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं की गई तो बाजार अनिश्चितकालीन बंद रखा जाएगा, जिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।

ब्यावर गैस दुखांतिका वॉरियर्स का सम्मान किया

केमिकल फैक्टरी में 31 मार्च को 25 टन केमिकल से भरे हुए टैंकर में आग लग गई थी

ब्यावर, (निसं)। विप्र सेना जिला शाखा ब्यावर की ओर से ब्यावर गैस दुखांतिका वॉरियर्स का सम्मान किया गया। जानकारी के अनुसार बलाड़ रोड स्थित एक केमिकल फैक्टरी में 31 मार्च को 25 टन केमिकल से भरे हुए

- बिना सुरक्षा उपकरणों के मौका स्थल पर बचाव कार्य किया था

टैंकर जिसको धातु गलने के काम में लिया जाता है में गैस हुए गैस रिसाव के कारण हुई दुखांतिका घटित हुई थी। बिना सुरक्षा उपकरणों के मौका स्थल पर पहुंच कर किए गए बचाव कार्य के लिए विप्र सेना जिला शाखा ब्यावर की ओर से अजमेर रोड स्थित विप्र सेना कार्यालय में सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में जांबाज पुलिस अधिकारी राजेश कसाना, पूर्व पार्षद हंसराज शर्मा, दमकल अधिकारी ताराचंद भट्ट, विक्रम राठौड़ आदि के अदम्य साहस की प्रशंसा की एवं ब्यावर के लिए गर्व बताया। इस दुखांतिका में केमिकल फैक्टरी मालिक सहित दो व्यक्तियों की मौके पर ही मौत हो गई थी तथा 52 लोगों को चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया था जहां से 12 लोगों को अजमेर व तीन को जयपुर रैफर किया गया। 15 लोगों का ब्यावर में ही

समारोह में ब्यावर गैस हादसे के वॉरियर्स का सम्मान किया।

उपचार शुरू किया और 21 को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई थी। इस घटनाक्रम में जिला कलेक्टर महेंद्र सिंह खड़गावत सहित पूरा प्रशासन अलर्ट मोड पर रहा, जिससे इस घटना को महाविनाश बनने से रोका गया। इससे पूर्व डिप्टी कसाना, पूर्व पार्षद हंसराज शर्मा, दमकल अधिकारी ताराचंद भट्ट और विक्रम सिंह राठौड़ का विप्र सेना के राजेंद्र शर्मा रीको, मनोज व्यास, ज्वाला प्रसाद उपाध्याय, संजय पाराशर, अनिल भोजक, नरेंद्र पारीक, एडवोकेट विजय पारीक, चंद्रप्रकाश अग्निहोत्री ने वॉरियर्स का साफा बंधवाकर तथा दुपट्टे ओढ़ाकर स्वागत किया। कार्यक्रम में दिनेश शर्मा, अनिल पाराशर, शम्भू दयाल व्यास, उम्मीद शर्मा, राहुल शर्मा, हरि गोपाल शर्मा, कैलाश शर्मा, नरेंद्र शर्मा, वैभव शर्मा, गोपाल शर्मा, परमेश्वर पारीक, संदीप शर्मा, लता शर्मा भाजपा नेत्री, ममता शर्मा, लता शर्मा, विष्णु जोशी, निरंजन शर्मा, एडवोकेट सुनील दवे, मनीष व्यास, मोदी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शंभू दयाल व्यास ने किया।

काछोला पंचायत में नियम विरुद्ध जारी किए खाली भूखण्ड के पट्टों की जांच शुरू

मांडलगढ़ बीडीओ ने चार सदस्यीय कमेटी को पट्टों की जांच में लगाया

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ की काछोला ग्राम पंचायत में कई लोगों के तथाकथित आवासीय भूखण्डों के 10 पट्टे और निकल कर सामने आए हैं, जिसमे मौक़े पर कब्जा और न ही 50 वर्ष पुराना मकान बना हुआ है, और न ही पट्टाधारी निवास कर रहे हैं। पंचायत प्रशासन ने नियम विरुद्ध बेशकीमती भूमि में पुश्तैनी पट्टे जारी कर दिए। दूसरी ओर मांडलगढ़ पंचायत समिति विकास अधिकारी ने तथाकथित पट्टों की जांच के लिए चार सदस्यीय कमेटी का गठन कर जांच शुरू की है।

- पंचायत प्रशासन ने बड़े असामियों के पूरे परिवार को जारी कर दिए थे कई पट्टे
- टीम को सात दिवस में जांच कर तथ्यात्मक जांच रिपॉर्ट पेश करने का आदेश जारी किया है

काछोला ग्राम पंचायत के उप सरपंच देवी लाल माली और आरटीआई कार्यकर्ता ओमनाथ योगी ने बताया कि पंचायत प्रशासन ने एक ही परिवार के 4 जनों को और बाहर से आकर रह रहे सरकारी कर्मचारियों को खाली भूखण्डों के दो-दो सौ रुपए में पुश्तैनी मकानों के पट्टे जारी कर दिए। एक ही परिवार में काछोला निवासी भैरू लाल पिता रामप्रसाद मंत्री को दो भूखण्ड का पट्टा क्रमांक 34/ 40 गुणा 42 फीट, दूसरा पट्टा आराजी नम्बर 1421 में क्रमांक 18/34 गुणा 40 फीट, भैरू लाल मंत्री की पत्नी सिमा मंत्री को भूखण्ड पट्टा क्रमांक 36/ 40 गुणा 60 फीट, भैरू लाल मंत्री के पुत्र अक्षय कुमार मंत्री को पट्टा क्रमांक 35/40 गुणा 60 फीट, जारी किए हैं, इसमें एक पट्टे में आराजी संख्या दर्ज की गई हैं। अन्य पट्टों में आराजी नम्बर ही नहीं दर्शाए गए हैं। अन्य 7 लोगों के पट्टे भी बिना आराजी नम्बर दर्ज किए जारी किए, जिसमें महेंद्र सिंह पिता सांवत सिंह राजपूत भूखण्ड पट्टा क्रमांक 44/40 गुणा 60 फीट, गिरधर कंवर पत्नी महेंद्र सिंह राजपूत, पट्टा क्रमांक 43/40 गुणा 60 फ़ीट, अरुण कुमार सूरजभान शर्मा पट्टा क्रमांक 45/40 गुणा 60 फीट, सूरजभान की पत्नी नीलम शर्मा को पट्टा क्रमांक 46/40 गुणा 60 फीट, पंकज कुमार पिता सूर्यकान्त त्रिवेदी को पट्टा क्रमांक 02/40 गुणा 60 फीट, गोपाल धाकड़ पिता भैरू लाल धाकड़ को पट्टा क्रमांक 27/ 40 गुणा 60 फीट और विधायक प्रतिनिधि संदीप सोनी पिता भंवरलाल सोनी को गोशाला के पास पट्टा क्रमांक 41/ 20 गुणा 90 वर्ग फीट के खाली भूखंडों में पुश्तैनी मकान के दो -दो सौ रुपए में 30 दिसम्बर 2024 को पट्टे जारी किए गए हैं, जबकि संदीप सोनी के पूर्व में जारी किए गए अन्य पट्टों का मामला न्यायालय में विचाराधीन चल रहा हैं। उक्त प्रकरण में ग्राम पंचायत द्वारा जारी किए गए 20 पट्टों के दस्तावेज आरटीआई कार्यकर्ता ओमनाथ योगी को तहसील कार्यालय में पंजीयन होने के बाद प्राप्त हुए हैं, जिसमें प्रारम्भिक तौर पर कई गड़बड़ियां पाई गई है। जिसकी शिकायत कलेक्टर, बीडीओ और एसीबी को भेजी गई है।मांडलगढ़ पंचायत समिति विकास अधिकारी संगीता व्यास ने बताया कि काछोला पंचायत में जारी किए गए तथाकथित पट्टों की शिकायत ग्रामीणों द्वारा मिलने के बाद जांच कमेटी गठित की गई है। जांच कमेटी में अतिरिक्त विकास अधिकारी प्रभुलाल धाकड़, सहायक विकास अधिकारी राजकुमार व्यास, सहायक विकास अधिकारी उदयलाल मीणा व सहायक लेखाधिकारी रामजस जाट को शामिल किया गया है। इस टीम को सात दिवस में जांच कर तथ्यात्मक जांच रिपॉर्ट पेश करने का आदेश जारी किया है।

डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने पाली मारवाड़ स्टेशन का दौरा किया

पाली/जोधपुर, (नि.सं.)। डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने सोमवार को पाली-मारवाड़ रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया तथा अधिकारियों को यात्री सुविधाओं की दृष्टि से व्याप्त

- डीआरएम ने स्टेशन को साफ-सुथरा और आदर्श स्टेशन बनाने के लिए आम यात्रियों से भी परिसर स्वच्छता की अपील की

मूलभूत खामियां तत्काल दूर करने के निर्देश दिए। डीआरएम का पदभार ग्रहण करने के बाद पहली बार पाली-मारवाड़ रेलवे स्टेशन के निरीक्षण पर पहुंचे। त्रिपाठी ने जोधपुर मंडल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ स्टेशन के दोनों प्लेटफॉर्म पर मुख्यत: यात्री सुविधाओं पेयजल, शौचालय, पर्याप्त बिजली और स्वच्छता की दृष्टि से निरीक्षण और व्याप्त खामियों पर नाराजगी जाहिर कर उनमें तुरंत सुधार कर यात्रियों को राहत पहुंचाने के स्पष्ट निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने प्लेटफॉर्म, टिकट घर, पूछताछ खिड़की, वेटिंग रूम, विश्रामालय, खानपान स्टाल, आरपीएफ चौकी, सीसीटीवी कैमरा रूम तथा कर्मचारियों के आवासों का निरीक्षण किया तथा व्याप्त कमियां दूर कर निरंतर मोनिटरिंग करने की हिदायत दी। इस दौरान उन्होंने पाली-मारवाड़ स्टेशन को साफ-सुथरा और आदर्श स्टेशन बनाने के लिए आम यात्रियों से भी परिसर स्वच्छता की अपील की।

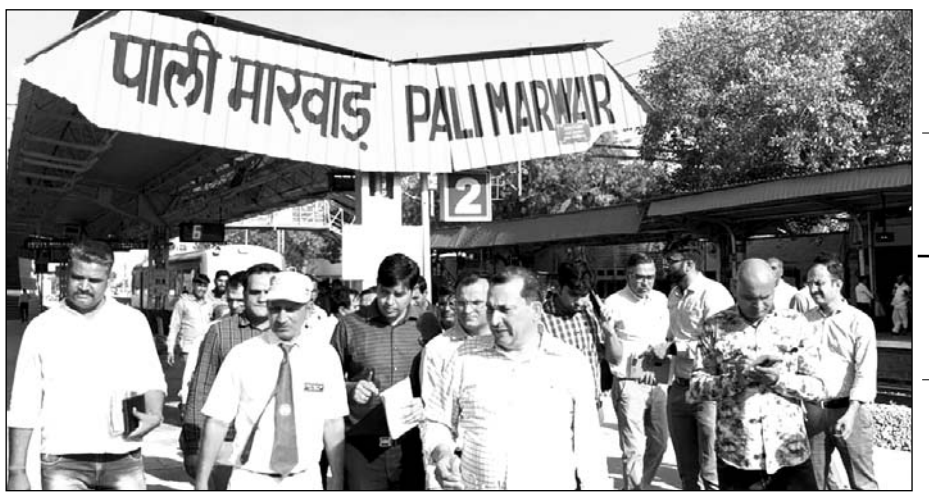

डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने पाली-मारवाड़ स्टेशन का निरीक्षण किया।

डीआरएम अनुराग त्रिपाठी के साथ निरीक्षण दौरे में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक विकास खेड़ा, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक लोकेश कुमार सिंह, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (समन्वय) मनोहर सिंह, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (सामान्य) नितेश कुमार मीणा, वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर (कर्षण) विपिन कुमार, वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी मुकेश कुमार मीणा, वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर (पॉवर) जोगेंद्र मीणा और वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (संकेत व दूरसंचार) सहित बड़ी संख्या में आरपीएफ जवान, निरीक्षक व सुपरवाइजर मौजूद थे।

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री ने हिन्दूसिंह के परिवार को ढांढस बंधाया

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने पंचायत समिति सदस्य हिन्दूसिंह राठौड़ के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनों को ढांढस बंधाया।

बाड़मेर, (नि.सं.)। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने सोमवार को बाड़मेर प्रवास के दौरान चौहटन में पंचायत समिति सदस्य हिन्दूसिंह राठौड़ के आकस्मिक निधन पर उनके परिजनों को ढांढस बंधाया। उन्होंने राठौड़ के निधन को अपूरणीय क्षति बताया।

- केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह राठौड़ ने परिजनों को सांत्वना दी

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने विभिन्न जनप्रतिनिधियों के साथ पंचायत समिति सदस्य हिन्दूसिंह राठौड़ के आवास पहुंचकर उनके शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि राठौड़ के आकस्मिक निधन से समाज के साथ उनको व्यक्तिगत क्षति हुई है। राठौड़ सदैव जनहितार्थ कार्यों के साथ आमजन के लिए तत्पर रहते थे।

उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने स्वर्गीय राठौड़ को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। केन्द्रीय पर्यटन मंत्री शेखावत ने स्वर्गीय राठौड़ की चाची विरध कंवर के आकस्मिक निधन होने पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। इस दौरान चौहटन विधायक आदूराम मेघवाल, पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी महाराज, सिवाना हमीरसिंह भायल, पूर्व केंद्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, समाजसेवी अनंतराम विश्नोई, स्वरूपसिंह खारा, चौहटन प्रधान रूपाराम सारण, जिला परिषद सदस्य रूपसिंह राठौड़ समेत कई जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कृषि मंडी में आग से लाखों रुपए की ऊन जली

ब्यावर, (निसं.)। उदयपुर रोड स्थित कृषि मंडी में अज्ञात कारणों से ऊन के ढेर में आग लग गई। आग लगने से सम्पूर्ण कृषि मंडी परिसर में अफरा-तफरी मच गई। आग लगने की सूचना पर नगर परिषद की दमकल मौके पर पहुंची। हवा के चलते जलती हुई आग का फैलाव लगभग आधे किलोमीटर तक फ़ैल गया। दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने का प्रयास किया। आगजनी की घटना में कृषि मंडी प्लेटफार्म पर रखा लाखों रुपए की ऊन जलकर राख हो गई।

अवैध मादक पदार्थ सप्लायर गिरफ्तार

चौमू/कालाडेरा, (निसं)। कालाडेरा थाना पुलिस ने मादक पदार्थ (गांजा) सप्लायर को गिरफ्तार किया है। आनन्द शर्मा उप महानिरीक्षक पुलिस सह पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ग्रामीण ने जानकारी देते हुए बताया है कि तीन अप्रैल को डीएसटी टीम जयपुर ग्रामीण व पुलिस थाना गोविन्दगढ़ की टीम द्वारा ऑपरेशन नॉकआउट अभियान के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ गांजा 11.815 किलोग्राम जप्त कर एक आरोपी हरिपाल मीणा को गिरफ्तार किया था। प्रकरण का अग्रिम अनुसंधान कालाडेरा थानाधिकारी बाबूलाल मीणा द्वारा किया जा रहा था। प्रकरण में गिरफ्तारखुदा नशा कारोबारी से मादक पदार्थ गांजा किस व्यक्ति से लेकर आया इसके संबंध में अनुसंधान किया गया तो आरोपी हरिपाल मीणा निवासी गुवारडी थाना कालाडेरा ने बताया कि उक्त गांजा में अभिषेक मीणा उर्फ काना पुत्र भगवान सहाय निवासी मीणों का मोहल्ला उदयपुरिया थाना सामोद से लेकर आया था।

- पुलिस ने नॉकआउट अभियान के तहत गांजा जब्त कर एक आरोपी को गिरफ्तार किया था
- पुलिस ने तस्कर से पूछताछ के बाद दूसरे आरोपी को गिरफ्तार किया

प्रकरण में आरोपी गांजा सप्लायर की गिरफ्तारी हेतु थानाधिकारी कालाडेरा बाबूलाल मीणा के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा गांजा सप्लाई करने के मामले में वांछित मुल्जिम अभिषेक मीणा उर्फ काना को दस्तयाब कर पूछताछ की गई तो हरिपाल मीणा को अवैध गांजा देना बताने पर प्रकरण में गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार मुल्जिम अभिषेक मीणा पूर्व में भी पुलिस थाना हरमाड़ा, चौमू, मनोहरपुर व अजीतगढ़ थानों में अवैध गांजे रखने व सप्लाई करने के मामले में जेल जा चुका है। गिरफ्तार आरोपी अभिषेक मीणा मीणों का मोहल्ला उदयपुरिया थाना सामोद जिला जयपुर ग्रामीण का रहने वाला है।

डोटासरा और जूली उदयपुर में सीआईडी सीबी के कार्यालय में पेश हुए

जयपुर/उदयपुर, (कासं)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सोमवार को उदयपुर में सीआईडी सीबी के कार्यालय में पेश हुए और कोटा मामले में अपना बयान दिया। बयान देने के बाद उन्होंने राजस्थान सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि सरकार के मंत्री मदन दिलावर पर एक दर्जन से ज्यादा मामले हैं, इस पर भी सरकार को गौर कर आगे बढ़ाना चाहिए।

डोटासरा और जूली उदयपुर शहर के माछला मगरा स्थित सीआईडी सीबी क्राइम ब्रांच में पहुंचे और यहां एडिशनल एसपी अनिल मीणा के समक्ष पेश हुए। दोनों ने कोटा में दर्ज मामले की जांच में बयान दिए। बाहर आकर डोटासरा ने कहा कि जो भी बयान उन्होंने रिकॉर्ड किए उसमें हमने सहयोग किया और अपना बयान दिया। डोटासरा ने कहा कि उनके पीएसओ के पास सीआईडी से फोन आया और कहा कि कोटा वाले मामले में बयान लेने हैं तो जयपुर आएं। डोटासरा ने कहा कि वे खुद ही उदयपुर आकर बयान दे देंगे।

इस दौरान डोटासरा ने कहा कि कोटा के अंदर कोटा देहात की ओर से सरकार की खिलाफ जनता के मुद्दों को लेकर धरना प्रदर्शन किया था। उसमें मैं और जूली शामिल हुए थे। शांतिपूर्वक सब कुछ हुआ और सरकार की समस्याओं को लेकर हमने आवाज उठाई। वहां सरकार के दबाव में रात को एक गलत एफआईआर दर्ज कराई और उसी को लेकर आज यहां हम कानून का पालन करते हुए अपना बयान दर्ज कराया और पूछताछ की उसका जवाब दिया। मैं सरकार को कहना चाहता हूं जनता के कल्याण और समाधान के लिए सरकार है न कि प्रतिपक्ष की आवाज दबाने के लिए। ये हम और जनता बर्दाश्त नहीं करेगी। जो आरोप हम पर लगाए गए हैं वह हम राजनीतिक और उच्च अधिकारियों के दबाव में हुआ है। हमने पुलिस के साथ धक्का-मुक्की की इस तरह की रिपोर्ट दी जबकि ऐसा हमने नहीं किया है। उन्होंने कहा कि मैं कहना चाहता हूं कि कोई कितना भी बड़ा अधिकारी हो वह जनता के लिए है जनता को कुचलने के लिए नहीं है।

- डोटासरा ने कहा कि मंत्री मदन दिलावर पर 14 मुकदमे दर्ज हैं, उनको भी बुलाओ

डोटासरा ने कहा सरकार में शर्म बची है तो शिक्षामंत्री मदन दिलावर के खिलाफ 14 मुकदमे दर्ज हैं आज तक उसका चालान नहीं हुआ है, उनको भी बुलाओ। कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति हो उसके खिलाफ अनुसंधान जल्द हो, मुलजिम बनता है तो जल्दी बनाए नहीं तो उस पर एफआर लगाएं।

विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि कांग्रेस के कार्यकर्ता निडर यौद्धा राहुल गांधी के सिपाही हैं। वे भी राहुल की तरह भाजपा से न डरेंगे, न झुकेंगे। हम सब मिलकर भाजपा से डटकर लडेंगे। जूली किसानों के हक-अधिकारों की लड़ाई लड़ने के दौरान 24 जून, 24 को सरकार द्वारा उनके खिलाफ दर्ज करवाये गये झूठे मुकदमे के सिलसिले में बयान दर्ज करवाने के लिये उदयपुर स्थित सीआईडी सी.बी. के कार्यालय पहुंचे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस किसान, मजदूर, दलित, शोषित और पीड़ित के अधिकारों की रक्षा के लिये सदैव लडती रहेगी। कांग्रेस भाजपा सरकार की दमनकारी नीतियों के आगे झुकने वाली नहीं है।

प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने सरकार को चेतावनी दी है कि सरकार ने विधानसभा के सदन में भी प्रतिपक्ष की आवाज को दबाने का काम किया और सदन के बाहर भी सत्ता की ताकत के बल पर विपक्ष को दबायेगी, तो कांग्रेस इसे बर्दाश्त नहीं करेगी। वह जनता की आवाज बनकर उनके हक-हकूक की रक्षा के लिये सदन से लेकर सड़क तक संघर्ष करती रहेगी।

संक्षिप्त

पैंशनर्स समाज उपशाखा फुलेरा की बैठक आयोजित

फुलेरा । कस्बे के गणगौरी बाजार स्थित श्री रामद्वारा भवन सभागार में सायं 5 बजे राजस्थान पैंशनर्स समाज उपशाखा फुलेरा की एक आवश्यक बैठक शक्ति सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। बैठक में केन्द्र सरकार द्वारा 8 वें वेतन आयोग का पैंशनर्स को कोई लाभ नहीं देने के विरोध में तथा पैंशनर्स को दो भागों में बांटने का पैंशनर्स समाज द्वारा घोर निन्दा की गयी। साथ ही राजस्थान पैंशनर्स समाज की प्रान्तीय कार्यकारिणी के आवाह्न पर लिए गये आंदोलन को सफल बनाने के लिए प्रत्येक उपशाखा द्वारा 9 अप्रेल को रैली निकाल कर उपखण्ड अधिकारी सांभरलेक को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन प्रेषित करने का निर्णय लिया गया। इसके लिए फुलेरा सहित आसपास के क्षेत्रों के समस्त पैंशनर्स से अपील करते हुए कहा कि 9 अप्रेल को प्रातः 9 बजे गणगौरी बाजार स्थित श्री रामद्वारा पर एकत्रित होकर रैली रवाना होकर अम्बेडकर सर्किल पर सभा में परिवर्तित होगी। जहां विभिन्न वक्ताओं द्वारा अपने-अपने विचार व्यक्त किये होकर अम्बेडकर सर्किल पर सभा में परिवर्तित होगी। जहां विभिन्न वक्ताओं द्वारा अपने विचार रखे जायेंगे।

धूमधाम से मनाया श्रीराम जन्मोत्सव

कोटपूतली। कस्बे के आजाद चौक तहसील परिसर स्थित श्री सीताराम मंदिर में श्रीराम जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। श्रीराम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अखण्ड रामायण पाठ व गायत्री परिवार के सहयोग से 05 कुण्डी गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें यजमान के रूप में बालकिशन शर्मा, अजय कुमार, रणजीत बंसल, सुरेश मेहरा, नवल सैनी, हीरालाल सैनी, सुरेश सैनी, नत्थूराम सैनी आदि ने सपत्नि यज्ञ में आहुतियां देकर क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। वहीं गायत्री परिवार शाखा कोटपूतली के सानिध्य में दीप यज्ञ आयोजित किया गया तथा 21 दीप जलाकर मंदिर में दीप माला बनाई गई। इस दौरान मंदिर व आसपास का क्षेत्र दीपों से जगमगा उठा। इस मौके पर एड. बजरंग लाल शर्मा, अशोक सुरेलिया, दीनदयाल गौड़, सुरेश कुमार, कैलाश शर्मा, महेन्द्र कुमार शर्मा, बद्रीप्रसाद शर्मा, किशनलाल शर्मा, विजय छीपा, भोलाराम छीपा, नितेश शर्मा, आशु पुजारी समेत अनेक श्रद्धालू मौजूद रहे।

पानी सप्लाई की मांग

दूदू । नगर पालिका क्षेत्र दूदू के अधीन विभिन्न कॉलोनी में जलदाय विभाग द्वारा संचालित बीसलपुर पेयजल सप्लाई योजना में पर्याप्त सप्लाई नहीं किए जाने के कारण उपभोक्ताओं को पीने का पानी 300 से 400 प्रति टैंकर खरीद कर देने का मजदूर होना पड़ रहा है विभाग द्वारा बीसलपुर की जो लाइन डाली गई में एक माह में 15 दिन पानी सप्लाई की जाती है उस में मात्र एक मटकी भी नहीं भर पाती है उपभोक्ताओं द्वारा पावर हाउस के पीछे गणेश कॉलोनी इंदिरा कॉलोनी रघुनाथ कॉलोनी गाड़िया लोहार कॉलोनी की महिलाओं द्वारा जलदाय विभाग कार्यालय में जाकर भी पानी सप्लाई की मांग को लेकर आक्रोश जताया था लेकिन विभाग पर कोई असर नहीं हुआ जनता को पेयजल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

मण्डी में व्यापार चार दिन बाद पुनः शुरू

निवाई। कृषि उपज मण्डी में चार दिन बाद सोमवार को व्यापार पुनः शुरू हो गया है। जिससे मंडी में रौनक लोट आई है। पिछले चार दिन तक पल्लेदारों ने हडताल कर रखी थी जिसकी वजह से मंडी व्यापार बंद था। शनिवार को पल्लेदारों, व्यपारियों व किसानों में सहमति होने के बाद सोमवार को पुनः मंडी व्यापार शुरू हो गया। व्यापार मण्डल संरक्षक ताराचन्द बोहरा एवं अध्यक्ष ओमप्रकाश चंवरिया ने बताया कृषि उपज मण्डी में पल्लेदारों की हडताल के चलते चार दिन तक मंडी व्यापार बन्द था। जिसको लेकर शनिवार की शाम पल्लेदारों, व्यपारियों व किसानों में सहमति बनी।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

बैठक में एजेंडा के अनुरूप पूरी तैयारी के साथ अधिकारी उपस्थित हो : कलेक्टर

खैरथल जिला सचिवालय पर आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को निर्देशित करते जिला कलेक्टर किशोर कुमार।

- एमपी/एमएलए परिवादों की समीक्षा शेष परिवादों के जवाब भिजवाने, अहिंसा सर्किल पर पोल शिफ्टिंग कार्य को शीघ्र पूर्ण करने, जेल प्रहरी परीक्षा सफलतापूर्वक कराने सहित दिए निर्देश

खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जिले के विभिन्न विभागों की साप्ताहिक समीक्षा बैठक हुई । बैठक में कलेक्टर ने विभागवार अधिकारियों से सरकार की ओर से संचालित योजनाओं एवं विकास के कामों सहित बिजली पानी को लेकर समीक्षा की व शत-प्रतिशत काम को पूरा कर आमजन को राहत प्रदान करने के लिए निर्देशित किया।

बैठक में जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने विभागों को भेजे गए एमपी/एमएलए परिवादों की समीक्षा कर शेष परिवादों के जवाब भिजवाने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने प्रस्तावित प्रभारी मंत्री एवं दिशा की बैठक हेतु अधिकारियों को अपने विभाग से संबंधित प्रोग्रेस की पीपीटी भेजने के साथ ही एजेंडा के अनुसार पूरी तैयारी कर बैठक में उपस्थित रहने के लिए निर्देश दिए।

कलेक्टर ने बैठक में विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि अहिंसा सर्किल पर पोल शिफ्टिंग कार्य को शीघ्र पूर्ण कराए साथ ही उन्होंने एग्रीकल्चर कनेक्शन की प्रगति जानी। शिक्षा विभाग एवं कोषाधिकारी को 12 अप्रैल को आयोजित होने वाली जेल प्रहरी परीक्षा 2024 को सफलतापूर्वक कराने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक में जिला कलेक्टर ने बजट 2025-26 में की गई घोषणाओं को समयबद्ध धरातल पर उतारने के लिए संबंधित विभागों द्वारा की जा रही कार्यवाहियों की विभागवार समीक्षा कि। संपर्क पोर्टल पर लंबित चल रहे परिवादों का समय पर निस्तारण कर आमजन को राहत पहुंचाने एवं एवरेज डिस्पोजल टाइम में सुधार करने के निर्देश दिए। आगामी ग्रीष्म ऋतु को देखते हुए ग्रीष्म काल में पेयजल आपूर्ति व्यवस्था एवं जल जीवन मिशन की प्रगति की समीक्षा कर जलदाय विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने जल शक्ति अभियान के तहत संबंधित अधिकारियों को जल संरक्षण से संबंध में किए गए कार्यों को पोर्टल पर अपडेट करने के लिए भी निर्देशित किया। जिला कलक्टर ने सीएमएचओ को निर्देशित किया कि मौसम में बदलाव को देखते हुए मौसमी बीमारियों के रोकथाम के लिए उपयुक्त उपाय सुनिश्चित करें। उन्होंने बीमारियों की रोकथाम की निरन्तर मॉनिटरिंग करते हुए अस्पतालों में सुविधाएें बढाने, मरीजों को सरकारी योजनाओं का लाभ देने एवं नियमित रूप से जनता क्लीनिकों एवं चिकित्सा संस्थानों के निरीक्षण के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने गेहूं एवं सरसों की एमएसपी खरीद के संबंध में जानकारी प्राप्त की ओर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने समाज कल्याण विभाग को पालनहार व पेंशन सत्यापन शत प्रतिशत पूर्ण करने, विद्युत निगम को विभागीय योजनाओं के अनुसार प्रचार-प्रसार कर पात्र लोगों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अधिशासी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग आदेश कुमार, कोऑपरेटिव वेद प्रकाश सैनी, बिजली विभाग, समाज कल्याण रमेश दहमीवाल, नगर परिषद कनिष्क अभियंता मोतीलाल वर्मा, इरिगेशन, महिला एवं बाल विकास, पुलिस, राजीविका, बिजली, कृषि, वन, शिक्षा, सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

सत्संग का आयोजन आज

कोटपूतली। निकटवर्ती ग्राम गोनेड़ा के ब्रह्मलीन गिरवरदास महाराज की तपोस्थली भूमि में सताईसा संत समाज के अध्यक्ष महंत मानदास महाराज के सानिध्य में हर वर्ष की भांति बुधवार को मेला भराया जायेगा। महंत मानदास महाराज ने बताया कि मेले से पूर्व मंगलवार रात्रि को सत्संग का आयोजन होगा। जिसमें दूर दराज से अनेक गायक कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे।

सहायक अभियंता को सौंपा ज्ञापन

निवाई। ग्राम रजवास में स्थित ब्राह्मणों का मोहल्ला व कई वार्डों में पानी नहीं आ रहा है। जिससे लोगों को परेशानी उठानी पड़ रही है। सोमवार को ग्रामीणों ने विभाग के सहायक अभियंता को ज्ञापन सौंपकर समस्या का समाधान करने की मांग की है। ग्रामीणों ने बताया कि विभाग की राइजनिंग लाईन से लोगों ने अवैध नल कनेक्शन ले लिए हैं। जिसकी वजह से गांव में पूर्ण दाब से पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। इस बारे में उच्च अधिकारियों को कई बार अवगत कराने के बाद भी समस्या का समाधान करने हो पाया है। जिससे परेशानी हो रही है।

ग्रामीणों ने विभाग के सहायक अभियंता को ज्ञापन सौंपकर कर पेयजलापूर्ति सुचारू करने की मांग की है। इस दौरान संजय शर्मा, शिवानी गौतम, गायत्री गौतम, मुकेशकुमार शर्मा, चंद्रप्रकाश शर्मा व सूरज गुर्जर सहित समस्त वार्डवासी मौजूद थे। इधर सहायक अभियंता ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में पेयजलापूर्ति को सुचारू रखने का जिम्मा पेयजल एवं स्वच्छता समिति को सौंप दिया गया है। इसकी सम्पूर्ण देखभाल समिति को ही करनी है। विभाग उसमें पूरा सहयोग करेगा।

'महिलाओं को साइबर प्रशिक्षण देकर फ्रॉड से बचाएं'

- वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा विषय पर हुई बैठक, 10 व 12 में पढ़ने वाली किशोरी बालिकाओं को भी प्रशिक्षण देने के लिए किया निर्देशित

अलवर। जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता में सोमवार को वित्तीय समावेशन के लाभ सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने के संबंध में मिनी सचिवालय स्थित कलक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित हुई। बैठक में वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा विषय पर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

जिला कलेक्टर बैठक में कहा कि वर्तमान तकनीकी युग में प्रत्येक व्यक्ति को वित्तीय साक्षर करने के साथ साइबर सुरक्षा के प्रति सजग रहने की महती आवश्यकता है। इसके लिए उन्होंने नाबार्ड के डीडीएम, राजीविका की डीपीएम एवं लीड बैंक अधिकारी को निर्देशित किया कि कार्य योजना बनाकर जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों की कामकाजी महिलाओं को वित्तीय साक्षरता के प्रशिक्षण के साथ साइबर सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया जाए, ताकि वर्तमान डिजिटल समय में वे अपने प्रोडेक्ट को प्रतिस्पर्धी बनाने के साथ साइबर फ्रोड से सुरक्षित रहे तथा वित्तीय साक्षरता भी रहे।

इसी के साथ उन्होंने सरकारी स्कूलों की कक्षा 11वीं व 12वीं की किशोरी बालिकाओं को भी इसके लिए लक्षित समूह के रूप में लेकर प्रशिक्षण कराने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि जब किशोरी बालिकाएं तकनीकी रूप से वित्तीय साक्षर होंगी तो वह अपने परिवार की अन्य महिलाओं को भी इसके बारे में साक्षर करेंगी। इसके लिए उन्होंने मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देश दिये कि नो बैग डे के दिन उक्त अधिकारियों के सहयोग से वित्तीय साक्षरता व साइबर सुरक्षा के संबंध में जागरूकता सेशन व प्रशिक्षण दिए जाने की व्यवस्था करावे।

जिला कलेक्टर ने नाबार्ड के डीडीएम, राजीविका की डीपीएम एवं लीड बैंक अधिकारी को निर्देश दिए कि वित्तीय साक्षरता व साइबर सुरक्षा दिए जाने के लिए तीन पृथक-पृथक कोर्स तैयार करावे, जिसमें पहला कोर्स एसएचजी की ऐसी महिला जो तकनीकी रूप से जानकार हो व भली-भांति अपना कार्य कर रही हो, दूसरा कोर्स एसएचजी से जुडी ऐसी महिलाएं जिन्हें डिजिटल तकनीकी की जानकारी नहीं है तथा तीसरा कोर्स कक्षा 11वीं और 12वीं की किशोरी बालिकाओं को दृष्टिगत रखते हुए तैयार करावे।

उन्होंने राजीविका की डीपीएम को निर्देशित किया कि अलवर जिले में अच्छी गुणवत्ता के स्थानीय हस्त उत्पाद महिला समूहों द्वारा तैयार किए जा रहे हैं।

गैस की लाइन डालने के दौरान पेयजल लाइन टूटी

पीपलू। झिराना से चौगाई पंप हाउस के लिए बिसलपुर पेयजल की लाइन झिराना से बोरखडींकला के बीच से टूट गई। पाइपलाइन टूटने कारण इस समय गैस की लाइन डालने के लिए चल रही खुदाई के दौरान जेसीबी से मशीन टूट गई। पाइपलाइन टूट ने से चौगाई पंप हाउस में होने वाली बिसलपुर की सप्लाई चार दिन से बंद है। एरिया मैनेजर मुकेश चौधरी ने बताया कि गैस की लाइन डालने के लिए नाली की खुदाई जेसीबी मशीन से की जा रही है। जिससे झिराना पंप हाउस से चौगाई पंप हाउस की पानी की सप्लाई लाइन कहीं जगह से टूट गई। पेयजल सप्लाई लाइन टूट जाने से चौगाई पंप हाउस से होने वाली 38 गांवों की पेयजल आपूर्ति बंद है। लाइन की मरम्मत कार्य किया जा रहा है। जल्दी ही पानी की सप्लाई चालू की जाएगी। रामलाल, मदनलाल सेन, सीताराम माली, हनुमान व गोपाल लाल ने बताया की वर्तमान में गर्मी का सीजन शुरू हो गया है। वहीं शादी विवाह का सीजन चल रहा है। इस समय पानी कि आवश्यकता अधिक होने से काफी मुश्किल हो रही है।

कांग्रेस की मजबूती के लिये विधानसभा प्रभारी ने ली बैठक

मालपुरा विधानसभा प्रभारी सुरेश पारीक ने मालपुरा मे ब्लॉक कांगेसजनो की ली बैठक।

मालपुरा। मालपुरा टोडारायसिंह विधानसभा प्रभारी सुशील पारीक ने सोमवार को मालपुरा ब्लॉक कांग्रेस कमेटी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओ ने बैठक ले ब्लॉक से लेकर बुथ स्तर तक कांग्रेस पार्टी की मजबूती को लेकर कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर संगठनहित मे मजबूती से कार्य करने का संदेश दिया।

घासीलाल चौधरी ने आगामी विधानसभा चुनाव मे पार्टी की एकजुटता के लिये कार्य करने व पंचायत राज चुनाव व नगरपालिका चुनाव मे कांगे स की जीत का संकल्प लेने का कार्यकर्ताओ से आव्हान किया। ब्लॉक अध्यक्ष गोगाराम जाट ने विधानसभा क्षैत्र मे भाजपा सरकार की नाकामियों को अंतिम छोर तक पहुंचा भाजपा की कथनी व करनी मे फर्क जनता को बताने का आ ान किया। बडी संख्या मे मौजूद कांग्रेसजनो ने एकस्वर मे पंचायत राज व नगरपालिका चुनाव मे कांग्रेस की जीत की बात कही। इस दौरान बैठक मे मौजूद जिलाध्यक्ष हरिप्रसाद बैरवा, यशवीर सुरा व श्याम सुन्दर शर्मा सहित शहर अध्यक्ष मो. इस्हाक नकवी, किशनलाल फगोडिया, अवधेश शर्मा, मूलशंकर शर्मा, छोगालाल गुर्जर, कन्हैयालाल सैनी, भंवर मुवाल, मुंशी खां, रामदेव बैरवा, पवन मेन्दवास्या आदि ने भी संगठन की मजबूती पर जोर दिया।

बीसलपुर लाइन बदलने तक सांभर में रहेगी पेयजल समस्या

सांभरझील, (निसं)। मालपुरा से सांभर तक बीसलपुर की पुरानी कमजोर पेयजल लाइन के स्थान पर दूसरी (नवीन)लाइन बिछाने का काम कंप्लीट होने तक सांभर में पेयजल सप्लाई आगामी चार-पांच महीने तक और नियमित होने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। करीब 4 महीने से पेयजल सप्लाई का सिस्टम पूरी तरह से गड़बड़ाया हुआ है। गड़बड़ाया हुआ इसलिए है की एक तो पुरानी पड़ चुकी बीसलपुर की कमजोर लाइन पर पानी सप्लाई का अत्यधिक पडने के कारण आए दिन डेढ़ सौ किलोमीटर की दूरी में किसी न किसी क्षेत्र में फट जाती है, जिसकी वजह से पानी सप्लाई सांभर नहीं पहुंच पाती है। पाइपलाइन को जैसे तैसे दुरुस्त करने में ही तीन-चार-पांच दिन लग जाते हैं। जब तक पाइपलाइन ठीक नहीं होती तब तक पानी सप्लाई ठप हो जाती है। सांभर के सहायक अभियंता संजय कुमार से बात करने पर बताया कि सांभर फुलेरा के लिए हमारी तरफ से डिमांड गर्मी के मौसम को देखते हुए 45 लाख लीटर की रखी गई है लेकिन बीसलपुर परियोजना से कटौती के कारण करीब 10-12 लाख ही पानी विभाग को दिया जा रहा है चूंकि सप्लाई का सारा सिस्टम बीसलपुर परियोजना के अधीन ही है और विभाग केवल सप्लाई और स्थानीय पेयजल लाइन की गड़बड़ी के काम को सुधारने तक ही सीमित है।

पानी सप्लाई हेतु हमारी ओर से पत्राचार करके डिमांड बढ़ाने हेतु आग्रह किया गया है लेकिन अभी तक लग नहीं रहा है कि मांग के आधार पर पानी उपलब्ध हो पाएगा। हमारा आमजन से अनुरोध है कि गर्मी के सीजन को देखते हुए पानी को व्यर्थ नहीं जाने दें। अपने हिसाब से पानी का स्टोरेज भी करके रखें क्योंकि बीसलपुर से पानी मिलने के आधार पर ही सप्लाई संभव है।

रामलला के जयकारों से भक्तिमय हुआ माहौल, निकली शोभायात्रा

रामनवमी के पावन पर्व पर रामलला की भव्य शोभायात्रा निकाली।

पावटा। कस्बा पावटा में रामनवमी शोभायात्रा हिंदू उत्सव समिति पावटा के नेतृत्व में रामनवमी के पावन पर्व पर रामलला की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यह शोभायात्रा पावटा घंटाघर चौक स्थित सीताराम मंदिर से गोपाल भैया महंत मोहनदास महाराज, मंदिर पुजारी वीरेंद्र, विनोद, मनीष, राहुल के सान्निध्य में भगवान राम की विधिवत पूजा अर्चना के साथ शोभायात्रा का शुभारम्भ किया गया। भगवान राम के जन्मोत्सव पर भव्य शोभायात्रा व भगवा रैली मे आस्था का जनसैलाब उमड़ा।

मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के प्रति अगाध विश्वास है। यही वजह है कि रामनवमी के दिन पूरा शहर राममय हुआ। हवा में लहराते भगवा ध्वज पर पुष्प वर्षा कर श्रीराम नाम के उद्घोष से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो गया। वही भगवान श्रीराम की शोभायात्रा व भगवा रैली में पावटा कस्बे के मुख्य मार्गो से होते हुए वापस सीताराम मंदिर पर आकर सामाप्त हुई। इस दौरान भगवान की आरती के बाद प्रसाद वितरण किया गया। शोभायात्रा में डीजे, ढोल ताशा, ध्वजा पताकाओ से सुसज्जित मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम रथ आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहा। नगर वासियों ने अपने आराध्य देव की जय- जय कार के साथ पुष्प वर्षा कर अगवानी की। इस बार की शोभायात्रा में झांकी शिव तांडव व हनुमान जी की प्रस्तुति व पुष्प वर्षा व महाआरती विशेष आकर्षण रहे।

वही पालकी में विराजमान भगवान राम की भव्य सजावट युक्त रथ की चहुओर प्रशंसा हो रही थी।वही इस दौरान महंत मोहनदास महाराज व महंत भगवत दास महाराज ने कहा कि भगवान श्रीराम जन-जन और कण कण में व्याप्त है। उनका जन्मोत्सव जनमानस का लोकोत्सव हैं। वही सर्व समाज द्वारा जगह जगह शोभायात्रा का स्वागत कर रामभक्तो के लिए जलपान की व्यवस्था की गई। इस दौरान पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, भाजपा नेता कन्हैयालाल मीणा सहित जनप्रतिनिधियों व ग्रामीणों ने इस भव्य शोभायात्रा में भाग लिया।

आम सूचना दिनांक 7.4.2025 आमजन को सूचित किया जाता है कि मेरे अभिभाष्य पांचूराम बैरवा पुत्र मांगीलाल, निवासी ग्राम पालड़ी मीणा, भट्टा वाली ढाणी जयपुर द्वारा न्यायालय एसीजेएम 14 जयपुर प्रथम में वाद उनवानी पांचूराम बनाम घनश्याम बगैरह वाद क्रमांक 57/24 बाबत दस्तावेज निरस्त किये जाने व घोषणा व स्थायी निषेधाज्ञा का दायर होकर डिक्री दिनांक 22.12.2024 को हो गया है। मेरा अभिभाष्य दावे में वर्णित संपत्ति मुहाना टर्मिनल मार्केट स्थित बी-145 का वैधानिक स्वामी है। इस प्लॉट के संदर्भ में मेरे अभिभाष्य के अलावा अन्य किसी भी व्यक्ति से किया गया संव्यवहार शून्य होगा।
उदय सिंह शेखावत, एडवोकेट

कार्यालय उप आवासन आयुक्त वृत-प्रथम, राजस्थान आवासन मण्डल, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:14 जाहिर आम-सूचना दिनांक:01.04.2025
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर योजना में आवास/फ्लैट संख्या 171/83 (LIG), (एरिया 60.00 वर्गमीटर) का आवंटन श्री बद्रीनारायण बैरवा पुत्र श्री रामधन बैरवा को किया गया था। जिसका आवंटन पत्र क्रमांक 8424 दिनांक 30.12.2003 को जारी किया गया था। जिसके पंजीयन प्रपत्र मूल आंवटी श्री बद्रीनारायण बैरवा के पक्ष में उप पंजीयक सांगानेर प्रथम के दिनांक 23.12.2010 को पंजीकृत करवाया गये। श्री बद्रीनारायण बैरवा द्वारा उक्त आवास का विक्रय पत्र श्री रामगोपाल मीणा पुत्र श्री रामसिंह मीणा के पक्ष में उप पंजीयक सांगानेर प्रथम के यहा दिनांक 19.01.2011 को पंजीकृत करवाया गया। श्री रामगोपाल मीणा की मृत्यु दिनांक 18.08.2018 को हो जाने के कारण उनकी पत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी पत्नी स्व. श्री रामगोपाल मीणा द्वारा आवासन मण्डल मे पंजीकृत हक त्याग पत्र के आधार पर अपना नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कराने बाबत आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है, श्रीमती सुमित्रा देवी पत्नी स्व. श्री रामगोपाल मीणा का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
भवदीय, सम्पदा प्रबन्धक, राज. आवा. मण्डल वृत-प्रथम, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
www.jda.urban.rajasthan.gov.in
क्रमांक: एफ( )जविप्रा/उपा/जोन-11/2025/डी-5466 दिनांक 4/04/25
सार्वजनिक सूचना
[illegible]
उपायुक्त जोन-11, जविप्रा,जयपुर।

खोया-पाया

मेरे मकान - 91/73 मानसरोवर का कन्वेंस डीड, परिपिचुअल लीज एवं कब्जा पत्र मानसरोवर में गिर गया। मिलने पर सूचित करें- 9530387779

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर की आवासीय योजना- बक्शावाला जेडीए स्कीम, जयपुर के प्लॉट नम्बर ए-64 का मूल आवंटन पत्र, संशोधित आवंटन पत्र, कब्जा पत्र कहीं गुम हो गया है। मिलनेपर सूचित करें। लक्ष्मी देवी टांक - मोबाइल नम्बर 7014151080

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक:91 जाहिर आम-सूचना दिनांक:07.04.2025
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 75/286 (MIG-A), (एरिया 90.00 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री मनोज कुमार बिदावत पुत्र स्व. श्री विष्णु लाल बिदावत को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 193 दिनांक 29.03.2005 को जारी किया गया। जिसका भौतिक कब्जा दिनांक 11.05.2005 को प्राप्त कर लिया गया। श्री मनोज कुमार बिदावत की मृत्यु दिनांक 08.04.2024 को हो जाने के कारण इनकी पत्नी श्रीमती मीरा वर्मा पत्नी स्व. श्री मनोज कुमार द्वारा उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है, श्रीमती मीरा वर्मा पत्नी स्व. श्री मनोज कुमार का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक, राज. आवा. मण्डल वृत-प्रथम, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर

आम सूचना सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि खनन पट्टा वास्ते खनिज सरपेन्टाइन निकट ग्राम रोहनवाडा, तहसील व जिला डूंगरपुर में 10,000 वर्गमीटर क्षेत्र में खनिज अभियन्ता महोदय उदयपुर के आदेश क्रमांक खअ/उदय/सीसी/3/डूंगर/एमआर/एमएल/318/91/620 दिनांक 08.07.1994 से श्री गिरीराज प्रसाद झकरोदिया के पक्ष में स्वीकृत किया गया था, जिसका एम.एल. नम्बर-1017/91 है। [illegible]
जयपुर/दिनांक- (कुलदीप शर्मा) मो.नं. 9829732931

आम सूचना
मेरा एक खरीदशुदा भूखण्ड नम्बर 52, जिसका कुल क्षेत्रफल 1365 वर्गफिट हैं जिसे मैंने बुधराम सैनी व हरकेश सैनी से दिनांक 03.05.2016 को जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र खरीद किया था। उक्त मूल रजिस्ट्री टेम्पु से स्टेशन से घर आते समय दिनांक 15.07.2024 को रास्ते कहीं गिर गयी। जिसकी एफआईआर मैंने दिनांक 27.08.2024 को थाना गंगापुर सिटी में करा दी है। उक्त भूखण्ड को मैं विक्रय करना चाहती हूँ यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सात दिवस के अन्दर उपपंजीयन कार्यालय गंगापुर सिटी में दर्ज करा सकते हैं।
प्रार्थी-
किरण देवी पत्नि मनोज सैनी निवासी शिव कॉलोनी, नागाओं की छावनी, गंगापुर सिटी जिला सवाई माधोपुर
मो. 8302172431

नाम परिवर्तन

I Renu Urf Ratni Devi D/o Mangej Ram and W/o Moolchand Jat R/o Ward No.-7, Burja Ki Dhani, Khiroti, Sikar, Sri Madhopur, Rajasthan-332705, have changed my name to Renu Devi.

मैंने परमात्मा पाण्डेय पुत्र पृथ्वीनाथ पाण्डेय निवासी 19-ए, रामनगर एच विस्तार, स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर अपना नाम परमात्मा कुमार पाण्डेय से बदलकर परमात्मा पाण्डेय रख लिया है। भविष्य में मुझे परमात्मा पाण्डेय के नाम से जाना जावे।

I have change my name from Anil Kumar M.R. Sharma to Anil Kumar Sharma S/o Mamraj Sharma, R/o 5/195, SFS, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur, Rajasthan-302020. In future I Know and recognised by my new name.

I have my Name from Hansa Kumari Nareda to Hansa Sharma W/o Shree Anil Kumar Sharma, R/o 5/195, SFS, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur, Rajasthan-302020. In future I Know and recognised by my new name.

मैं आमी नं. 16021064F रैंक - रायफलमैन, ना-झालेन्द्र सिंह, की यूनिट 17 राज रिफ है। मेरे सैन्य दस्तावेजों में मेरी धर्मपत्नी का नाम Shalnee Singh है जो कि गलत है। मेरी धर्मपत्नी का सिविल दस्तावेजों में सही नाम- Shalani Singh है जो की सही है।

I vimala legally wedded spouse of Laxmi Narayan village post jankipura via jajod Khery district Sikar have changed my name from VIMLA (DOB 11/4/1966) exiting name of spouse as per change of next of kin POR /service documents/ pension certificate To VIMLA DEVI (DOB 11/4/1966) proposed / adopeted correct new name vide affidavit 5 April 2025 before district notary jaipur

कार्यालय नगर पालिका मण्डल चाकसू, जिला जयपुर ग्रामीण (राज.)
क्रमांक: न.पा.चा/2025-26/170 दिनांक:- 7/04/2025
सार्वजनिक सूचना
एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक डिवीनीटी बिल्ड स्टेट प्राईवेट लिमिटेड जरिये निदेशक श्री दिनेश कुकरेजा एवं ड्रीम बल्डर्स इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड जरिये निदेशक श्री अनुराग गुप्ता ने कार्यालय में कृषि से अकृषि (आवासीय योजना) की अनुज्ञा हेतु राजस्व ग्राम रामपुरा बुगुर्ग के खसरा सं. 100, 104 से 111, 123, 124, 267, 268, 293 से 296, 300 से 302, 305, 306, 309 से 317, 98, 99, 113 से 115, 117, 118, 120 से 122, 269/2 कुल रकबा 10.94 हैक्टेयर भूमि का आवेदन प्रस्तुत किया है। उक्त भूमि पर उपलब्ध पहुंच मार्ग राजस्व रिकॉर्ड अनुसार लगभग 40 फीट है, जिसे खसरा सं. 460, 346/3, 461/3, 462 एवं 308 से टाउनशिप पॉलिसी 2010 के प्रावधानों के अनुसार 24 मीटर किया जाना है। अतः इस सम्बन्ध में यदि किसी को भी आपत्ति हो तो वह 10 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष कार्यालय समय में आपत्ति दर्ज करवा सकता है, बाद मियाद आपत्ति अंगीकार नहीं की जायेगी।
अधिशाषी अधिकारी, नगरपालिका, चाकसू

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों का (नाम वर्णन तथा निवास स्थान)
मुकदमा नम्बर 22-2025
चूंकि श्रीमती उषा कंवर ने पंजीकृत प्रन्यास रघुकुल रिसर्च एण्ड टेक्निकल इन्स्टीट्यूट जयपुर रघुकुल मॉडल टाउन -ए जगतपुरा रोड, जयपुर जिसका पंजीयन क्रमांक 191 जयपुर 2010 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत न्यास के प्रन्यासी श्री नगेन्द्र सिंह शेखावत श्रीमती रतना चौहान द्वारा त्याग पत्र देने के कारण उनका नाम प्रन्यास रिकार्ड से हटाने तथा श्री शौर्यवीर सिंह व सौम्या शेखावत को नवीन प्रन्यासी नियुक्त कर उनका नाम प्रन्यास रिकार्ड दर्ज अभिलेख किये जाने का निवेदन कर जांच किये जाने के लिए प्रपत्र-8 में आवेदन-पत्र दिया है। अतएव धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुए परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है, कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें। यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जायेगा तथा जांच प्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा। आज दिनांक 4/3/25 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी गया।
आइदा तारीख पेशी 9/4/25
सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर

संख्याक-4
हेतुक दर्शित के लिए सूचना (साधारण प्रारूप)
-: शीर्षक :-
न्यायालय राजस्व अपील अधिकारी, अजमेर (केम्प दूदू) जिला अजमेर राज.
मुकदमा नं. 135/21 सन 20....
कमला देवी बनाम मोहनलाल वगै.
प्रेषिती :-
बाबूलाल देवतवाल पुत्र श्री पूरण देवतवाल जाति कुम्हार नि. पुराना शहर खिड़की दरवाजा, किशनगढ़ तह. किशनगढ़ जिला अजमेर राज. 9414011551, 7737541412
दयाशंकर पुत्र श्री पूरण देवतवाल जाति कुम्हार नि. कोटजेवर मौजमाबाद हाल नि. स्कूल की ढाणी, शिव मंदिर के पास, फुलेरा तह. फुलेरा जिला जयपुर 9887167820
श्रवण पुत्र श्री लादूराम जाति कुम्हार नि. कोटजेवर तह. मौजमाबाद जिला जयपुर हाल नि. आसलपुर तह. फुलेरा जिला जयपुर राज.
उक्त अपीलार्थीगण ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि ..... नकल संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप आवेदन के विरुद्ध हेतुक दर्शित करने के लिए तारीख 24.4.25 पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुबंध दिया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आवेदन की सुनवायी और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जायेगा। यह आज तारीख 1.4.25 सन को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गयी।
मोहर अदालत राजस्व अपील अधिकारी, अजमेर

संख्याक-4
हेतुक दर्शित के लिए सूचना (साधारण प्रारूप)
-: शीर्षक :-
न्यायालय राजस्व अपील अधिकारी, अजमेर (केम्प दूदू) जिला अजमेर राज.
मुकदमा नं. 136/21 सन 20....
कमला देवी बनाम मोहनलाल वगै.
प्रेषिती :-
बाबूलाल देवतवाल पुत्र श्री पूरण देवतवाल जाति कुम्हार नि. पुराना शहर खिड़की दरवाजा, किशनगढ़ तह. किशनगढ़ जिला अजमेर राज. 9414011551, 7737541412
दयाशंकर पुत्र श्री पूरण देवतवाल जाति कुम्हार नि. कोटजेवर मौजमाबाद हाल नि.स्कूल की ढाणी, शिव मंदिर के पास, फुलेरा तह. फुलेरा जिला जयपुर 9887167820
श्रवण पुत्र श्री लादूराम जाति कुम्हार नि. कोटजेवर तह. मौजमाबाद जिला जयपुर हाल नि. आसलपुर तह. फुलेरा जिला जयपुर राज.
उक्त अपीलार्थीगण ने इस न्यायालय .में यह आवेदन किया है कि ..... नकल संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप आवेदन के विरुद्ध हेतुक दर्शित करने के लिए तारीख 24.4.25 पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुबंध दिया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आवेदन की सुनवायी और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जायेगा।
यह आज तारीख 21.4.25 माह सन को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गयी।
मोहर अदालत राजस्व अपील अधिकारी, अजमेर

कार्यालय : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, त्योद (साँभरलेक) जयपुर
पदेन पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी (PEEO)
क्रमांक : रा.उ.मा.वि./त्योद/256 दिनांक : 4.4.2025
संशोधित कार्यालय आदेश (नीलामी आदेश)
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है दिनांक 9.4.2025 को प्रातः 10 बजे अनुपयोगी निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें एवं पूर्व सत्रों की परीक्षा उत्तर पुस्तिकायें, अखबार, रद्दी कार्यालय भंडार को सामग्री आदि की नीलामी विद्यालय प्रांगण में की जायेगी। इच्छुक बोली दाता उक्त समय पर 88181.45 का 2% धरोहर राशि 1770 रुपये नकद जमा करवाकर बोली में भाग ले सकता है। सामान का अवलोकन किसी भी कार्य दिवस को किया जा सकता है। बोली दाता के पास जीएसटी नंबर फर्म होना अनिवार्य है। बोली छोड़ने, नहीं छोड़ने का अधिकार कमेटी के पास सुरक्षित रहेगा, सहित नियम शर्तें लागू होगी।
सीमा राठौड़, प्रधानाचार्य
राजकीय आदर्श उ.मा. विद्यालय, त्योद, साँभरलेक जयपुर-II

राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद
सवाई मानसिंह स्टेडियम, जनपथ, जयपुर
कार्यालय दूरभाष नं0 0141-2744283, फैक्स नं0 0141-2740568, ईमेल आईडी - rsscjaipur@gmail.com
क्रमांक :- एफ.5/6/के.प्र.शि./2025-26/09 दिनांक :- 04/04/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 03 दिनांक 04.04.2025
राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद, जयपुर द्वारा माह मई-जून, 2025 में 22 दिवसीय केन्द्रीय आवासीय जनजाति प्रशिक्षण शिविर, बांसवाडा में भोजन व्यवस्था की जानी है। भोजन व्यवस्था आपूर्ति हेतु निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योरमेन्ट प्रक्रिया द्वारा ऑनलाईन ई-निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। संबंधित पूर्ण विवरण वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in तथा www.rssc.in पर देखा जा सकता है। UBN No.:- RSC2526SLOB00003
राज.संवाद/सी/25/339 सचिव

संक्षिप्त

विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया

निवाई। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष अय्यूब खान एवं तालुका विधिक सेवा समिति अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश अध्यक्ष सृष्टि चौधरी के निर्देशानुसार विश्व स्वास्थ्य दिवस पर सोमवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान डॉ. मुकेश सामोता ने बताया कि 7 अप्रैल 1948 को विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना की गई थी। तब से सम्पूर्ण विश्व द्वारा 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य दिवस मनाया जाता है। इसके लिए संतुलित आहार होना, नियमित शारीरिक गतिविधि करना, पर्याप्त आराम करना, मानसिक स्थिरता बनाए रखना, तनाव का प्रबंधन करना, सार्थक संबंध बनाए रखना, खुद की देखभाल करना, योगा एवं प्राणायाम करना, समय-समय पर डॉक्टर से चेकअप कराना सहित अन्य बातें शामिल हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य से संबंधित सभी जानकारी दी। इस दौरान निवाई तालुका सचिव राजेश मीणा, विद्यालय प्रधानाचार्य देवेन्द्रपालसिंह एवं कई शिक्षकगण उपस्थिति थे।

22 से किसान करेंगे अनिश्चितकालीन धरना

निवाई। किसान महापंचायत के तत्वावधान में किसानों के मुद्दों को को लेकर 22 अप्रैल को 11 बजे कृषि उपज मंडी टोंक में अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन किया जाएगा। ब्लॉक अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान ने बताया कि किसानों की समस्याओं को लेकर कृषि उपज मंडी में बैठक आयोजित की गई। जिसमें सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि किसानों के जो मुद्दे बहुत दिनों से चल रहे हैं उनका कोई भी समाधान नहीं हुआ है जिसको लेकर 22 अप्रैल से कृषि उपज मंडी समिति टोंक में अनिश्चितकालीन धरना किया जाएगा। बैठक में किसान युवा प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर चौधरी, जिला अध्यक्ष गोपीलाल जाट, सीताराम चौधरी, बद्री गुर्जर, आत्माराम चौधरी, दुलाराम प्रजापत, गोविंद चौधरी, श्रीराम, शंकरलाल मीणा, मोहनलाल चौधरी, राजाराम मीणा व राधाकृष्ण मीना सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

शोकाकुल परिवार को बंधाया ढांढस

पीपलू। उपखंड क्षेत्र मे 24 मार्च को हरिपुरा निवासी व समाजसेवी कमलेश गुर्जर की पुत्री नीतू गुर्जर का आकस्मिक निधन हो गया था। निधन की जानकारी मिलते ही हिंडोली नैनवां विधायक, पूर्व राजस्थान सरकार खेल मंत्री अशोक चांदना ने हरिपुरा गांव पहुंच कर परिजनों को ढांढस बंधाते हुए दु:ख प्रकट किया। मंत्री ने कहा कि भगवान दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।इस दौरान मेवाराम भालोठ, एडवोकेट राजेश गुर्जर, हरिनारायण गुर्जर, सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे। टोंक विधायक सचिन पायलट ने भी शोकाकुल परिवार को शोक जताया गया।

उपमुख्यमंत्री को किया आमंत्रित

निवाई। गांव नटवाडा में श्री बद्री विशाल भगवान के सान्निध्य में 108 कुंडिये शत चंडी महायज्ञ का आयोजन किया जाएगा। जिसमें भाग लेने के लिए राजस्थान सरकार की उपमुख्यमंत्री राजकुमारी दीया कुमारी को नटवाड़ा सरपंच नीता कंवर के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने आमंत्रित किया। सरपंच नीता कंवर ने बताया कि श्री बद्री विशाल भगवान के सान्निध्य में उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी आतिथ्य में आयोजित होने वाले 108 कुंडिये शत चंडी महायज्ञ में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। इस दौरान सरपंच नीता कंवर ने श्री बद्रीनाथ जी मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु बजट आवंटित करने के लिए उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आत्मीय भेंट की।

राजकुमार जैन बने जिला समन्वयक

मालपुरा। भारत विकास परिषद उतरी पूर्वी प्रान्त की घोषित कार्यकारिणी मे पूर्व पालिका अध्यक्ष एडवोकेट राजकुमार जैन को जिला समन्वयक मनोनीत किया गया। परिषद प्रवक्ता दिनेश विजय ने बताया कि परिषद की मालपुरा शाखा के संरक्षक राजकुमार जैन अब जिले की सभी शाखाओं के समन्वयक के रूप मे परिषद कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन प्रदान करेगें। राजकुमार जैन के समन्वयक बनने पर ब्लॉक मालपुरा अध्यक्ष ज्ञानचन्द जैन,रामजीलाल बैरवा,सुनिल परतानी सहित जिलेभर के कार्यकर्ताओ ने जैन को दी बधाई।

टोरडा बगीची में श्रीराम जन्मोत्सव पर रामलला की झांकी सजाई

पावटा। टोरडा बगीची बाबा श्री भरतदास जी आश्रम पावटा क्षेत्र के आध्यात्मिक केन्द्र टोरडा धाम पर नूतन वर्षारंभ व नवरात्र स्थापना से शुरू हुए आध्यात्मिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का श्रीराम नवमी पर श्रीराम जन्मोत्सव की बधाई, महाआरती के साथ समापन हुआ। वही श्री राम नवमी के अवसर पर पारंपरिक मेले में आध्यात्म के साथ लोक रंगों की बरसात में रंग-बिरंगी पौशाकों में स्त्री पुरुष तथा बच्चे दिन भर आस्वादन करते रहे तथा महाराज श्री के लोक-मंगल के विभिन्न आयामों से जुड़ कर अपने कल्याण के प्रकल्पों से जुड़े रहे।

मंदिर महंत श्री मंगलदास जी महाराज ने बताया कि वर्ष प्रतिपदा से प्रारंभ हुए सभी आध्यात्मिक कार्यक्रमों का एक एक कर समापन करते हुए सर्वप्रथम साहित्य और शास्त्रीय संगीत पर आधारित श्री सीताराम जी को समर्पित भजन संध्या की प्रभात वेला में पूर्णाहुति, श्री राम नाम संकीर्तन व श्रीरामचरित मानस अखंड पाठ समापन, हवन तत्पश्चात श्री राम जन्म की बधाई गायन, अभिजीत मुहूर्त में रामलाल का जन्म, श्रृंगार, महाआरती तथा राजभोग की झांकी सजाई गई। इसके बाद मेले में आने वालों के लिए भंडारा तथा मेला दोनों एक साथ प्रारंभ हुए। इससे पूर्व आश्रम परिसर के विशाल सभा मंडपम में स्थानीय डॉ. अशोक जाट, मिश्री देवी आई हॉस्पिटल बहरोड़, बालाजी क्योर एण्ड केयर होस्पिटिल जयपुर तथा वैशाली हॉस्पिटैलिटी के वरिष्ठ फिजियोथैरेपिस्ट डॉ. दिनेश खोड़ा द्वारा मंदिर महंत श्री मंगलदास जी की लोक-मंगल की कामना साकार करते हुए मेलार्थियों के स्वास्थ्य लाभ हित विभिन्न व्याधियों की जांच-पड़ताल से दवा वितरण तक के उपक्रम किए। दिन में लोक गायकों द्वारा नेहड़ा गायन, डफ चंग के साथ लोक रंजन के नृत्य, विभिन्न प्रकार के झूले, खिलोनों की दुकानें सजी।

मेले में लोगो की भीड़ उमड़ी।

- भरतदास जी की बगीची टोरडा में विशाल मेले का आयोजन

वही क्षेत्र के प्रख्यात आशु कवि बिहारीलाल शास्त्री,अंकुर शर्मा, काशी राम गुर्जर, शास्त्रीय गायक महेंद्र कुमार टांक, नवीन शर्मा ने आदि ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर दाऊधाम के श्री बलदेवाचार्य जी महाराज, सेवादास जी महाराज, बनवारी दास जी, रघुनाथ दास, राधेश्याम दास जी, रामशरण दास, विराटनगर विधायक कुलदीप धनखड़, डिप्टी कमिश्नर महेंद्र यादव, रेंजर कोटपूतली, राजस्थान सरकार में पूर्व मंत्री उर्मिला योगी, मंदिर व्यवस्था के प्रमुख कार्यकर्ता रामदयाल टॉक, भागीरथ मल गुर्जर, कप्तान सिंह, तुलसीदास, श्रीराम नेता, गौरीसहाय गुर्जर, रोताश गुर्जर, रामेश्वर गुर्जर, कैलाश गुर्जर, मालसिंह तंवर, पूरण सिंह, रामकुमार मास्टर , ताराचंद , धर्मपाल, धर्मेन्द्र कुमार, जितेन्द्र शर्मा, हेमराज, दीनसिंह , पंकज, मुन्ना शर्मा ने अपनी सेवाएं दी।

पालना झूलाने के साथ राजा सिद्धार्थ एवं भगवान महावीर का सजाया दरबार

निवाई। जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा के तत्वावधान में नसिंया जैन मंदिर के पास महावीर जयंती के महोत्सव के तहत मंगलाचार कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सैकड़ों महिलाओं ने भाग लिया। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौला एवं सुनील भाणजा ने बताया कि कार्यक्रम का शुभांरभ पारसमल, महावीरप्रसाद पराणा, हिमांशु गोयल एवं विक्रम जैन ने भगवान महावीर स्वामी की तस्वीर के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रियंका पराणा, निकिता जैन, राशि जैन, नीतू जैन, सोनल जैन, दीक्षा जैन एवं गुंजन जैन ने सामूहिक नृत्य के साथ किया गया। उन्होंने बताया कि मंगलाचार कार्यक्रम में भगवान महावीर का दरबार, पालना झूलाया, राजा सिद्धार्थ के साथ सामूहिक नृत्य सहित कई धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम के दौरान सैकड़ों श्रद्धालुओ ने संगीतमय पालना झूलाया।

हितेश छाबड़ा एवं राकेश संघी ने बताया कि कार्यक्रम के अन्तर्गत सुशीला देवी, विमला देवी, मैना जैन, मंजू जैन, रिंकु जैन, आशा जैन, अनिता गोयल, ममता जैन, मीनू जैन, सपना जैन, मोनिका जैन, रेखा जैन, शशी सोगानी, पिंकी कठमाणा व सपना ज्योति छाबड़ा सहित कई महिलाओं एवं बालिकाओं ने भगवान महावीर स्वामी की महिमा पर सामूहिक मंगलाचार कार्यक्रम करके भगवान महावीर का महत्व बताया। इस अवसर पर सभी महिलाओं को भात वितरण किया गया। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला को नाटिका के माध्यम से दिखाया गया जिसको देखने श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

भगवान महावीर को पालना झूलाते हुए श्रद्धालु।

- जैन सोशल ग्रुप प्रज्ञा के तत्वावधान में नसिंया जैन मंदिर के पास महावीर जयंती के महोत्सव के तहत मंगलाचार कार्यक्रम आयोजित

12 मई को निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन

निवाई। वैष्णव बैरागी समाज के तत्वावधान में जमुना गार्डन निवाई में 12 मई पीपल पूर्णिमा को प्रथम नि:शुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसकी तैयारी जोर-शोर से चल रही है। समिति अध्यक्ष गुलाब वैष्णव खंडवा ने बताया कि सम्मेलन को सफल बनाने के लिए समिति के पदाधिकारी गांव-गांव में समाज बंधुओं से संपर्क कर सम्मेलन में अधिक से अधिक लोगों को शामिल होने व सहयोग करने के लिए प्रेरित कर रहे है। उन्होंने बताया कि सम्मेलन को लेकर जोड़ों का रजिस्ट्रेशन शुरू हो गया है। रजिस्ट्रेशन के लिए समिति के पदाधिकारियों से संपर्क कर सकते है। सम्मेलन कार्यकारणी में मुख्य संयोजक के पद पर मोतीलाल जीवली, परशुराम बरोनी, उपाध्यक्ष सीताराम बरोनी, शिवजीराम गोहरपुरा व महामंत्री के पद पर भंवर करीरिया को शामिल किया गया। अध्यक्ष गुलाब खंडवा ने आव्हान किया।

सनातन संस्कृति की रक्षा में अपना योगदान दे : बालमुकुंदाचार्य

मानपुरा माचेड़ी। हवा महल विधायक एवं दक्षिणमुखी हनुमान मंदिर हाथोज धाम के महंत बालमुकुंदाचार्य महाराज ने कहा कि सनातन संस्कृति की रक्षा करना हम सभी का दायित्व है सभी को इसकी रक्षा के लिये संकल्पित होना चाहिये। विधायक बालमुकुन्दाचार्य महाराज लावारामजी की तपोस्थली टीला धाम अरणिया (चंदवाजी) में सीताराम महायज्ञ के समापन एवं पाटोत्सव महोत्सव पर महामंडलेश्वर हरिदासजी महाराज के सानिध्य में श्रद्धालुओं को आशीर्वचन दे रहे थे।

महाराजश्री ने गौ माता की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुये हरिदासजी महाराज के सानिध्य में गौशाला की स्थापना कर गो सेवा करने का संकल्प दिलवाया। महामंडलेश्वर हरिदासजी महाराज व भीवादासजी महाराज ने बालमुकुंदाचार्य महाराज कर शॉल ओढ़ाकर व माल्यार्पण करके स्वागत किया। इससे पूर्व महाराजश्री ने ठाकूरजी के दर्शन कर लावारामजी की पगल्यों की परिक्रमा कर प्रदेश व क्षेत्र में खुशहाली की कामना की। इस दौरान कालीदास महाराज नायन, सुदामादास महाराज, शाहपुरा व्यापार एसोसियेशन के पूर्व अध्यक्ष व पूर्व पार्षद गोपाल शर्मा सहित अनेक लोग मौजूद रहे। संत महात्माओं ने की शिरकत महायज्ञ के समापन व पाटोत्सव पर भींवादासजी जसवंतपुरा, कालीदासजी नायन, रामचरणदासजी महाराज त्रिवेणी धाम, प्रभुदास महाराज हथौरा, प्रहलाद दास कुंडा धाम, हरिओमदास महाराज परमानंद धाम खोरी, किशनदास दिवराला सहित अनेक संत महात्माओं ने शिरकत की।इस अवसर पर भंडारे का भी आयोजन हुआ इसमें हजारों श्रद्धालुओं में प्रसादी ग्रहण की।

महायज्ञ के समापन के अवसर पर बालमुकुंदचार्य व सन्त मौजूद रहे।

- सीताराम महायज्ञ व पाटोत्सव महोत्सव

एडीजी सिंह ने किया कारागृह का निरीक्षण

टोंक। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, जेल रूपेंद्र सिंह सोमवार को टोंक दौरे पर रहे, यहां उन्होंने अचानक टोंक कारागृह का निरीक्षण किया, इस दौरान पांच टीमों ने उनके निर्देशन में जेल स्टाफ, पुलिस, बंदियों और जेल प्रशासन की तलाशी ली। इस दौरान कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं मिली तथा टीमों ने सभी बैरकों, बंदियों के सामान आदि की चेकिंग की। इसके बाद मीडिया से बातचीत करते हुए एडीजी सिंह ने कहा कि जेल में भी बंदियों को आम लोगों की तरह जेल के नियमों के अनुसार रखते है।

जेल के नॉर्म्स के हिसाब से रहने वाले को कोई दिक्कत नहीं आती, जो बंदी जेल नियमों का उल्लंघन करता है तो उसे जेल नियमों के अनुसार दण्ड मिलता है। हम बंदियों और स्टाफ में यह संदेश देना चाहते हैं कि किसी भी वक्त तलाशी ली जा सकती है, यह नहीं है कि तलाशी सुबह या शाम को ली जाए, किसी भी वक्त तलाशी ली जा सकती है। रूटीन में भी जेल प्रशासन अपने स्तर पर जांच कर सकता है। अगर कोई बंदी जेल में अपराधी गतिविधि करता है तो फिर उसके लिए एफआईआर है और पुलिस अनुसंधान है, यदि कोई अपराधिक कृत्य करता है तो मुकदमा होता है विभिन्न प्रकार की उसमें सजाए हैं। उन्होने बताया कि इस मामले में अगर कोई स्टाफ की मिलीभगत होती है तो उनको इन्हीं नियमों के तहत डील किया जाता है। इस दौरान जेल अधीक्षक वैभव भारद्वाज, जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान आदि मौजूद रहे।

- इस दौरान पांच टीमों ने निर्देशन में जेल स्टाफ, बंदियों व जेल प्रशासन की तलाशी ली

95 दिनों से अलवर आरटीओ ऑफिस में नहीं बने लाइसेंस, जनता का सब्र का बांध टूटा

अलवर। पिछले 95 दिनों से अलवर आरटीओ ऑफिस में वाहन लाइसेंस नहीं बनने से जनता के सब्र का बांध आज टूट गया ओर उन्होंने वहां मौजूद यातायात सलाहकारों की दुकानों को बंद करवा कर विभाग की राठोडी का जवाब देने के लिए कार्य का बहिष्कार करवा दिया जिसके फलस्वरूप अलवर आरटीओ ऑफिस की सभी खिड़कियां खाली रही लोगों ने कार्यालय के गेट के बाहर भाजपा सरकार और आरटीओ विभाग के खिलाफ जमकर नारे लगाए। पिछली आठ जनवरी से अलवर आरटीओ ऑफिस में लाइसेंस का काम बंद है यहां चोपहिया और दोपहिया वाहनों के लाइसेंस नहीं बन पाएं है। एजेंटों का आरोप है कि यह टेक खराब नहीं है इसे विभाग के इंस्पेक्टरो ने अधिकारियों को गुमराह करते हुए खराब घोषित करने का प्रयास किया है ताकि उन्हें मैनुअल लाइसेंस की परमिशन मिल जाए और वे मोटी रकम वसूली कर सके। डबल इंजन सरकार का वर्चस्व भी खतरे में पड़ा

अलवर की डबल इंजन सरकार का वर्चस्व भी इस प्रकरण को लेकर खतरे में पड गया है क्योंकि भाजपा सरकार लगातार जीरो टोल्स नीति पर काम करने की बात कहती है और वही उन्ही के पब्लिक डीलिंग आफिसों में जमकर लूट मची हुई बिना सुविधा शुल्क के यहां कोई काम नही होते है।

लगातार मीडिया में समाचार प्रकाशित होने के बावजूद भी डबल इंजन सरकार के किसी भी मंत्री ने आज तक इस पर कोई संज्ञान नहीं लिया है जो उनकी जन हितेषी भावना को उजागर करने के लिए काफी है। जनता को सरकार की बड़ी योजनाओं या विकास की राजनीति से ज्यादा जरूरी है उनके काम का समय पर होना जो नहीं हो पा रहा है। अलवर आरटीओ ऑफिस में 95 दिनों के अन्दर करीब पांच हजार से ज्यादा लर्निंग लाईसेंस पैंडिग पडे है जिनमें हजारों की डेट ही एक्सपायर हो चुकी है इससे लाइसेंस धारकों को काफी धन और समय की हानि हुई है इधर एक एजेंट की माने तो उनके अनुसार करीब बीस से पच्चीस हजार लाइसेंस पेंडिंग है। लोगों ने मंत्रियों की कार्यशैली पर उठाया प्रश्न यहां एकत्रित अभ्यार्थियों ने बताया कि वे इस मामले को लेकर राजस्थान सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा के निवास पर भी गए और उनके नाम ज्ञापन उनके पीए को देकर आए लेकिन लगभग सप्ताह बाद भी मंत्री संजय शर्मा ने इस पर कोई संज्ञान नहीं लिया है वही लगातार मीडिया में प्रकाशित समाचारों को पढने के बावजूद भी इस विभाग पर दोनों ही मंत्रियों ने कोई संज्ञान नहीं लिया है जिससे साफ लगता है कि भाजपा सरकार नहीं चाहती कि अलवर में जनहित के कार्य हो और अलवर के युवा सरकारी नौकरी के लिए फार्म भर सके। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि अगर हमारे हाथ से वैकेंसी निकलेगी तो आने वाले चुनाव मे इन दोनों ही मंत्रियों को इसकी कीमत चुकानी पडेगी। उन्होंने आज जनता की परेशानियों से सबक लेते हुए यह निर्णय किया है कि वे जनता के इस आंदोलन में उनका समर्थन करेंगे और जब तक अलवर आरटीओ ऑफिस में लाइसेंस सुचारू नहीं होगे तब तक वे अपनी दुकानों को नहीं खोलेगे।अधिकारी अलवर आरटीओ सतीश कुमार मीडिया को लगातार बोलते आ रहे है कि उन्होंने इस ट्रेक के विषय में जयपुर मुख्यालय को अवगत करा दिया है उन्होंने 6 पत्र लिखे है या तो विभाग इस ट्रेक को ठीक कराए या फिर लाइसेंस को मैन्युअल करने की परमिशन दे ताकि जनता के काम सुचारू हो सके।

ऑफिस के बाहर सैकड़ों अभ्यार्थियों ने प्रदर्शन किया।

- विभाग के खिलाफ एजेंटों ने भी दुकानें बंद कर आंदोलन का किया समर्थन

'पशुओं को लू एवं तापघात से बचाएं'

टोंक। आगामी भीषण गर्मी और हीट वेव को देखते हुए राज्य सरकार के निर्देशानुसार पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. छोटू लाल बैरवा ने जिले के पशुपालकों को राहत देने के लिए हर संभव प्रयास शुरू कर दिए है। उन्होंने जिले के समस्त पशुचिकित्सालयों, पशु औषधालय एवं पशु चिकित्सा उपकेंद्रों के प्रभारियों को निर्देश दिए कि पशुपालकों के पशु उनकी अमूल्य धरोहर है। पशुपालकों की अमूल्य धरोहर को भीषण गर्मी एवं हीट वेव से बचाना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। गर्मी एवं हीट वेव के मध्य नजर पशुपालकों को चिकित्सा सुविधा के लिए परेशानी का सामना नहीं करना पड़े, आगामी हीट वेव को देखते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी अलर्ट एवं प्रो-एक्टिव एप्रोच से कार्य करें।

संयुक्त निदेशक डॉ. बैरवा ने जिले के गौशाला संचालकों एवं पशुपालकों को उनके अमूल्य पशुओं को लू एवं तापघात से बचाने की जानकारी देते हुए बताया कि पशुओं को नहलाने का उचित प्रबंध होना चाहिए। पशुओं के शरीर पर दिन में दो या तीन बार ठंडे पानी का छिड़काव करें, संभव हो तो तालाब में भैंसों को नहलाएं। उन्हें पीने का ठंडा पानी उपलब्ध कराएं। पशुओं को आहार में हरा चारा अधिक से अधिक मात्रा में खिलाएं।

सार-समाचार

शोभा यात्रा निकली

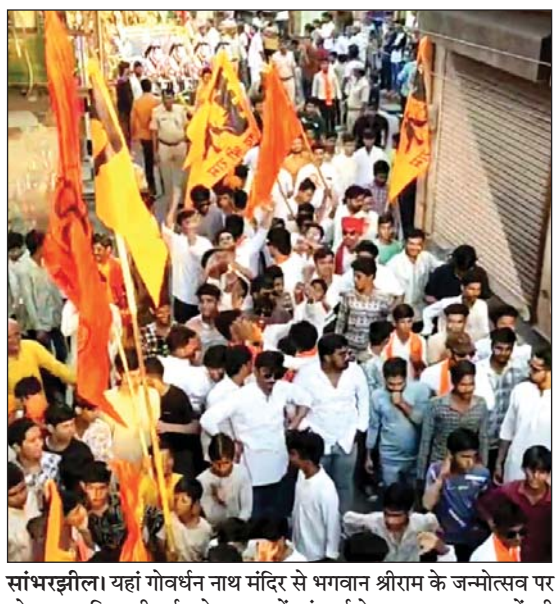

सांभरझील। यहां गोवर्धन नाथ मंदिर से भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव पर शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में मां दुर्गा के अलग-अलग रूपों की जीवंत झांकी आकर्षण का केंद्र रही। शोभायात्रा विश्व हिंदू परिषद के तत्वाधान में निकाली जाना बताया गया। गोवर्धन नाथ मंदिर से बड़ा बाजार, छोटा बाजार, सीता सागर रोड, साल्ट फाटक, पंच बत्ती चौराहा होते हुए श्री गोपाल गौशाला अध्यक्ष मुन्नाजी के सानिध्य में शुभ यात्रा में आने वाली सभी लोगों को शीतल पेय दिया गया। विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारी वकील सुनील शर्मा ने बताया कि शोभायात्रा पर जगह-जगह पुष्प वर्षा की गई। महिलाओं ने भी उत्साह के साथ भाग लिया। डीजे पर प्रभु श्री राम के गीतों के साथ लोगों ने नाचते गाते जय श्री राम के उद्घोष के साथ अपनी आस्था जताई। शोभा यात्रा में मंदिर के महंतो ने भी भाग लिया। इस मौके पर विश्व हिंदू परिषद के हीरालाल तंवर, दिनेश शर्मा, राजेंद्र आसीवाल, राम सिंह बन्ना, कपिल सोनी, नीतेश गोयल, मधु गोयल, सत्येंद्र अग्रवाल, राम अग्रवाल, शरद कालानी व सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

पीपलू। राजकीय महात्मा गांधी विद्यालय डारडा तुर्क पर विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर ममता हेल्थ इंस्टिट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड संस्था द्वारा एक नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में कुल 137 विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच की गई, जिनमें 47 बालक और 90 बालिकाएं शामिल थी। शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और उन्हें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना था। स्वास्थ्य जांच में बच्चों का वजन, ऊंचाई, रक्त में हीमोग्लोबिन की मात्रा, आंख और दांत की जांच जैसे बुनियादी परीक्षण किए गए। साथ ही बालकों और बालिकाओं को संतुलित आहार, स्वच्छता और नियमित जांच के महत्व के बारे में जानकारी दी गई।शिविर में पीएचसी प्रभारी दीपक कुमार का विशेष सहयोग रहा। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के लैब टेक्नीशियन गिर्राज गुर्जर और महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता सुशीला वर्मा द्वारा बच्चों की जांच की गई और बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और स्वच्छता अपनाने की प्रेरणा दी तथा ज़रूरतमंद विद्यार्थियों को निशुल्क दवाइयां भी उपलब्ध कराईं।विद्यालय प्रशासन, शिक्षकों और अभिभावकों ने इस सराहनीय पहल की प्रशंसा की और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की अपेक्षा जताई। इस अवसर पर ममता संस्था के ब्लॉक कॉर्डिनेटर छत्रधर योगीराज ने सहयोग के लिए अस्पताल स्टाफ और विद्यालय स्टाफ का आभार जताया।

तीन दिन से पानी की सप्लाई बंद

पीपलू। झिराना से चौगाई पंप हाउस के लिए बिसलपुर पेयजल की लाइन झिराना से बोरखडींकला के बीच से टूट गई। पाइपलाइन टूटने कारण इस समय गैस की लाइन डालने के लिए चल रही खुदाई के दौरान जेसीबी से मशीन टूट गई। पाइपलाइन टूट ने से चौगाई पंप हाउस में होने वाली बिसलपुर की सप्लाई चार दिन से बंद है। एरिया मैनेजर मुकेश चौधरी ने बताया कि गैस की लाइन डालने के लिए नाली की खुदाई जेसीबी मशीन से की जा रही है। जिससे झिराना पंप हाउस से चौगाई पंप हाउस की पानी की सप्लाई लाइन कहीं जगह से टूट गई। पेयजल सप्लाई लाइन टूट जाने से चौगाई पंप हाउस से होने वाली 38 गांवों की पेयजल आपूर्ति बंद है। लाइन की मरम्मत कार्य किया जा रहा है। जल्दी ही पानी की सप्लाई चालू की जाएगी। रामलाल, मदनलाल सेन, सीताराम माली, हनुमान व गोपाल लाल ने बताया की वर्तमान में गर्मी का सीजन शुरू हो गया है। वहीं शादी विवाह का सीजन चल रहा है। इस समय पानी कि आवश्यकता अधिक होने से काफी मुश्किल हो रही है। महिलाओं को पानी की व्यवस्था करना पड़ रहा है। इस दौरान रानोली, कठमाणा, चौगाई, इनायतगंज, बेगमपुरा, मोहम्मद नगर ढाणी, गंगापुरा, अलिनगर, गुड्डा रामदास, सौधीफल, मोहिनी, गोर्वधनपुरा, सीतारामपुरा, हमेंरिया, तहरपुरा उर्फ इब्राहिमाबाद, जयकिशनपुरा, हाजीपुरा, जौहरपुरा व हनिफगंज सहित 38 गांवों की पेयजल आपूर्ति बंद है।

विप्र समाज की बैठक आयोजित

देवली। परशुराम जन्मोत्सव को लेकर विप्र समाज की बैठक आयोजित की आगामी 29 अप्रैल आखातीज को आने वाले परशुराम जन्मोत्सव को लेकर बस स्टैंड स्थित गौतम मंदिर में देवली सहित क्षेत्र के विप्र बंधुओं की बैठक आयोजित हुई। बैठक में सर्वसम्मति से परशुराम जन्मोत्सव को भव्य तरीके से मनाने का निर्णय लिया गया। इस दौरान देवली शहर, ज्योति कॉलोनी, ऊंचा, कुंचलवाड़ा, हनुमान नगर, देवली गांव एवं दौलता मोड़ क्षेत्र के सभी विप्र परिवारों का सामूहिक भोज आयोजित करने का भी सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया। बैठक में मौजूद सामाजिक बंधुओं ने कार्यक्रम को भव्य बनाने हेतु अन्य कई मुद्दों पर भी विचार विमर्श किया। सामूहिक भोज में शामिल होने के लिए किसी भी परिवार से कोई राशि निर्धारित नहीं की गई है, जो भी व्यक्ति सहयोग देना चाहे, वह अमित गौतम, कृष्ण गोपाल शर्मा व आशीष पंचोली से संपर्क कर सहयोग दे सकता है। परशुराम जन्मोत्सव के दिन भव्य शोभा यात्रा भी निकाली जाएगी।

एसडीएम को ज्ञापन दिया

श्रीमाधोपुर । राजस्थान शिक्षा सेवा प्राध्यापक संघ की जिला शाखा नीमकाथाना की उप शाखा श्रीमाधोपुर ब्लाक कार्यकारिणी के द्वारा वरिष्ठ व्याख्याता 14 पद को समाप्त करने के संबंध में उपखंड अधिकारी अनिल कुमार को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा तथा शिक्षा मंत्री मदन दिलावर के नाम ज्ञापन सौंपा ।श्रीमाधोपुर ब्लॉक अध्यक्ष शिंभू दयाल सैनी के द्वारा बताया गया कि हाल ही में शिक्षा विभाग द्वारा उप- प्राचार्य पद को समाप्त करके वरिष्ठ व्याख्याता नाम से नया पद बनाया गया है, जिसका रेसला संगठन विरोध करता है तथा सरकार से मांग करता है कि इसे समाप्त करके पूर्व वर्षों की भांति व्याख्याता की पदोन्नित प्रधानाचार्य एल-16 के पद पर की जाए । इस अवसर पर अजीतगढ़ ब्लॉक अध्यक्ष विजेंद्र कुमार, उपाध्यक्ष मुकेश कुमार सैनी, अशोक कुमार, जिला कार्यकारिणी सदस्य कैलाश यादव, ब्लॉक महामंत्री मुकेश कुमार फलवारीआदि व्याख्याता मौजूद थे।

सन्त निरंकार का विशाल सत्संग आयोजित

टोंक। शहर के पाँचबत्ती स्थित सन्त निरंकारी सत्संग भवन पर विशाल आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन दिल्ली से आयी केन्द्रीय प्रचारक निर्मलमन चन्दा के सानिध्य में आयोजित किया गया। सत्संग में आये श्रृद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए चन्दा ने कहा कि हम बहुत धर्म-ग्रंथ पढ़ते है, अच्छि बाते सुनते भी है, अब जरूरत है उनको जीवन में उतारने की, सृष्टि को बनाने वाले परमात्मा को प्यार करने की। आज सतगुरू माता सुदीक्षा राज पूरे संसार को यही संदेश दे रहे है कि हम मिल वर्तन से रहे, हमारा आपसी भाईचारा मजबूत हो और ये तभी संभव होगा जब हम एक-दूसरे को सम्मान देंगे। सत्संग का वातावरण पावन, निर्मल आध्यात्म वाला होता है, यहां कोई गमन हीं होता इसलिये युगों-युगों से सत्संग को ही मोक्ष का द्वार बताया गया है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस आज

शाहपुरा । शाहपुरा विधायक मनीष यादव के द्वारा मंगलवार को सुबह दस बजे एमडीएस होटल बिदारा में नगर निकाय सीमा विस्तार, पंचायत समिति पुनर्गठन सहित क्षेत्र की कई ज्वलंत जन समस्याओं को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस किया जाएगा।

गेंदबाज मैच का रूख बदल देते हैं, विशेषकर इस प्रारूप में। काफी लोग टी20 में बल्लेबाजी और हिटिंग की बात करते हैं लेकिन हमें लगता है कि मैच गेंदबाजों द्वारा जीते जाते हैं।
- शुभमन गिल

गुजरात टाइटंस के कप्तान, अपने गेंदबाजों (गेम चेंजर्स) के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

हैरी ब्रूक

बल्लेबाज हैरी ब्रूक को सोमवार को इंग्लैंड की नए वनडे और टी-20 टीम का कप्तान घोषित किया गया है। 26 वर्षीय हैरी ब्रूक को सफेद गेंद प्रारूप में जोस बटलर के स्थान पर कप्तान नियुक्त किया गया है। बटलर ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में जीत न मिलने के बाद अपनी भूमिका से इस्तीफा दे दिया था। 2022 से सफेद गेंद सेटअप का हिस्सा रहे ब्रूक सभी प्रारूपों में इंग्लैंड की बल्लेबाजी लाइनअप के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं। वर्तमान में आईसीसी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज ब्रूक ने पिछले एक साल में वनडे और टी-20 दोनों प्रारूपों में उप-कप्तान के रूप में काम किया है।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय फुटबॉल टीम के लिए सबसे लंबी जीत का सिलसिला :1962 से 1964 के बीच 7 मैचों की जीत है।

गर्मी से राहत के लिए खेल मंत्री ने उठाया कदम

टिकट काउंटरों पर छांव और पानी की व्यवस्था के निर्देश

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए खेल मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने बड़ा कदम उठाया है। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के पहले मुकाबले के लिए टिकट खरीदने आने वाले लोगों को गर्मी से राहत देने के लिए खेल मंत्री ने स्पोर्ट्स काउंसिल को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा है कि टिकट काउंटरों पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए छांव और पीने के ठंडे पानी की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। मौसम विभाग के अनुसार, इस वर्ष अप्रैल के पहले ही सप्ताह में पिछले कई वर्षों का तापमान रिकॉर्ड तोड़ चुका है। प्रदेश में गर्मी ने प्रचंड रूप धारण कर लिया है और हीटवेव जैसे हालात बन गए हैं। मौसम विभाग ने लोगों को सलाह दी है कि वे धूप से बचें, छांव में रहें और पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें। इसके लिए टिकटों की बिक्री 7 अप्रैल से शुरू हो चुकी है। टिकट ऑनलाइन के साथ-साथ ऑफलाइन माध्यम से भी उपलब्ध हैं। ऑफलाइन टिकट बिक्री के लिए एसएमएस स्टेडियम के बाहर तीन काउंटर स्थापित किए गए हैं। खेल मंत्री कर्नल राठौड़ ने खेल सचिव को निर्देशित करते हुए कहा है कि टिकट खरीदने के लिए आने वाले दर्शकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, इसके लिए छांव की व्यवस्था के साथ-साथ शुद्ध और ठंडे पेयजल की उपलब्धता तत्काल प्रभाव से सुनिश्चित की जाए।

पारा गर्मी का ही नही क्रिकेट प्रेमियों के जुनून का भी बड़ा है। आज से एसएमएस स्टेडियम में होने वाले आईपीएल मैचों के टिकिट की बिक्री शुरू हुई। क्रिकेट प्रेमियों को किसी भी हाल में टिकिट चाहिए ही, इसके लिए देर रात से ही आकर बैठ गए।

आईपीएल के पहले मैच के टिकटों की कालाबाजारी का आरोप

जयपुर, 7 अप्रैल। तपती सूरज की रोशनी में गर्मी की गर्म हवा के बीच राजस्थान क्रिकेट हाय-हाय, स्टेडियम प्रशासन हाय हाय, के नारों से आज स्टेडियम का बाहरी हिस्सा गुंजायमान हो उठा। स्टूडेंट्स ने बुक माई शो के द्वारा कुछ टिकटों के वितरण करने के बाद विंडो को यह कहकर बंद कर दिया कि 13 अप्रैल के 500 वाले टिकट बिक चुकी है ओर अन्य की टिकट लेना चाहो तो ले सकते हो। जयपुर में आईपीएल मुकाबले के लिए ऑफलाइन टिकट आज से मिलने शुरू हुए। क्रिकेटपप्रेमी रात से ही टिकट विंडो पर पहुंचे ओर कतार लगाकर बैठ गए। 13 अप्रैल को राजस्थान रॉयल्स और आरसीबी

के बीच होने वाले आईपीएल मुकाबले के लिए वे टिकट खरीदने पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि रात 8 बजे स्टेडियम के बाहर पहुंच गए थे। पूरी रात स्टेडियम के बाहर ही गुजरी, लेकिन सुबह जब टिकट विंडो खुली तो काफी निराशा हुई। न पानी की व्यवस्था थी और न ही कोई छाया की। एक प्रत्यक्षदर्शी ने आरोपी लगाते हुए कहा कि मेरी लाइन में छठे नंबर पर खड़ा था, मेरे आगे सभी 5 स्टूडेंट्स को टिकट मिल गयी मेरा नम्बर आते ही टिकट विंडो से जानकारी मिली कि 500 वाली टिकट खत्म हो गए है, ओर दूसरी चाहिए तो आप ले सकते है। गुस्साए स्टूडेंट्स ने टिकट नही मिलने के कारण नारेबाजी शुरू कर दी थी।

आईपीएल 2025 के लिए राजस्थान रॉयल्स के सभी घरेलू मैचों के लिए बॉक्स ऑफिस पर अधिक स्टूडेंट और बेस प्राइस टिकट उपलब्ध

जयपुर, 7 अप्रैल। आरसीबी, एलएसजी, जीटी, एमआई और पीबीकेएस के खिलाफ राजस्थान रॉयल्स के घरेलू मैचों के टिकट सभी श्रेणियों में उपलब्ध हैं, जिनकी कीमत बॉक्स ऑफिस पर 1600 रुपये से शुरू होते हैं, पहले आओ पहले पाओ के आधार पर-अधिकतम दो टिकट प्रति व्यक्ति।आरसीबी, एलएसजी, जीटी, एमआई और पीबीकेएस के खिलाफ मैचों के लिए पहले आओ पहले पाओ के आधार पर 500 रुपये की कीमत वाले स्टूडेंट टिकटों का एक अतिरिक्त बैच भी उपलब्ध होगा। स्टूडेंटों को इन टिकटों को खरीदने के लिए एक वैलिड स्टूडेंट आईडी प्रस्तुत करनी होगी-1 प्रति व्यक्ति। बॉक्स ऑफिस स्टेडियम के नॉर्थ गेट, ईस्ट गेट और वेस्ट गेट पर सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है, तथा प्रत्येक वेन्यू पर मुफ्त पानी उपलब्ध कराया जा रहा है। फैंस बॉक्स ऑफिस या बुक माई शो प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपनी सीटें बुक कर सकते हैं।

दो दिवसीय ज्वैलर्स एसोएिशन प्रीमियर लीग की लेजेंड्स यूनाइटेड टीम बनी विजेता

जयपुर, 7 अप्रैल। ज्वैलरी एसोसिएशन जयपुर की ओर से आयोजित ज्वैलर्स एसोसिएशन प्रीमियर क्रिकेट लीग (जेएपीएल) का दो दिवसीय आयोजन का रविवार देर शाम समापन हुआ। 5 और 6 अप्रैल को जनता कॉलोनी स्थित एस.जे पब्लिक स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम में 12 टीमें और 120 से ज्यादा प्लेयर्स ने हिस्सा लिया। इस दौरान लगभग 1000 से अधिक सदस्यों, उनके परिवारों के सदस्यों और क्रिकेट प्रेमियों ने इस टूर्नामेंट का आनंद लिया। दूसरे दिन के मैचों के बारे में एसोसिएशन युथ कमेटी के संयोजक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि टूर्नामेंट के दूसरे दिन टूर्नामेंट का फाइनल मैच लेजेंड्स यूनाइटेड (कृष्णा साबू) एवं टिस्टाबेने टीम (प्रमोद दरडा) के बीच खेला गया एवं इस लीग के विजेता लेजेंड्स यूनाइटेड टीम रही एवं उपविजेता टिस्टाबेने टीम रही। विजेता एवं उपविजेता टीम को ट्रॉफी एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही प्लेटर ऑफ़ द टूर्नामेंट - वंसवर्धन सिंह, बेस्ट बैट्समैन - सुकून बोथरा, बेस्ट बॉलर - जय खटोरिया को भी ट्रॉफी एवं नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही एसोसिएशन कार्यकारिणी के बीच शो मैच खेला गया। इस मैच में विजेता अलोक सौंखिया टीम रही।

राज्य क्रिकेट में गठित की संचालन समिति

जयपुर, 7 अप्रैल। राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद ने सोमवार को खेल एवं खिलाड़ियों के हित को ध्यान में रखते हुये राज्य में क्रिकेट खेल गतिविधियों का प्रभावी पर्यवेक्षण, समुचित संचालन व संरक्षण एवं मार्गदर्शन / सुझाव प्रदान करने हेतु पूर्व क्रिकेटरों को शामिल करते हुए निम्नानुसार एक संचालन समिति का गठन किया गया है। जिसमें रोहित झालानी, विनोद माथुर, दीपक जैन, मेघा गौड़, कुलदीप माथुर, गगन खोड़ा, संजय व्यास को लिया गया है। उपरोक्त समिति नियमित रूप से अपनी रिपोर्ट समय समय पर अध्यक्ष, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद को प्रस्तुत करेगी।

पांड्या के विस्फोट के बावजूद मुंबई को 12 रन से मिली हार

मुंबई, 7 अप्रैल। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के एक बेहद रोमांचक मुकाबले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने सोमवार को मुंबई इंडियन (एमआई) को 12 रन से हरा दिया। बेंगुलुरु दस साल बाद वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई को हराने में सफल रहा है।

हार्दिक पंड्या (42 रन 15 गेंद) और तिलक वर्मा (56) के क्रीज पर रहते मुकाबला मुंबई के पाले में जाता दिख रहा था मगर 18वें ओवर में भुवनेश्वर कुमार की ऑफ स्टंप के बाहर जाती धीमी गति की गेंद को कट करने के प्रयास में तिलक डीप कवर में कैच दे बैठे जबकि अगले ही ओवर में पंड्या को जोश हेजलवुड ने अपना शिकार बना लिया। दोनो के आउट होने के बाद मुकाबला एक बार फिर बेंगलुरु के पाले में चला गया।

आरसीबी के दिये गये 222 रन के जवाब में मुंबई इंडियंस निर्धारित 20 ओवर में नौ विकेट पर 209 रन ही बना सकी। लक्ष्य पीछा करने उतरी मुंबई की शुरुआत औसत रही। 12वें ओवर में सूर्य कुमार यादव (28) के आउट होने के बाद पंड्या ने क्रीज पर आते ही चौके छक्कों की बरसात कर दी। उन्होने हेजलवुड के ओवर में दो चौके और दो छक्के जड़ कर मैच को रोमांच से भर दिया जबकि अगले ओवर में उन्होने अपने भाई कृणाल पंड्या पर भी रहम नहीं किया और उनकी भी जमकर धुनायी की। दूसरे छोर पर तिलक वर्मा भी बेंगलुरु के गेंदबाजो पर कहर बरपाते रहे और दोनो ने 89

रन की पार्टनरशिप कर डाली। इससे पहले विराट कोहली (67)-देवदत्त पड्डिक्कल (37) के बीच 91 रन और कप्तान रजत पाटीदार (62) -जितेश शर्मा (40 नाबाद) के बीच 69 रन की विस्फोटक साझीदारियों की बदौलत आरसीबी ने मुंबई इंडियंस (एमआई) के खिलाफ पांच विकेट पर 221 रन का स्कोर खड़ा कर लिया।

कोहली आज मैच के शुरु से ही आक्रामक अंदाज में थे। फिल साल्ट (4) का विकेट पहले ही ओवर में गिरने के बावजूद उन्होने पॉवर प्ले का भरपूर फायदा उठाते हुये मैदान के चारों ओर रनों की बौछार कर दी। कोहली के रुख को भांपते हुये कप्तान हार्दिक पंड्या ने ट्रेंट बोल्ट को हटा कर स्पिनर विल जैक्स को गेंद थमायी मगर कोहली पर उसका कोई असर नहीं हुआ। दोनो बल्लेबाजों ने नौवें ओवर तक स्कोर को 95 रन पर पहुंचा दिया। इस बीच पड्डिक्कल विग्नेश पुथुर की गेंद पर अपना विकेट गंवा बैठे।

पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच में जीत की पटरी पर वापस आना चाहेगी सीएसके

चंडीगढ़, 7 अप्रैल। लगातार मिली तीन हार से तिलमिलायी चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) मंगलवार को यहां पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के खिलाफ अहम आईपीएल मुकाबले में जीत की राह पर लौटने की हर मुमकिन कोशिश करेगी। मुंबई इंडियंस पर शानदार जीत के साथ आईपीएल 2025 अभियान की शुरुआत करने वाली सीएसके को लगातार तीन हार का सामना करना पड़ा है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स से उसने मुंह की खाई है।

कोहली 13 हजार टी-20 रन बनाने वाले क्लब में शामिल

मुंबई, 7 अप्रैल। भारतीय स्टार बल्लेबाज विराट कोहली सोमवार को पुरुष टी20 क्रिकेट में 13 हजार रन बनाने वाले पहले भारतीय और दुनिया के पांचवें क्रिकेटर बन गए हैं। उन्होंने अपनी 386वीं पारी के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। 36 वर्षीय कोहली ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच में अपना 17वां रन बनाते ही यह उपलब्धि हासिल की। इसके साथ ही वह टी20 रन बनाने वाले शीर्ष खिलाड़ियों के क्लब में शामिल हो गए, जिसमें वेस्टइंडीज के महान खिलाड़ी क्रिस गेल सबसे आगे हैं, जो 381 पारियों में 14 हजार 562 रन बनाकर इस सूची में शीर्ष पर हैं। टी20 में सर्वकालिक रन बनाने वालों की सूची में कोहली से आगे इंग्लैंड के एलेक्स हेल्स (474 पारियों में 13,610), पाकिस्तान के शोएब मलिक (487 पारियों में 13,557) और वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर कीरोन पोलार्ड (594 पारियों में 13,537) हैं।

सब जूनियर व जूनियर खेलो इंडिया राष्ट्रीय विमेन वुशू लीग में राजस्थान वुशू टीम ने जीते 9 पदक

जयपुर, 7 अप्रैल। भारतीय वुशू संघ व भारतीय खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में 2 से 7 अप्रेल 2025 तक गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हुई सबजूनियर व जूनियर खेलो इंडिया राष्ट्रीय विमेन वुशू लीग में राजस्थान वुशू टीम ने 1 स्वर्ण, 03 रजत व 5 कांस्य मिलाकर कुल 9 पदक जीत प्रदेश का मान बढाया। हीरानन्द कटारिया अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ के अनुसार पदक विजेता खिलाडियों के नाम इस प्रकार है - **स्वर्ण पदक -** अलमास अली, **रजत पदक -** प्रियांशा चौधरी, ख़ुशी शर्मा, सुनीता, **कांस्य पदक -** मित्तल, पायल भाटी, चित्राक्षी चौहान, आराध्या, हिमांगी नेगी,

प्रतियोगिता के सभी पदक खिलाडियों को विनोद सिंह शेखावत, मुख्य संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, गोपाल सैनी, संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, राजकुमार शर्मा संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, भगवान सहाय जाटवा संरक्षक, राजस्थान वुशू संघ, के. सी. घुमरिया, चेयरमैन, राजस्थान वुशू संघ, ममता वर्मा, महासचिव, राजस्थान वुशू संघ व सभी पदाधिकारियों ने बधाई प्रदान की।

राजस्थान अंडर-17 महिला फुटबाल टीम गोवा राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए रवाना

जयपुर, 7 अप्रैल। रविवार को यहां एक कार्यक्रम में राजस्थान टीम की नई जर्सी जारी की गई। कार्यक्रम में डॉ संजय पराशर, चेयरमैन महर्षि अरविन्द यूनिवर्सिटी के, भवानी सिंह भाटी , श्याम सिंह, जसवंत सिंहा व नसरुद्दीन जी,अंतर्राष्ट्रीय फुटबाल खिलाड़ी और राजस्थान फुटबाल एसोसिएशन के सचिव दिलीप सिंह शेखावत मौजूद थे।

महर्षि अरविन्द यूनिवर्सिटी ने राजस्थान में फुटबाल के विकास में अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल उपकरण उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। टीम आज सुबह हवाई जहाज से जयपुर से गोवा के लिए प्रस्थान किया।

ड्रीम राष्ट्रीय महिला फुटबाल प्रतियोगिता का आयोजन इस बार गोवा में 9 से 15 अप्रैल तक किया जाएगा। प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए राजस्थान की 18 सदस्यीय टीम भी सोमवार को गोवा के लिए रवाना हो गई। राजस्थान फुटबाल एसोसिएशन के सचिव दिलीप

सिंह शेखावत ने बताया कि गोवा में हो रही राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राजस्थान टीम का नेतृत्व संजू करेगी। टूर्नामेंट में राजस्थान टीम ग्रुप बी में है। राजस्थान का पहला मुकाबला 9 अप्रैल को उड़ीसा से होगा। राजस्थान टीम 11 अप्रैल को दिल्ली से और 13 अप्रैल को केरल के खिलाफ मैच खेलेगी।

राजस्थान टीम : मुन्नी, संजू , गुड्डु, निशा, किरण, हंसा, लक्ष्मी, मंजू, संतोष, सुमन प्रियंका, रितिका, कुमकुम, भावना, दृष्टी, सिमरन, दुर्गा, विक्रम सिंह राजवी टीम के हैड कोच, सुमन मैनेजर और लवणीना फिजियो किरण सहायक।

पीसी माहेश्वरी मेमोरियल गोल्फ टूर्नामेंट के प्रो-ग्रॉस विनर रहे ऋषिराज सिंह

जयपुर, 7 अप्रैल। रामबाग गोल्फ क्लब में दो दिवसीय पीसी माहेश्वरी मेमोरियल गोल्फ टूर्नामेंट (मंथली मेडल - द्वितीय) का आयोजन हुआ। टूर्नामेंट का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। टूर्नामेंट में ऋषिराज सिंह प्रो-ग्रॉस विनर और गिर्राज सिंह खड़का प्रो-ग्रॉस रनर-अप रहे। वहीं, अमैच्योर ग्रॉस विनर का खिताब संयुक्त रूप से दीपकरण एस ठक्कर और नितेश बंदावाला ने जीता। पुरस्कार समारोह में अलग-अलग श्रेणियों और हैंडीकेप्स में विजेता व उप विजेता दोनों को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर स्वर्गीय, पीसी माहेश्वरी के परिवार से उनकी पत्नी प्रतिभा माहेश्वरी, बेटे राजीव माहेश्वरी और बेटी आशु माहेश्वरी; रामबाग गोल्फ क्लब के मानद सचिव, समृद्ध शर्मा और

टूर्नामेंट संयोजक, डॉ. हिमांशु शर्मा सहित क्लब के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। हैंडीकेप्स श्रेणियों में विजेता और उपविजेता इस प्रकार रहे- हैंडीकैप कैटेगरी (00-09) में हरीश जोशी विजेता और आरव सचेती उपविजेता रहे; हैंडीकैप कैटेगरी (10-16) के विजेता धृषवराज और उपविजेता समरंजय सिंह थे और हैंडीकैप कैटेगरी (17-24) के विजेता राजवीर माहेश्वरी और अरिहंत पलावत उपविजेता रहे। टूर्नामेंट में बेस्ट सीनियर गोल्फर श्रेणी में विजेता प्रताप सिंह और बेस्ट सूपर सीनियर गोल्फर श्रेणी में निरंकार सिंह विजेता रहे। वहीं बेस्ट लेडी गोल्फर के विजेता का पुरस्कार वृंदा सैनी ने हासिल किया और उपविजेता नितिका जडेजा रहीं। इसी प्रकार अन्य श्रेणी- नियरेस्ट टू पिन के विजेता अहान शाह; लॉन्गेस्ट ड्राइव के विजेता अभ्यूदय रावत और स्ट्रेटेस्ट ड्राइव के लिए पुरस्कार अभिषेक रानीवाला ने जीता।

अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग

डायमंड क्रिकेट क्लब ने एसजे पब्लिक स्कूल को 4 विकेट और अरावली क्लब ने स्टार क्रिकेट एकेडमी को 2 विकेट से हराया

जयपुर, 7 अप्रैल। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग क्रिकेट प्रतियोगिता में खेले गए पूल ए के मैच में डायमंड क्लब ने एस जे पब्लिक स्कूल को 4 विकेट हराया तथा पूल बी के मैच में अरावली क्लब ने स्टार क्रिकेट एकेडमी को रोमांचक मैच में 2 विकेट से हराया।

जी आर ग्राउंड पर एस जे पब्लिक स्कूल ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए आशीष शर्मा के 26 रन, उमेश मीणा के 17 रन, साहिल लोढ़िया के 30 रन व शुभम खंडेलवाल के 52 रनों से 44.1 ओवर में 180 रन बनाए। डायमंड क्रिकेट क्लब के लिए अनस मंसूरी ने 43 पर 2, वेदांग शर्मा ने 23 पर 2, देव नारायण ने 20 पर 2, मोहम्मद कैफ ने 9 पर 2, देवांश जसवाल व रुद्र सोनी ने एक - एक विकेट लिया।

जवाबी पारी में डायमंड क्रिकेट क्लब ने दिलकुश महावर के 28 रन, देवांश जसवाल के 22 रन, कुमार वासु के नाबाद 66 रन, हितार्थ डेंगरा के 29 रन व रुद्र सोनी के 20 रनों से 32.1 ओवर में 6 विकेट पर 181रन बनाकर मैच जीत लिया। एस जे पब्लिक स्कूल के लिए उमेश मीणा ने 44 पर 2, व शुभम खंडेलवाल ने 29 पर 2 विकेट लिए। अरावली ग्राउंड पर खेले गए पूल बी के मैच में स्टार क्रिकेट एकेडमी ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए वरुण गुप्ता के शतक ऋतिक चावला के 33 रन, वरुण गुप्ता के 121 रन (158 गेंद, 12 चौके व 2 छक्के), प्रणव चौधरी के 34 व हर्ष शर्मा के 16 रनों से 50 ओवर में 7 विकेट पर 249 रन बनाए। अरावली क्लब के लिए ओमांश शर्मा ने 36 पर 2, शोभित, हंसराज व जुनेद अगवान ने एक - एक विकेट लिया।

जवाबी पारी में अरावली क्लब ने शोभित मिश्रा के 64 रन, तनय थावानी के 20 रन, ओमांश शर्मा के 20 रन, देवेंद्र शर्मा के 20 रन व आर्यन भारद्वाज के 34 रनों से 43.2 ओवर में 8 विकेट पर 252 रन बनाकर मैच जीत लिया। स्टार क्रिकेट एकेडमी के लिए आदित्य सराफ ने 59 पर 2, अथर्व सिंह ने 27 पर 2, हर्ष शर्मा ने 44 पर 2, सचिन व अनिकेत ने एक - एक विकेट लिया।

राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता व जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे

जयपुर 7 अप्रैल। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणीके अनुसार राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता व जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे। सीनियर प्रतियोगिताओं की पूर्व तैयारियों के लिए राजस्थान क्रिकेट संघ आगामी मई माह में आरसीए घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 - 26 की राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन करेगा जिसके लिए आरसीए ने अपने सभी सम्बंधित जिला क्रिकेट संघको राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता में भाग लेने वाली जिला टीमों के चयन प्रक्रिया को शुरू करने हेतु सूचित किया है।

जिलों में ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प मई माह में आयोजित होंगे बिहाणी के अनुसार राजस्थान क्रिकेट संघ ने सभी जिला क्रिकेट संघोकोआरसीए घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की युवा अंडर 14, अंडर 16, अंडर 19 पुरुष व युवा अंडर 15 व अंडर 19 महिला खिलाडियों को उच्च स्तरीयप्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु अपने सही जिला क्रिकेट संघोको आगामी 15 अप्रैल से 30 अप्रैल 2025 के दौरानग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प आयोजित करने के निर्देश दिए है। जिलों के ग्रीष्मकालीन कोचिंग कैम्प के आयोजन हेतु राजस्थान क्रिकेट संघ अपने सभी जिला क्रिकेट केंद्रों को क्रिकेट कोच, योगा टीचर, खिलाडियों के अल्पाहार हेतु निर्धारित अनुदान राशि जारी करेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर 'निरामय राजस्थान' अभियान एवं स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न योजनाओं का शुभारम्भ किया। उन्होंने प्रदेशवासियों से अपील की कि वे निरामय राजस्थान अभियान का हिस्सा बनकर इसको जन अभियान बनाएं।

प्रदेशवासी निरामय राजस्थान को जन अभियान बनायें- मुख्यमंत्री भजनलाल

राजस्थान में डायबिटीज़ तथा लीवर के लिये विशेष कार्यक्रम शुरु किये गये

- **मुख्यमंत्री ने कहा कि 2024-25 के बजट में स्वास्थ्य के लिये किया गया प्रावधान अब तक का सर्वाधिक बड़ा प्रावधान था। वर्ष 25-26 में इसमें और बढ़ोतरी की गई है।**
- **मुख्यमंत्री ने जिलों व चिकित्सा विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों का सम्मान भी किया।**

जयपुर, 7 अप्रेल। सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में "निरामय राजस्थान" अभियान एवं स्वास्थ्य से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के शुभारम्भ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हम 'विकसित भारत और विकसित राजस्थान' के विजन के साथ 'आपणो अग्रणी राजस्थान-आपणो स्वस्थ राजस्थान' के संकल्प को साकार करने की दिशा में प्रतिबद्धता से आगे बढ़ रहे हैं।

उन्होंने सभी को विश्व स्वास्थ्य दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि मरीज चिकित्सकों को भगवान के रूप में देखते हैं तथा चिकित्सक भी स्वस्थ समाज के निर्माण में महती भूमिका निभा रहे हैं। शर्मा ने समस्त प्रदेशवासियों से अपील की कि वे निरामय राजस्थान अभियान का हिस्सा बनकर इसको जन अभियान बनाएं और आयुष्मान राजस्थान के संकल्प को साकार करें।

उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य को केन्द्र में रखते हुए विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर आज निरामय राजस्थान जैसे व्यापक जन अभियान और विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं का शुभारम्भ किया गया है। इनमें टाइप-1 डायबिटीज देखभाल के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत, भारत के पहले समर्पित कार्यक्रम मिशन मधुहारी की शुरूआत, मुख्यमंत्री आयुष्मान आदर्श ग्राम पंचायत योजना की शुरूआत, 24 मोबाइल मेडिकल यूनिट 'राम रथ' तथा 10 एडवांस लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस को हरी झण्डी, 29 यूनिट में स्तनपान प्रबन्धन इकाइयों का शुभारम्भ, ईट राइट राजस्थान अभियान तथा मिशन लीवर स्माइल का शुभारम्भ शामिल हैं।

इसके अलावा, मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना का मोबाइल एप्लीकेशन लॉन्च, आयुष पद्धति से उपचार के लिए पैकेज का शुभारम्भ, एआई आधारित एकीकृत मॉनिटरिंग सिस्टम, 50 चिकित्सा संस्थानों में हीमो डायलिसिस वार्ड का शुभारंभ भी आज किया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में 27 हजार 660 करोड़ का बजट प्रावधान स्वास्थ्य के लिए किया गया, जो स्वास्थ्य के लिए अब तक का सर्वाधिक बजट प्रावधान था। साथ ही, वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट में भी स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए इसे बढ़ाकर लगभग 28 हजार 865 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है।

इस दौरान, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि भारत विश्व का सबसे युवा देश है तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फिट इंडिया मूवमेंट की तर्ज पर आज राज्य में निरामय राजस्थान अभियान की शुरूआत की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने डिजिटल कॉफी टेबल बुक का विमोचन, टीबी मुक्त ग्राम पंचायत अभियान में उत्कृष्ट कार्य के लिए राज्य क्षय यूनिट का सम्मान, अधिकतम टीबी मुक्त ग्राम पंचायत वाले उत्कृष्ट जिलों तथा चिकित्सा विभाग में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्मिकों का सम्मान किया।

कार्यक्रम में प्रमुख शासन सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य गायत्री राठौड़, शासन सचिव चिकित्सा शिक्षा अम्बरीश कुमार, चीफ ऑफ फील्ड सर्विसेज यूनिसेफ सोलेडाड हैरेरो सहित, बड़ी संख्या में चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, नर्सिंगकर्मी एवं आमजन उपस्थित थे।

जोधपुर में गैस सिलैंडर फटा: 14 माह के बच्चे सहित 2 की मौत

उमरा करने जा रहे लोगों के लिये खाना तैयार हो रहा था, जब सिलैंडर लीक होने से आग लगी

- **आग से 14 झुलस गये, जो महात्मा गांधी अस्पताल के बर्न यूनिट में भर्ती हैं। दो बच्चों की हालत गंभीर बताई जा रही है।**

जालोर, 7 अप्रैल (का.सं.)। जोधपुर में गैस सिलेंडर में ब्लास्ट होने से 14 महीने के बच्चे सहित दो लोगों की मौत हो गई और 14 लोग झुलस गए। दो बच्चों की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसा भीतरी शहर के गुलाब सागर क्षेत्र के पास मियां की मस्जिद इलाके में एक घर-दुकान में सोमवार शाम हुआ। आग में झुलसे लोगों को एमजीएच (महात्मा गांधी हॉस्पीटल) की बर्न यूनिट में भर्ती कराया गया है। सूचना पर पहुंची दमकल गाड़ियों ने आग पर काबू पाया। परिजनों का कहना है कि घर में एक व्यक्ति के फंसे होने की आशंका है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, झुलसे हुए लोगों में सलीखा (13), सोहेल (26), सलमा (22), साइका (20), शाहिदा (38), सुहाना (19), मीनाज (37), फरीदा (48), साहिन (17), सुमाया (25), मेलिसा (डेढ साल) और साहिन शामिल है। सादिया (19) और हासिम (14 महीने) की मौत हो गई है। अस्पताल से 2 गंभीर रुप से झुलसे बच्चों को उम्मेद अस्पताल रेफर कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार, मकान में 3 से 4 बच्चे भी थे। नागौरी गेट के रहने वाले मोहम्मद इमरान ने बताया कि सोमवार शाम 4:30 बजे सूचना मिली थी कि हमारे मोहल्ले में आग लग गई है। उमरा (परिवार के साथ मक्का-मदीना की यात्रा) करने जा रहे लोगों के लिए यहां 20-25 लोगों का खाना था। इसी दौरान गैस सिलेंडर लीक हो गया और आग भड़क गई। वहीं, मकान में रहने वाले लोग फर्नीचर का काम करते हैं, ऐसे में आग ज्यादा भड़क गई और सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय जनप्रतिनिधि और पुलिस प्रशासन के अधिकारी अस्पताल पहुंचे। कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने बताया कि 12 लोगों को धुएं के साथ सांस लेने में तकलीफ हुई है। 2 बच्चे उम्मेद हॉस्पिटल में है। आग पर काबू पाया जा चुका है। सरकार की तरफ से जो भी सहायता राशि होगी, वह दी जाएगी। जोधपुर शहर विधायक अतुल भंसाली ने बताया कि मकान में आग लगने की घटना दुखद है। फायर ब्रिगेड के लोगों ने 3 जलते हुए सिलेंडर बाहर निकाले हैं। पुलिस ने रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को जोधपुर शहर में गैस सिलेण्डर में रिसाव से लगी आग के कारण हुई जनहानि पर शोक व्यक्त किया है। शर्मा ने इस हृदय विदारक दुर्घटना पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। उन्होंने हादसे में घायल लोगों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हुए अधिकारियों को उनका समुचित उपचार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया है।

तमिलनाडु में मंत्री के.एन. नेहरु पर ईडी की रेड

चेन्नई, 07 अप्रैल। तमिलनाडु में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के अधिकारियों ने सोमवार को राज्य के नगर प्रशासन मंत्री के एन नेहरू और प्रमुख रियल एस्टेट फर्म टू वैल्यू होम्स (टीवीएच) के परिसरों पर छापे मारे।

ईडी अधिकारियों ने मंत्री के तिरुचि स्थित आवास, उनके भाइयों के परिसरों और टीवीएच के कार्यालय सहित, 20 से अधिक स्थानों पर एक साथ छापे मारे गए। टीवीएच द्वारा कथित मनी लॉन्ड्रिंग और माल एवं सेवा कर (जीएसटी) चोरी के आरोपों पर छापे मारे गए। टीवीएच की स्थापना मंत्री के दिवंगत भाई केएन रामजयम ने की थी। छापे के दौरान केन्द्रीय अर्धसैनिक बलों ने ईडी टीमों को सशस्त्र सुरक्षा प्रदान की।

- **ईडी ने उनके व उनके भाइयों के आवासों व कार्यालय परिसरों पर रेड की और तलाशी ली।**

इस दौरान मंत्री मौजूद नहीं थे। वे राज्य विधानसभा सत्र में भाग ले रहे थे।

नेहरू और रामजयम के तिरुचि स्थित आवासों पर तथा उनके छोटे भाई मणिवन्नन के कोयंबटूर स्थित आवास पर छापे मारे गए।

अरनोद में 5 करोड़ की एमडी ड्रग बरामद

खेत पर बने मुर्गीखाने से ड्रग बनाने की सामग्री, दो बंदूक, पिस्टल तथा कारतूस भी मिले

- **एसपी विनीत कुमार बंसल ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर तीन भाईयों के खेत पर दबिश दी गई, जिसमें एक भाई फरदीन खान को भी गिरफ्तार किया गया है।**

जयपुर, 7 अप्रैल। प्रतापगढ़ जिले की अरनोद थाना पुलिस ने रविवार को थाना इलाके के नोंगावा स्थित एक मुर्गी फार्म पर दबिश देकर 01 किलो 650 ग्राम एमडी ड्रग और ड्रग बनाने में प्रयुक्त 03 किलो 330 ग्राम क्रिस्टल पाउडर और 01 किलो सफेद पाउडर जब्त किया, एवं कुछ हथियार तथा एक बिना नम्बरी बाइक भी जब्त की और आरोपी फरदीन खान पठान पुत्र रऊफ उर्फ भय्यू लाला (25) निवासी नोंगावा को गिरफ्तार किया है। जब्त एमडी ड्रग व रॉ मेटेरियल की अनुमानित कीमत करीब 5 करोड़ रुपए है।

एसपी विनीत कुमार बंसल ने बताया कि रविवार को गश्त के दौरान एसएचओ अरनोद, हजारी लाल को मुखबिर से सूचना मिली कि तीन भाई फरदीन खां, नदीम खां, शेर दिल उर्फ दूदू पुत्र रऊफ उर्फ भय्यु लाला पठान निवासी नोंगावा, नागदेडा रास्ते पर स्थित खेत पर बने मुर्गीफॉर्म पर अवैध मादक पदार्थ रखकर मादक पदार्थ की तस्करी का कार्य करते हैं। इस सूचना पर एसपी बंसल के निर्देश पर कार्रवाई के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक परबत सिंह और सीओ वृत अरनोद, चन्द्रशेखर पालीवाल के मार्गदर्शन एवं एसएचओ हजारी लाल के नेतृत्व में गठित पुलिस टीमों ने मुर्गीफार्म पर दबिश देकर वहां मौजूद तस्कर फरदीन खान पठान को डिटेन कर लिया और तलाशी ली।

मुर्गी फॉर्म की तलाशी लेने पर एक पुरानी एक नाल 12 बोर और एक दुनाली 12 बोर बन्दूक, इनके 56 जिंदा कारतूस, एक पुरानी देशी पिस्टल मय मैगजीन, 5 राउण्ड 7.65 एमएम कारतूस, एक छोटी वाली मैगजीन, 100 जिंदा राउण्ड .22 एमएम कारतूस, चार इलेक्ट्रॉनिक कांटे मिले, साथ ही, पॉलीथीन की सात थैलियों से 1 किलो 650 ग्राम एमडी ड्रग तथा 3 अन्य थैलियों से ड्रग बनाने में सहायक 3 किलो 350 ग्राम सफेद क्रिस्टल पाउण्डर तथा एक किलो सफेद पाउडर मिला तथा मौके पर एक बिना नंबर की बाइक खड़ी मिली। अवैध ड्रग, हथियार, कारतूस इत्यादि जब्त कर आरोपी फरदीन खान पठान को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। थाना अरनोद पर प्रकरण दर्ज किया गया तथा अग्रिम अनुसंधान किया जा रहा है। कार्रवाई करने वाली टीम में एसएचओ हजारी लाल सहित, एएसआई प्रेम लाल, हेड कांस्टेबल दिनेश दास, मनोज, दिलीप सिंह, कांस्टेबल दिनेश कुमार, नितेश एवं कांस्टेबल चालक जगपाल सिंह शामिल थे।

8 व 9 अप्रेल को गुजरात ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में हुआ। इसकी अध्यक्षता पार्टी अध्यक्ष हकीम अजमल खाँ ने की थी। इस बार भी, उसी कहानी की पुनरावृत्ति हुई, अर्थात वे भी कांग्रेस से अलग हो गये। कांग्रेस अधिवेशन चौथी बार 19-21 फरवरी, 1938 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की अध्यक्षता में गुजरात के हरिपुरा में हुआ। बोस ने गांधी जी के उम्मीदवार को हरा दिया तथा यह घटना पार्टी में बड़े मतभेदों का कारण बन गई तथा नेताजी ने पार्टी छोड़ दी।

कांग्रेस अधिवेशन पाँचवी बार 6-7 जनवरी, 1961 को नीलम संजीवा रेड्डी की अध्यक्षता में गुजरात के भावनगर में हुआ। इसके बाद, कांग्रेस का टूटना सर्वविदित है। कांग्रेस विभाजित हो गई।

कांग्रेस अधिवेशन छटी बार मल्लिकार्जुन खड़गे जी की अध्यक्षता 8-9 अप्रैल, 2025 को एक बार फिर गुजरात के अहमदाबाद में हो रहा है। 8 अप्रैल को विस्तारित कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) की मीटिंग सरदार पटेल मैमोरियल में होगी तथा अगले दिन साबरमती नदी के तट पर एआईसीसी अधिवेशन होगा।

देखना यह है कि गुजरात में हो रहे इस अधिवेशन के बाद क्या होगा।

'क्या कार्यवाही शुरु...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आधा दर्जन से अधिक आईपीएस अधिकारी भी आए। अदालत ने कहा कि पुलिस नाबालिग गुमशुदाओं के मामले में गंभीर नहीं है। यदि रिपोर्ट दर्ज होने के दो-तीन दिन में जांच शुरू हो जाए तो लापता की बरामदगी की संभावना बढ़ जाती है। अदालत ने कहा कि आईजी अजयपाल लांबा के नेतृत्व में पुलिस ने एक साथ 827 बदमाशों को गिरफ्तार किया है। जब इन बदमाशों को पकड़ा जा सकता है तो फिर नाबालिग लड़कियों के मामलों में गिरफ्तारी या अभियान क्यों नहीं चलाए जा रहे। अदालत ने कहा कि नाबालिगों की बरामदगी को लेकर विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। डीजीपी को ऐसे मामलों की मॉनिटरिंग करनी चाहिए।

डीजीपी ने अदालत को बताया कि पुलिस लापता लोगों की गंभीरता से तलाश करती है। पुलिस ने 96 फीसदी मामलों में लापताओं की बरामदगी की है। वहीं, करीब 6500 लापताओं की तलाश की जा रही है। हर जिले में इसके लिए प्रकोष्ठ बना हुआ है और लापताओं की तलाश के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। गौरतलब है कि शहर के रामगंज और प्रताप नगर सहित, अन्य थाना इलाकों से लापता हुए नाबालिगों की बरामदगी नहीं होने पर दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए, अदालत ने डीजीपी को पेश होकर अपना जवाब देने को कहा था।

एकल पट्टा प्रकरण में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और वागीश कुमार ने कहा कि पाठक ने ही सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी लगाई थी। उन्होंने ट्रायल कोर्ट में भी पक्षकार बनाए जाने की अर्जी लगाई थी। इस पर बाजवा ने कहा कि पाठक के खिलाफ कई आपराधिक केस दर्ज हो चुके हैं। तो इसके जवाब में पाठक की ओर से कहा गया कि पूर्व मंत्रियों व अफसरों के खिलाफ उसने कई मुद्दे सार्वजनिक किए थे, इसलिए उसके खिलाफ झूठे केस दर्ज हुए हैं। इस बीच, अदालती समय समाप्त होने पर एकलपीठ ने मामले की सुनवाई मंगलवार तक टाल दी। दरअसल, राज्य सरकार ने इस मामले में दो अर्जियां दायर की हैं। इनमें कहा गया है कि ट्रायल कोर्ट के समक्ष दायर क्लोज़र रिपोर्ट्स अधूरी व दोषपूर्ण साक्ष्यों पर की गई जांच के आधार पर थीं। इसके चलते ही पूर्व मंत्री शांति धारीवाल को बरी किया था। इसकी जांच के लिए गठित हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस आरएस राठौड की कमेटी ने भी मामले की समीक्षा में प्रारंभिक रिपोर्ट में कई गंभीर खामियां बताई थीं। ऐसे में मामले में जांच की जानी चाहिए। वहीं, एसीबी कोर्ट ने एकल पट्टा मामले में लिप्त तत्कालीन सरकारी अफसरों के खिलाफ दर्ज मुकदमा वापस लेने का प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया था।

वक्फ बिल के खिलाफ दायर याचिकाओं पर समय रहते सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने सहमति दी

याचिकाकर्ताओं की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने कपिल सिब्बल व अभिषेक मनु सिंघवी के आग्रह पर कोर्ट ने निर्णय दिया

- **वक्फ बिल के खिलाफ असदुद्दीन ओवैसी, कांग्रेस के मोहम्मद जावेद, आप पार्टी के अमानतुल्लाह खान सहित तीन संगठनों ने याचिका दायर की है।**

नयी दिल्ली, 07 अप्रैल। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि वह वक्फ (संशोधन) अधिनियम-2025 की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर समय रहते विचार करेगा।

मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना तथा न्यायाधीश संजय कुमार और के वी विश्वनाथन की पीठ ने कुछ याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल और ए एम सिंघवी के शीघ्र सुनवाई के लिए तत्काल उल्लेख किए जाने के बाद समय रहते याचिका पर विचार करने पर सहमति व्यक्त की। संसद के दोनों सदनों में संबंधित विधेयक पास होने के बाद पांच अप्रैल को विधेयक को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु की मंजूरी मिल गई।

वक्फ (संशोधन) विधेयक (संसद के दोनों सदनों में पारित हो गयी था, लेकिन तब राष्ट्रपति की मंजूरी नहीं मिली थी) की वैधता को चुनौती देने वाली कई याचिकाएं पहले ही दायर की जा चुकी हैं। याचिकाएं दायर करने वालों में कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन प्रमुख एवं सांसद असदुद्दीन ओवैसी और दिल्ली में आम आदमी पार्टी के विधायक अमानतुल्लाह खान शामिल हैं। एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स, जमीयत उलमा-ए-हिंद, समस्त केरल जमीयतुल उलमा जैसे संगठनों ने भी शीर्ष अदालत में रिट याचिकाएं दायर की हैं। उनकी याचिकाओं में शीर्ष अदालत से अधिनियम को असंवैधानिक और संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 21, 25, 26 और 300-ए का उल्लंघन करने वाला घोषित करने का निर्देश देने की भी मांग की गई। याचिकाओं में प्रतिवादी केंद्र सरकार और कानून एवं न्याय मंत्रालय को इसके प्रावधानों को लागू करने या लागू करने से रोकने का आदेश देने की गुहार लगाई गई है।

नये वक्फ कानून 'एकीकृत वक्फ प्रबंधन, सशक्तीकरण, दक्षता और विकास अधिनियम, 1995' ने 'वक्फ अधिनियम, 1995' की जगह ली है।

स्टालिन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपनी इसी ताकत के बल पर, स्टालिन किसी भी घटना तथा स्थिति को वह रंग देने में सफल रहते हैं, जो देना वे चाहते हैं, और 2026 के राज्य विधानसभा चुनावों के लिए वे ऐसा करना शुरु कर चुके हैं।

भारत और नेपाल के सुप्रीम कोर्ट में समझौता

नयी दिल्ली, 07 अप्रैल। भारत और नेपाल के न्यायपालिकाओं के बीच आपसी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर सोमवार को हस्ताक्षर किए गए।

शीर्ष अदालत की ओर से एक बयान जारी कर यह जानकारी दी गई।

बयान में कहा गया है,भारत के उच्चतम न्यायालय ने आज दोनों देशों के बीच न्यायिक सहयोग को विकसित करने, बढ़ ावा देने और मजबूत करने के लिए नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। बयान के मुताबिक, नेपाल के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति प्रकाश मान सिंह राउत और भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

यह भी कहा गया है कि समझौता ज्ञापन का उद्देश्य दोनों देशों तथा उनके लोगों के बीच मौजूद सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंधों से प्रेरित होकर उन देशों की न्यायपालिकाओं के बीच सहयोग को विकसित करना, बढ़ ावा देना और मजबूत करना है। बयान के मुताबिक, यह समझौता ज्ञापन न केवल कानून और न्याय के क्षेत्र में नवीनतम विकास पर सूचनाओं के आपसी आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि यात्राओं के आदान-प्रदान, अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रशिक्षण और शैक्षिणक कार्यक्रमों जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से न्यायपालिका के विभिन्न स्तरों पर न्यायाधीशों और अधिकारियों के बीच बातचीत को भी बढ़ावा देगा।

तीन महीने में...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बेरोजगारी की स्थानीय समस्या तथा पलायन की तरफ सरकार और जनता का ध्यान आकृष्ट किया जा सके। संयोगवश, बेगूसराय एनएसयूआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष कन्हैया कुमार का गृह नगर भी है। जहाँ यह संभावना दिखाई दे रही है कि भाजपा आगामी चुनाव जेडी (यू) नेता तथा सत्तासीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लड़ेगी, वहीं जेडी (यू) खेमे में ऐसी प्रबल शंकाएं है कि चुनावों के बाद, भाजपा नीतीश कुमार की स्थिति महाराष्ट्र के एकनाथ शिंदे जैसी बना देगी। ज्ञातव्य है कि नीतीश कुमार अब अपने पूर्व सशक्त स्वरुप के बहुत ही कमजोर संस्करण हो गये हैं। और तो और, उनके मानसिक संतुलन को लेकर भी सवाल उठने लगे हैं। इस बीच, संसद में वक्फ विधेयक पारित होने के बाद, मुस्लिम मतदाताओं का नीतीश कुमार और उनकी जेडी (यू) से मोहभंग होने की प्रबल संभावनाएं हैं। यह परिदृश्य नवम्बर में होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों में आजेडी- कांग्रेस गठबंधन एक नई आशा का संचार करता प्रतीत हो रहा है।

तेलंगाना के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वन्यजीवों के प्रभाति होने वाली तस्वीरें और वीडियो वायरल हो गए थे, जिससे दिया मिर्जा, जॉन अब्राहम, रवीना टंडन जैसे कई सेलिब्रिटिज ने छात्रों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं, जिसमें कंचा गाचीबोवली की 400 एकड़ वन भूमि पर पेड़ काटकर आईटी पार्क बनाने की योजना है।

2 अप्रैल को, दिया मिर्जा ने छात्रों के समर्थन में एक्स पर एक पोस्ट साझा की और लिखा, "छात्र उस भविष्य के लिए अपनी आवाज उठा रहे हैं जहां प्रकृति फलती-फूलती है।

आईटी पार्क नहीं, जंगल युवा पीढ़ी को एक सतत स्थिर भविष्य का मौका देते हैं। जैव विविधता की कीमत पर 'विकास' असल में विनाश है। हैदराबाद के गाचीबोवली में कंचा जंगल को बचाएं।"

उनकी पोस्ट में कोई भी चित्र नहीं था। उन्होंने इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का उल्लेख करते हुए भी कुछ पोस्ट साझा की थीं।

चीन, यूरोपियन यूनियन, कैनडा, मैक्सिको...

- **डीमॉन ने इसी लय में आगे कहा, अब अमेरिका में दाम बढ़ेंगे, इन्वैस्टमैंट घटेगा, व्यापार बाधित होगा और अन्ततोगत्वा अमेरिका में बेरोजगारी बढ़ेगी तथा मंदी का दौर आयेगा।**
- **पर, ट्रम्प पर इन टिप्पणियों का कोई असर नहीं है, वे अभी भी आक्रमक मुद्रा में हैं।**

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कारण चीन के उत्पादों पर अमेरिका में अंतिम शुल्क 54 प्रतिशत से अधिक हो गया है। वास्तव में, यूरोपियन यूनियन से लेकर चीन, कैनडा और मैक्सिको तक, सभी प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ अमेरिकी वस्तुओं पर अपने शुल्क बढ़ा रही हैं। यह कल्पना करना कठिन है कि अमेरिका इन संयुक्त शुल्क कार्रवाइयों का सामना करते हुए अपनी अर्थव्यवस्था को कैसे बनाए रखेगा।

ऐसे प्रतिकूल आर्थिक हालात का सामना करते हुए, जो महंगाई और गंभीर आर्थिक कठिनाइयों को बढ़ा रहे हैं, डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिकी जनता से आग्रह किया कि वे इन असुविधाओं और कठिनाइयों को अस्थायी रूप से सहन करें, ताकि भविष्य उज्ज्वल हो सके। ट्रंप ने टैरिफ को एकतरफा उपाय के रूप में सोचा था, जिसे अमेरिका लागू करे और अन्य देश उसे चुपचाप स्वीकार कर लें।

स्थिति यह है कि अमेरिका के प्रभावशाली और बहुत रूढ़िवादी व्यापारिक नेता भी अब खुलेआम डॉनल्ड ट्रंप की आर्थिक नीतियों की आलोचना कर रहे हैं। जे.पी. मॉर्गन के अध्यक्ष और प्रमुख, जैमी डीमॉन ने ट्रंप के दूसरे कार्यकाल की आर्थिक नीतियों के प्रतिकूल प्रभावों की ओर इशारा किया है।

डीमॉन ने आशंका व्यक्त की है कि अमेरिका ने अपनी आर्थिक ताकत, सैन्य शक्ति और "नैतिक मूल्यों" के आधार पर वैश्विक व्यवस्था में एक "विशेष स्थान" का आनंद लिया है, जिसमें आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता का समर्थन भी शामिल है। उन्हें डर है कि वर्तमान नीतियों के कारण यह सब खत्म हो जाएगा। डीमॉन ने बैंक के शेयरधारकों को लिखे अपने वार्षिक पत्रों में उल्लेख किया कि प्रशासन द्वारा अपनाई गई नीतियों के परिणामस्वरूप मूल्य स्तरों में वृद्धि, निवेश में कमी, व्यापार में गिरावट और अंतत: अमेरिका में बेरोजगारी और मंदी बढ़ेगी।

जब पत्रकारों ने ध्वस्त होते स्टॉक मार्केट को लेकर ट्रंप से सवाल किया, तो ट्रंप ने अपने पारंपरिक रुख से सवालों को बेवकूफी भरा बताते हुए कहा कि अन्य देशों ने वर्षों तक अमेरिका का शोषण किया है और अब उनकी नीतियाँ अमेरिका के खिलाफ हुए अन्याय को उलट रही हैं।

ट्रंप का दावा है कि उनकी नीतियों के परिणामस्वरूप अरबों डॉलर अमेरिका में आ रहे हैं और अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं। ट्रंप ने यूरोप पर भी नाराजगी जताई, यह कहते हुए कि यूरोप ने अमेरिका के साथ बुरा व्यवहार किया है और अमेरिका का पैसा, निवेश और फैक्टरियाँ ले ली हैं।

ट्रंप के इस उन्माद के बीच, वैश्विक अर्थव्यवस्था एक विशाल भूकंप का सामना कर रही है और भविष्य अब पूरी तरह अनिश्चित है।

पुनर्गठन व परिसीमन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वे चुनाव कार्यक्रम पेश कर बताए कि पंचायतों के चुनाव कब होंगे। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता प्रेमचंद देवंदा ने बताया कि पंचायत राज विभाग ने 16 जनवरी 2025 को नोटिफिकेशन जारी कर पंचायती राज अधिनियम के प्रावधानों की अवहेलना करते हुए पंचायतों के साल 2025 में होने वाले चुनावों को स्थगित कर निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक लगा दिया है।

नोटिफिकेशन में चुनाव कराने की कोई सीमा तय नहीं है। नियमानुसार न तो पंचायतों का कार्यकाल बढ़ाया जा सकता है और न उनमें प्रशासक लगाए जा सकते हैं, जबकि राज्य सरकार ने चुनाव स्थगित कर, न केवल निवर्तमान सरपंचों को प्रशासक लगाया, बल्कि उन्हें वित्तीय अधिकार भी दे दिए।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908